जयपुर
माहेश्वरी पत्रिका
वर्ष 11 अंक 3 अगस्त 2020 मूल्य ₹ 10

शिक्षा
चरित्र, सामर्थ्य और भविष्य को आकार देती है

गुरुर ब्रह्मा गुरुर विष्णु, गुरुर देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात्परंब्रह्म, तस्मै श्री गुरुवे नमः।।

माहेश्वरी चाय

आपके कप की चाय

ॐ वक्रतुण्ड महाकाय
सूर्यकोटि समप्रभः

निर्विघ्नं कुरूमे देव,
सर्व कार्येषु सर्वदा

गणेश चतुर्थी की हार्दिक शुभकामनाएं

हमारा इरादा,
आपकी संतुष्टि ज्यादा से ज्यादा

SIDDHI

ग्रीन-टी
भी उपलब्ध

स्थापित 1961

माहेश्वरी टी कम्पनी प्रा. लि.

नाहरगढ़ रोड, चांदपोल बाजार, जयपुर (राज.) फोन : 0141-2740919, 2312723
E-mail : contact@maheshwaritea.com • www.maheshwaritea.com

माहेश्वरी चाय के अलावा अन्य कोई उत्पादन हमारी कम्पनी का नहीं है।

नकली पैकिंग एवं मिलते-जुलते नाम से सावधान !!!

जयपुर माहेश्वरी पत्रिका

शिक्षा खोलती मुक्ती की राहे 11
डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन

9 शिक्षा का असली मतलब
डॉ. अब्दुल कलाम

सिर्फ ज्ञान ही आपको हक दिलाता है
Knowledge is Power 10
अमिताभ बच्चन

12 श्रेष्ठ शिक्षा उत्कृष्ट प्रेरक
अर्चना सिंह

जन्मभूमि मम पुरी सुहावनि 28
'कल्याण'

मुहावरों में हिन्दी 17

उम्र का रिमोट ऊपर वाले के हाथ में
29 75 का होने पर
ज्योति कुमार माहेश्वरी

हिन्दी के तपस्वी साधक 15
श्री भगवानदास केला

13 इन्टीग्रेटेड पुस्तक
बृजमोहन बाहेती

ई-मित्र सेवाएँ 41

नई शुरुआत

'जयपुर माहेश्वरी पत्रिका' को देखते-पढ़ते ग्यारह साल गुजर गए। अगस्त का अंक आपके हाथ में है। हम भविष्य की दुनिया को देखने की कोशिश कर रहे हैं। सामाजिक और सुरुचिपूर्ण पारिवारिक पत्रिका में बदलाव और नए कलेवर के रूप में जयपुर माहेश्वरी पत्रिका ने गत 18 माह में जितना प्रेम पाया है, वह किसी भी प्रकाशन के लिए दुर्लभ ही है। हम इसके प्रति नत है।

पूरे समाज बन्धुओं की रुचियों का ध्यान रखते हुए एक सकारात्मक मूल्यवत्ता के निर्माण की कोशिश तथा नए समय के नए पाठक के नए विश्वासों के साथ साझीदारी, इस सबने हमें भी वैचारिक रूप से समृद्ध किया है। अंटार्कटिका के रसगुल्ले की मांग का रोमांच अलग है, लेकिन असली अहमियत उस घास के पत्ते की है जो हमें जीवन का अहसास दिलाता है। इसलिए प्रेमिल आलोचनाओं तथा आलोचनात्मक प्रेम के बीच हम कुछ ना कुछ नया करते जा रहे हैं। समय की मांग के अनुरूप कागज व छपाई की उत्कृष्टता की बढ़त ने भी विवश किया है, फिर भी हर बार कुछ नया हो, सब के मन का हो, यह कामना है। इसके लिए आपसे शक्ति पाने की कामना करते हैं।

जयपुर माहेश्वरी पत्रिका परिवार की ओर से कृतज्ञता सहित।

चन्द्रमोहन शारदा
विशेषांक सम्पादक

D.P. Biyani

J B Jewellers

The Name of Divine Jewellery

Deals in: ***Mfg.& Wholesaler of Diamond Jewellery, Available Certified Diamonds & Precious Stones***

Note:- ***Also Deals in Kundan Meena Jewellery***

329. F-5, Lalaniyon Ka Chowk, Gopal Ji Ka Rasta, Johari Bazar, Jaipur- 302003
(O) 0141-2560108,(M) 9414042208 E-Mail : jbjewellersjaipur@gmail.com

SIDDHI

प्रदीप बाहेती

शिक्षा को दें प्राथमिकता

मनुष्य का सर्वांगीण विकास करती है शिक्षा

जब भी मनुष्य की मूलभूत आवश्यकताओं की बात होती है, वह ''रोटी, कपड़ा और मकान'' पर आकर रुक जाती है, शिक्षा को हम बिलकुल भुला देते हैं। हम यह भूल जाते हैं कि रोटी, कपड़ा, मकान होने के बावजूद यदि हम शिक्षा से वंचित हैं, तो हमारा जीवन अधूरा है। शिक्षा के बिना रोटी, कपड़ा, मकान हमें सम्मान नहीं दिला सकता। अनेक ऋषि-मुनि झोपड़ियों में, कच्चे घरों में रहे हैं। उन्होंने अपनी शिक्षा, ज्ञान के बल पर समाज को आलोकित किया, उन्हें नई दिशा दी।

इन दिनों अनेक खबरें आई हैं कि मजदूर, कृषक, रिक्शा चालक, मोची आदि के बच्चों ने आरएएस, आईएएस और आईपीएस की परीक्षाएं उत्तीर्ण कीं। जाहिर है कि इन बच्चों के अभिभावकों के पास भौतिक सुख-सुविधाओं का अभाव रहा होगा। पर उन्होंने शिक्षा के महत्व को समझा और स्वयं कष्ट उठाते हुए बच्चों के जीवन में शिक्षा की रोशनी फैलाई। शिक्षा ने उनके जीवन के सारे अंधेरे दूर कर दिए।

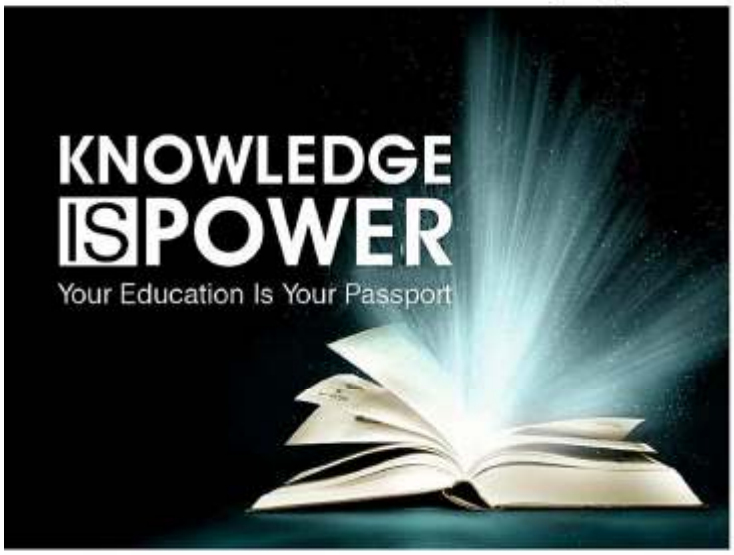

शिक्षा का प्रकाश है ही ऐसा, जहां शिक्षा होती है, वहां अंधकार नहीं रहता। शिक्षा मनुष्य में एक नई आशा का संचार करती है। उन्हें सशक्त बनाती है और जीवन की चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार करती है। गीता में कहा गया है कि ''सा विद्या विमुक्ते'' यानी शिक्षा या विद्या वही है जो हमें बंधनों से मुक्त करे और हमारे हर पहलू का विस्तार करे।

हमें यह भी ध्यान रखना चाहिए कि केवल किताबी ज्ञान ही काफी नहीं होता, वह हमें सिर्फ साक्षर बनाती है। सच्ची शिक्षा वह है, जो बच्चों के आध्यात्मिक, बौद्धिक और शारीरिक पहलुओं को उभारती है। शिक्षा का उद्देश्य हमारा सर्वांगीण विकास करना होता है। प्रसिद्ध दार्शनिक अरस्तू ने शिक्षा के बारे में कहा है कि ''शिक्षा मनुष्य की शक्तियों का विकास करती है। विशेष रूप से मानसिक शक्तियों का विकास करती है, ताकि वह परम सत्य, शिव एवं सुंदर का चिंतन करने योग्य बन सके।''

केवल किताबी ज्ञान ही काफी नहीं होता, वह हमें सिर्फ साक्षर बनाती है। सच्ची शिक्षा वह है, जो बच्चों के आध्यात्मिक, बौद्धिक और शारीरिक पहलुओं को उभारती है। शिक्षा का उद्देश्य हमारा सर्वांगीण विकास करना होता है।

ज्ञान की कोई सीमा नहीं होती और पढ़ाई की कोई उम्र नहीं होती। अनेक बुजुर्ग कॉलेजों व विश्वविद्यालयों में अध्ययनरत देखे गए हैं। हाल ही झारखंड के शिक्षा मंत्री ने दसवीं कक्षा में प्रवेश लिया है, किन्हीं कारणोंवश बचपन में उनकी पढ़ाई छूट गई थी। सरकार द्वारा चलाया जा रहा प्रौढ़ शिक्षा का भी यही उद्देश्य है कि वह कम से कम अक्षरों को तो पहचान लें। सरकार चाहती है कि लोग अंगूठा न लगाएं, बल्कि हस्ताक्षर करें, हर हाथ में कलम हो।

यह कितने गौरव की बात है कि एक शिक्षक देश के राष्ट्रपति रह चुके हैं। राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने शिक्षकों का मान बढ़ाया। अपने जन्म दिवस को उन्होंने 'शिक्षक दिवस' के रूप में मनाकर शिक्षकों को समर्पित कर दिया।

हम 5 सितम्बर को शिक्षक दिवस मनायेंगे। ये एक बहुत बड़ा दिन है, पर्व है। इस दिन सरकार व अनेक संस्थाएं शिक्षकों का सम्मान करती हैं। ये परंपरा अच्छी है, पर इसके साथ हमें यह भी ध्यान रखना चाहिए कि हम उन्हें हृदय से सम्मान दें, वही वास्तविक सम्मान है, क्योंकि गुरु से बड़ा कोई नहीं, इसीलिए कहा गया है-

''गुरु गोबिन्द दोऊ खड़े, काके लागूं पाय,
बलिहारी गुरु आपने, गोबिन्द दियो बताय।''

आप सभी के मांगलिक कार्यों में कैटरिंग एवं सुसज्जित विवाह स्थल सोढाणी फार्म्स बैंक्वेट हॉल-गार्डन की अपार सफलता के बाद

ॐ कैटर्स

(A Unit of Om Sodhani)

का नया उपक्रम

मिठाई शॉप

कोविड-19 को ध्यान में रखते हुए शुद्ध, स्वादिष्ट व उचित मूल्य पर आपके घर तक मिठाइयाँ पहुँचाने के लिए समर्पित

शुद्ध देशी घी से निर्मित

INAUGURAL OFFER

- Kaju Katli ₹ 499/- Per kg
- Rasgulla ₹ 199/- Per kg
- Thal ki Barfi ₹ 299/- Per kg
- Moongthal ₹ 279/- Per kg
- Gulabjamun ₹ 299/- Per kg
- Sikran (Sodhani Special) ₹ 299/- Per kg
- Meethi Chutney ₹ 349/- Per kg (Sonth vaali -Agra Special)
- Kachori (Hing) ₹ 10/- Per pc
- Samosa ₹ 10/- Per pc

And all other sweets available!

आकर्षित गिफ्ट पैक में सभी तरह की मिठाइयां उपलब्ध

SF Sodhani's Fresh — Fresh Fruits & Vegetables at your doorstep.

Free Home Delivery on Orders Above Rs. 1000/-

D-2, Om Catters, Jp Colony, Tonk Phatak, Jaipur

Payment Mode: 95494 83179

पे Paytm G Pay

Cash on Delivery also Available

Contact:
96806-58815
94143-58815

वर्ष 11 | अंक 3 | अगस्त, 2020
RNI NO. RAJBIL/2010/36984

2621644
2623500
2621100

जयपुर
माहेश्वरी पत्रिका
JAIPUR MAHESHWARI PATRIKA
प्रशासनिक कार्यालय : तृतीय तल, एम.पी.एस. इंटरनेशनल स्कूल, तिलक नगर, जयपुर
पंजीकृत कार्यालय : श्री माहेश्वरी भवन, सिंधी जी का रास्ता, चौड़ा रास्ता, जयपुर
Email : shrimaheshwarisamaj.jaipur@gmail.com
jmpatrika@gmail.com
Website : www.shrimaheshwarisamaj.org

विशेषांक सम्पादन :
चन्द्रमोहन शारदा
सलाहकार :
रमेश चन्द जाखोटिया (संगठन मंत्री)
बृजमोहन बाहेती
संध्या चितलांग्या
राजेन्द्र गट्टानी
जयकृष्ण पटवारी
प्रबन्ध सम्पादक :
सुनील अजमेरा (मालवीय नगर)
सह-प्रबन्ध सम्पादक :
विनोद अजमेरा
सह-सम्पादक :
सी.ए. राजकुमार गट्टानी
सी.ए. दिलीप सारड़ा
निरंजन राठी
सतीश नागोरी (सांगानेर)
किशन स्वरूप कालानी
रमेश सोढानी
पंकज काबरा
प्रवीण भूतड़ा
पंकज चितलांग्या
सम्पादकीय टीम :
सुनील कुमार नौगजा
हेमन्त कुमार सोमानी
लालचन्द कचोलिया
सुभाष काबरा
द्वारका प्रसाद तापड़िया
कमल किशोर मूँदड़ा
बालकृष्ण जाजू 'बालक'
सी.ए. वरूण धूत
महेश अजमेरा
विज्ञापन समन्वयक :
श्रीकिशन अजमेरा
विज्ञापन संयोजक :
रामकृष्ण बागला
विज्ञापन सह-संयोजक :
नवलकिशोर माहेश्वरी (सांगानेर)
अंकुर बल्लभ चितलांगिया
विज्ञापन संकलन टीम :
देवेन्द्र झंवर, गोपाल तामड़ी
जयकुमार चांडक
सी.ए. योगेश जाजू
अरविन्द आगीवाल
अमित चांडक, डॉ. रमेश मालू
साज-सज्जा
कैलाश प्रजापत
आभार : दैनिक भास्कर

गोपाल लाल मालपानी
महामंत्री

सतीश कुमार सारडा
प्रचार मंत्री

रामदास कोठ्यारी
संपादक

शिक्षा से ही समग्र विकास

आज की तेज रफ्तार जिंदगी में शिक्षा और ज्ञान की शक्ति के बिना जीवन में सफल होना संभव नहीं है। सफल होने के लिए किसी विशेष विषय पर ज्ञान होना ही पर्याप्त नहीं है। बल्कि सफल होने के लिये प्रभावी ढंग से इसका उपयोग कैसे किया जाये, इसके बारे में भी ज्ञान होना महत्वपूर्ण है। शिक्षा के बिना हम सभी अधूरे हैं क्योंकि शिक्षा ही हमारे ज्ञान, कौशल, आत्मविश्वास और व्यक्तित्व में सुधार लाती है। शिक्षा हमारे समाज की आत्मा है जो कि एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती है एवं व्यक्तियों में समानता की भावना लाती है। शिक्षा लोगों के सामाजिक एवं पारिवारिक सम्मान तथा अलग पहचान बनाने में मदद करती है।

भले ही शिक्षा की जड़ें कड़वी हैं लेकिन इसका फल बहुत ही मीठा एवं स्वादिष्ट होता है। शिक्षा, जिंदगी की तैयारी नहीं है वरन् खुद जिंदगी है। शिक्षा प्राप्त करने के बाद की गई मेहनत एक ऐसी सुनहरी चाबी है जो आपके बंद भाग्य के दरवाजे भी आसानी से खोल देती है। शिक्षा का मतलब यह नहीं कि स्कूल में हमने क्या सीखा है वरन् स्कूल में जो सीखा है वह सब भूलने के पश्चात् जो याद रहता है वही सच्ची शिक्षा है। शिक्षा प्राप्ति का लक्ष्य ज्ञान की प्रगति और सच्चाई का प्रसार है। शिक्षा का यह भी मतलब नहीं है कि आपने कितना कुछ याद किया हुआ है या ये कि आप कितना जानते हैं। इस का मतलब है आप जो जानते हैं और जो नहीं जानते उसमें अंतर कर पाते हैं या नहीं।

ज्ञान को प्राप्त करने की कोई सीमा नहीं है। यह व्यक्तिगत रूप से पूरे जीवन भर एवं किसी भी आयु तक प्राप्त किया जा सकता है। ज्ञान के लिए लगन, धैर्य और नियमितता की लम्बी प्रक्रिया जरूरी है। ज्ञान अपने आप में एक शक्ति है जो सब कुछ बदलने की क्षमता रखता है। केवल ज्ञान ही होना पर्याप्त नहीं है वरन् ज्ञान एवं अनुभवों का प्रभावी ढंग से उपयोग करने की क्षमता महत्त्वपूर्ण है। प्राप्त ज्ञान का विनाशक या नकारात्मक तरीके से प्रयोग जीवन के अस्तिव को खतरे में डाल सकता है। ज्ञान को अच्छे उपयोग में लाना जरूरी है क्योंकि जो ज्ञान, पैदा कर सकता है वह नष्ट भी कर सकता है।

समाज या राष्ट्र की प्रगति विभिन्न क्षेत्रों में सकारात्मक और रचनात्मक तरीके से ज्ञान की वृद्धि पर ही निर्भर करती है। ज्ञान किसी चीज या किसी को जानना या समझना है, जो कि सतत् सीखने या अनुभव के माध्यम से की गई जानकारी, सच्चाई या विशेषज्ञता है। मांसपेशियों की शक्ति से ज्ञान की शक्ति श्रेष्ठ है। एक ज्ञानी व्यक्ति का सम्मान समाज में हर कोई करता है। ज्ञान बहुमूल्य रत्नों से भी अधिक मूल्यवान है।

यह अंक शिक्षा व ज्ञान पर आधारित है, जो आपके जीवन को एक नई राह दिखायेगा। इसी आशा के साथ।

रामदास कोठ्यारी
-सम्पादक

गोपाल लाल मालपानी-महामंत्री द्वारा श्री माहेश्वरी समाज, जयपुर के लिए प्रकाशक व मुद्रक

DR. B. L. Maheshwari

Vatsal Maheshwari

AQUAPROOF GROUP

AN ISO 9001 : 2015 ★ ISO 14001 : 2004 ★ OHSAS 18001 : 2007 COMPANY

EPOXY & CEMENTITIOUS TILE GROUTS, SEALER & GROUT CLEANER

Tile Grout Colours: Cementitious - 30, Epoxy - 34

- Waterproofing
- Concrete Protection
- Plaster & Putty
- Tile & Stone Care
- Repairing Products
- Sealant
- Water Repellent
- Industrial Floors
- Industrial Grouts
- Admixture
- Coatings
- Epoxy
- Home Care Products

Manufacturing Plants :

★ Kalol (Baroda), Gujarat ★ Rajim (Raipur), Chhattisgarh
★ Raila (Bhilwara), Rajasthan ★ Alwar, Rajasthan ★ Ranchi, Jharkhand

SIDDHI

AQUAPROOF
Quality Building Material Solutions

Corporate Office: 601, Corporate Arena, Off Aarey Piramal Cross Rd, Goregaon (W), Mumbai - 400062
Tel: 022-28782493/95 **Email:** info@aquaproofindia.com
Website: www.aquaproofindia.com
Facebook: www.facebook.com/aquaproofindia

POINT YOUR MOBILE PHONE CAMERA & SCAN USING QR CODE SCANNER APP

क्या है शिक्षा का असली मतलब

केवल किताबी ज्ञान शिक्षा का उद्देश्य नहीं है। असली शिक्षा व्यावहारिक ज्ञान, मानवता के गुण और तर्क भी प्रदान करती है। जानते हैं कि देश-दुनिया के महान लोगों के लिए शिक्षा का मतलब क्या है और वे किस तरह इसकी ताकत को महत्त्व देते हैं।

असली मतलब

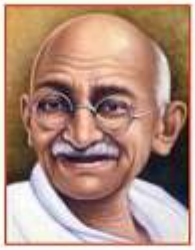

शिक्षा से मेरा मतलब किसी बच्चे या व्यक्ति के मस्तिष्क, आत्मा और शरीर में हर ओर से सबसे अच्छी चीजों और बातों को भरना है। - महात्मा गांधी

[सर्वांगीण विकास शिक्षा के माध्यम से ही संभव है, ऐसा मानना था राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का। शिक्षा को वे बहुत महत्त्व देते थे। शिक्षा सिर्फ हमारे दिमाग ही नहीं, बल्कि आत्मा और शरीर को भी प्रभावित करती है। अगर शरीर स्वस्थ नहीं है और अपनी आत्मा की आवाज आपको सुनाई नहीं देती, इसका मतलब है कि आपकी शिक्षा व्यर्थ है। असली शिक्षा हर ओर से अच्छी बातों को ग्रहण करने की प्रेरणा देती है।]

सबसे बड़ा हथियार

सबसे ताकतवर हथियार शिक्षा है, जिसे आप दुनिया बदलने के लिए प्रयोग कर सकते हैं।
-नेल्सन मंडेला

[शिक्षा आपको इतना मजबूत बना देती है कि आपको गलत के खिलाफ लड़ने का साहस देती है। यह आपके लिए तरह-तरह के संसाधन खोलती है। आगे बढ़ने की राह में आ रही बाधाएं मिटाती है। इसे हथियार बना कर आप दुनिया तक बदल सकते हैं।]

सिखाती है तालमेल

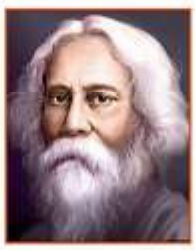

सबसे ऊंची शिक्षा हमें सिर्फ जानकारी नहीं देती, बल्कि हमारे जीवन को हर अस्तित्व के साथ तालमेल करना सिखाती है।
-रवींद्रनाथ टैगोर

[बहुत बड़ी-बड़ी डिग्रियाँ हासिल करके भी अगर आप अपने आसपास और दुनिया के दूसरे लोगों से तालमेल बैठाना नहीं सीख पाए तो आपकी शिक्षा का कोई अर्थ नहीं। वास्तविक शिक्षा दूसरों की स्थिति, परिस्थिति, दुख-तकलीफ और खुशियों को समझना और ध्यान रखना सिखाती है। एक-दूसरे से जोड़ती है।]

बड़े बदलाव की ताकत

एक बच्चा, एक शिक्षक, एक कलम और एक किताब दुनिया बदल सकती है।
-मलाला युसुफजाई

[शिक्षा के अधिकार के लिए लड़ने वाली मलाला की यह बात अपने आप में शिक्षा के महत्त्व और ताकत को पूरी तरह बयां करती है। शिक्षा बड़े-बड़े बदलाव लाने में समर्थ है।]

बनाती है आदर्श

किसी व्यक्ति में उसका जो आदर्श रूप उसमें पहले से मौजूद है, शिक्षा उसे बाहर निकाल कर सामने लाती है।
-स्वामी विवेकानन्द

[अच्छाई-बुराई सब हमारे अंदर है, बाहर नहीं। हमारे कौन से गुण-दोष हम पर हावी है, यह हमारी शिक्षा और संगत पर निर्भर करता है। अच्छी शिक्षा व्यक्तियों को तराश कर उसके सबसे अच्छे स्वरूप को बाहर लाती है।]

दिमाग का प्रशिक्षण

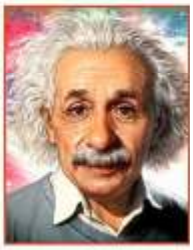

तथ्यों को जानना शिक्षा नहीं है। दिमाग को सोचने का प्रशिक्षण देना शिक्षा है।
-अल्बर्ट आइंसटीन

[कई लोगों को लगता है कि बहुत सारे तथ्य याद कर लेने या तारीखें रट लेने से उन्हें विद्वान् समझा जाएगा, मगर ऐसा नहीं है। रटने वाली विद्या फल नहीं देती।

शिक्षा का असली उद्देश्य है दिमाग को इस बात के लिए प्रशिक्षत करना कि सही दिशा में किस तरह सोचा जाए। एक अच्छा शिक्षक इस बात का महत्व समझता है और अपने विद्यार्थियों को स्वतंत्र तरीके से उर्वर दिशा में सोचने के योग्य बनाता है।]

तय करती है भविष्य

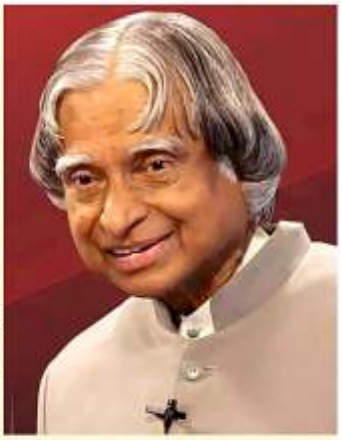

अगर लोग मुझे एक अच्छे शिक्षक के रूप में याद रखते हैं तो यह मेरे लिए बहुत बड़ा सम्मान होगा। शिक्षण वह महान व्यवसाय है जो किसी के चरित्र, सामर्थ्य और भविष्य को आकार देता है।
-एपीजे अब्दुल कलाम

[कलाम बताते थे कि कक्षा पांच में उनके गुरु अय्यरजी ने सभी बच्चों को शाम को समुद्र तट पर बुलाकर पक्षियों के उड़ने की क्रिया समझाई थी। इसका उनके जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ा। आगे चलकर वे रॉकेट इंजीनियर, एयरोस्पेस इंजीनियर व प्रौद्योगिकीवेत्ता बने। उनका कहना था कि सात साल के लिए कोई बच्चा मेरी निगरानी में रह जाए, फिर कोई उसे बदल नहीं सकता।]

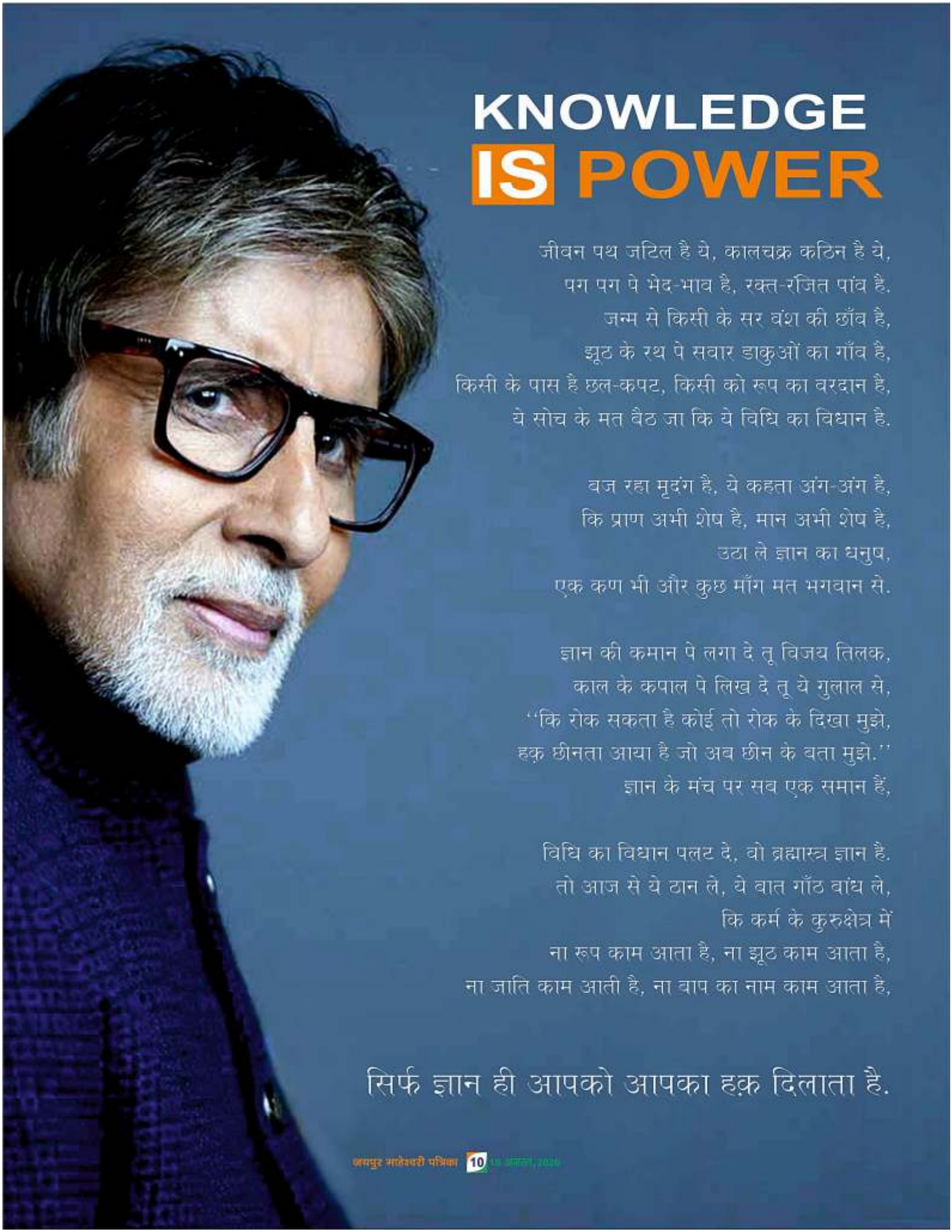

KNOWLEDGE IS POWER

जीवन पथ जटिल है ये, कालचक्र कठिन है ये,
पग पग पे भेद-भाव है, रक्त-रंजित पांव है.
जन्म से किसी के सर वंश की छाँव है,
झूठ के रथ पे सवार डाकुओं का गाँव है,
किसी के पास है छल-कपट, किसी को रूप का वरदान है,
ये सोच के मत बैठ जा कि ये विधि का विधान है.

बज रहा मृदंग है, ये कहता अंग-अंग है,
कि प्राण अभी शेष है, मान अभी शेष है,
उठा ले ज्ञान का धनुष,
एक कण भी और कुछ माँग मत भगवान से.

ज्ञान की कमान पे लगा दे तू विजय तिलक,
काल के कपाल पे लिख दे तू ये गुलाल से,
''कि रोक सकता है कोई तो रोक के दिखा मुझे,
हक़ छीनता आया है जो अब छीन के बता मुझे.''
ज्ञान के मंच पर सब एक समान हैं,

विधि का विधान पलट दे, वो ब्रह्मास्त्र ज्ञान है.
तो आज से ये ठान ले, ये बात गाँठ बांध ले,
कि कर्म के कुरुक्षेत्र में
ना रूप काम आता है, ना झूठ काम आता है,
ना जाति काम आती है, ना बाप का नाम काम आता है,

सिर्फ ज्ञान ही आपको आपका हक़ दिलाता है.

शिक्षा खोलती मुक्ति की राहें

डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन

ज्ञान और शिक्षा के प्रति डॉक्टर राधाकृष्णन के मन में अपार स्थान था। ज्ञान और शिक्षा के इस मोह का स्पष्टीकरण 23 जनवरी, 1957 को कलकत्ता विश्वविद्यालय के शताब्दी समारोह में उपाधि वितरण के अवसर पर दिए डॉक्टर राधाकृष्णन के भाषण से स्पष्ट होता है, जिसमें उन्होंने कहा:

बंगाल में अपने शासन के शुरू के पचास वर्षों में ईस्ट इंडिया कंपनी की आधुनिक शिक्षा-प्रणाली लागू करने की इच्छा नहीं थी। उस समय बंगाल का गवर्नर-जनरल वारेन हेस्टिंग्स प्राचीन भारतीय ग्रंथों का सच्चा प्रशंसक था और उसने भारत की प्राचीन संस्कृति को पुनर्जीवित करने का प्रयास किया। जब मैकाले सार्वजनिक शिक्षा-समिति का अध्यक्ष बना, तब उसने फरवरी, 1835 में अपनी प्रसिद्ध रिपोर्ट प्रस्तुत की, जिसमें भविष्य में भारतीयों को आधुनिक शिक्षा देने की अनुशंसा थी। लॉर्ड विलियम बैंटिक ने मैकाले के परामर्श को स्वीकार किया और यह निश्चय किया कि शिक्षा के लिए उपलब्ध धन विशेष रूप से अंग्रेजी के माध्यम से आधुनिक शिक्षा देने वाले स्कूलों व कॉलेजों को चलाने में खर्च किया जाना चाहिए।

अगर हम दुनिया के इतिहास को देखें तो पाएंगे कि सभ्यता का निर्माण उन महान ऋषियों और वैज्ञानिकों के हाथों से हुआ है, जो स्वयं विचार करने की सामर्थ्य रखते हैं, जो देश और काल की गहराइयों में प्रवेश करते हैं, उनके रहस्यों का पता लगाते हैं और इस तरह से प्राप्त ज्ञान का उपयोग विश्व श्रेय या लोक-कल्याण के लिए करते हैं। विश्वविद्यालयों की मनुष्य की अजेय आत्मा में आस्था होती है और उन्हें चाहिए कि वे विद्वानों और साहित्यकारों को बिना बाधा के अध्ययन-अनुशीलन की पूरी सुविधा दें। उन्हें चाहिए कि वे प्रत्येक सत्यान्वेषण को वहां तक ले जाने का पूरा अवसर दें, जहां तक उसकी बुद्धि, कल्पना और ईमानदारी उसे ले जा सकती है। कोई भी आजादी तब तक सच्ची नहीं होती, जब तक उसे विचार की आजादी प्राप्त न हो। किसी भी धार्मिक विश्वास या राजनीति के सिद्धांत को सत्य की खोज में बाधा नहीं देनी चाहिए।

हमारे देश की जो सांस्कृतिक जागृति पिछले सौ वर्षों के अंदर हुई है, वह आधुनिक विचार और आलोचना का हमारी प्राचीन विद्या पर प्रभाव पड़ने का फल है। जब हम विद्यार्थियों को एक विश्वविद्यालय में शिक्षा देते हैं। जब हम उनको जिज्ञासु और आलोचक बनाते हैं, तब स्वाभाविक है कि वे राजनीतिक स्वतंत्रता और लोकतंत्रीय शासन की मांग करेंगे। भारत आने से पूर्व मैकाले ने हाउस ऑफकॉमन्स में कहा था-

'क्या हम भारतवासियों को अज्ञानी बनाए रखना चाहते हैं, ताकि वे अधीर बने रहें? या हम सोचते हैं कि हम महत्वाकांक्षा जगाए बिना उनको ज्ञान दे सकते हैं? या हमारा मतलब है कि हम महत्वाकांक्षा जगाएं और उनको निकालने के लिए कोई वैध रास्ता न दें? यह संभव है कि भारतीय जनता का मस्तिष्क हमारी प्रणाली से विकसित हो और यहां तक विकसित हो कि हमारे काबू से बाहर निकल जाए। संभव है कि अच्छे शासन के द्वारा हम अपनी प्रजा को इतनी शिक्षा दें कि उसके अंदर अच्छे शासन की योग्यता आ जाए, संभव है कि यूरोरीय ज्ञान की शिक्षा प्राप्त करके भविष्य में कभी वे यूरोपियन संस्थाओं की मांग करने लगें। मैं नहीं जानता कि ऐसा दिन कभी आएगा। जब भी वह आएगा अंग्रेजी इतिहास का सबसे गौरवपूर्ण दिन होगा। राजदंड हमारे हाथ से जा सकता है। हमारी विजय अस्थिर हो सकती है, लेकिन एक विजय ऐसी भी होती है, जो कभी हारती नहीं है। एक साम्राज्य ऐसा भी है, जो क्षय के सभी कारणों से मुक्त होता है। ऐसी विजय बर्बरता के ऊपर ज्ञान की शांतिपूर्ण विजय है। ऐसा साम्राज्य हमारी कलाओं और हमारी नैतिकता का, हमारे साहित्य और हमारे कानूनों का साम्राज्य है।'

जब हम देश के नवयुवकों को आजादी की शिक्षा देते हैं। उन्हें यह सिखाते हैं कि शासक का कर्त्तव्य शासित की राय लेकर शासन करना है, तब अवश्य ही वे अधीनता से निकलकर आजादी की मांग करेंगे।

शिक्षक दिवस की शुभकामनाएँ

बजरंगलाल बाहेती

चेयरमैन
'अभिनंदन' श्री माहेश्वरी समाज जनोपयोगी भवन, जयपुर
ट्रस्टी एवं अध्यक्ष
श्री गिरीराज धरण माहेश्वरी सेवा ट्रस्ट, गोवर्धन (उ.प्र.)
ट्रस्टी एवं उपाध्यक्ष
- अखिल भारतीय माहेश्वरी सेवा ट्रस्ट, द्वारिका (गुजरात)
- अखिल भारतीय माहेश्वरी सेवा ट्रस्ट, जगन्नाथपुरी (उड़ीसा)

ट्रस्टी
- श्री राम शंकर गोशाला, छापर (चूरू)
- श्री माहेश्वरी भवन, छापर (चूरू)
- शेखावटी विकास परिषद, जयपुर

संरक्षक
महेश हॉस्पिटल, जयपुर
पूर्व उपाध्यक्ष
'उत्सव' श्री माहेश्वरी समाज जनोपयोगी भवन, जयपुर
भूतपूर्व शिक्षा सचिव
श्री माहेश्वरी समाज, जयपुर (2002-12)
कार्यकारिणी सदस्य
श्री माहेश्वरी समाज, जयपुर (1999-2022)
कार्यकारी मण्डल सदस्य
अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महासभा
निवर्तमान अध्यक्ष
सुजानगढ तहसील नागरिक परिषद, जयपुर

दूरभाष : 0141-2570415/75,
मो. : 098290-79200
ई-मेल : bajrang@baheti.in
निवास : सी-1/401-402, कमल अपार्टमेंट-1, बनीपार्क, जयपुर-302006

श्रेष्ठ शिक्षक उत्कृष्ट प्रेरक

अर्चना सिंह

भारतीय संस्कृति में शिक्षक का स्थान देवतुल्य माना जाता है। माता-पिता के बाद एक शिक्षक ही है जो बालक के हित को ध्यान में रखकर जीता है।

वह अपने व्यक्तित्व, जीवन-शैली, कार्य-पद्धति व विचारधारा से समाज के भविष्य के निर्माण की सामर्थ्य रखता है। एक श्रेष्ठ शिक्षक एक उत्कृष्ट प्रेरक भी होता है।

कहा गया है कि 'सृजन व विनाश दोनों शिक्षक की गोद में पलते हैं।'

अत: शिक्षक की अवधारणा प्राचीन समय से ही आदर्श रही है। वह मानवीय दुर्बलता से ऊपर उठकर अपने आदर्श जीवन-चरित्र से न केवल बालक को प्रेरित करता है वरन उसमें सकारात्मक दृष्टिकोण व जीवन की विसंगतियों को झेलने व जूझने की क्षमता व मानसिकता का विकास करता है।

आधुनिक परिप्रेक्ष्य में जब शिक्षा में व्यावसायिक योग्यताओं के विकास व कौशल परिष्कार की बात महत्वपूर्ण हो जाती है। ऐसे में शिक्षक के समक्ष चुनौतियाँ भी बढ़ रही हैं। अत: शिक्षक के लिए स्वयं को निरन्तर अध्ययनशील बनाए रखना (अपडेट) व नई स्थितियों में समायोजित रखना अति आवश्यक हो जाता है।

शिक्षा आन्तरिक प्रवृत्तियों के विकास का माध्यम है। अत: आवश्यकता इस बात की है कि शिक्षक के रूप में हम शिक्षण प्रक्रिया के ढाँचे को प्रेरणात्मक बनाएं।

'निर्देश देने की अपेक्षा प्रेरित करना सीखने की दिशा में बढ़ने में सहायक होता है।' (मनोविज्ञान)

शिक्षक का सम्पूर्ण व्यक्तित्व प्रेरणादायी व उच्च आदर्शों वाला होगा तो उसके सम्पर्क में आने वाले छात्र स्वत: ही अनुकरण द्वारा अपनी जीवन शैली में इन मूल्यों के महश्व को समझेंगे व स्थान देंगे।

आज आवश्यकता है शैक्षिक, मनोवैज्ञानिक उपागमों, सिद्धांतों व आदर्शों को आधुनिक परिप्रेक्ष्य के अनुकूल अपनी शिक्षण प्रक्रिया में अपनाने की ताकि बालक जीवन में व्यावहारिकता व व्यावसायिकता को संतुलित कर सके।

शिक्षक बालक व समाज के बीच की मजबूत कड़ी है जो समाज में सकारात्मक चिंतन का विकास करती है तथा उसका माध्यम है बालक। बालक हमारे पास एक अनगढ़ पत्थर के रूप में आता है उसे तराशना उससे मूर्ति बनाना या पारस बना के अमूल्य बना देना शिक्षक के ही हाथ में है।

आज जब अभिभावक अपनी व्यावसायिक व्यस्तताओं के कारण बालक की परवरिश में ज्यादा समय नहीं दे पाने को विवश हैं ऐसे में उनकी अपेक्षा शिक्षकों से अत्यधिक बढ़ गई है और साथ ही बढ़ गई है एक शिक्षक के रूप में हमारी जिम्मेदारियाँ भी।

''शिक्षक वह नहीं जो छात्र के दिमाग में तथ्यों को जबरन ठूँसे, बल्कि वास्तविक शिक्षक तो वह है जो उसे आने वाले कल की चुनौतियों के लिए तैयार करे।'' **-डॉ.सर्वपल्ली राधाकृष्णन**

बालकों को संवेगात्मक रूप से मजबूत बनाना, उन्हें जीवन के उतार-चढ़ाव में स्वयं को संयत रखना सिखाना व असफलताओं को स्वीकार कर स्वस्थ मानसिकता के साथ चुनौतियों के हल ढूँढने का कौशल विकसित करने का हुनर एक श्रेष्ठ शिक्षक की विशेषता है।

इन्टरनेट व तकनीकी की सर्वसुलभता ने बालकों के लिए जानकारी के द्वारा खोल दिए हैं ऐसे में शिक्षक की भूमिका सिर्फतथ्य सम्प्रेषक की नहीं बल्कि छात्रों को उसके विवेकशील प्रयोग की समझ विकसित करने की भी है। ऑन लाइन लर्निंग में भविष्य की संभावनाओं को तलाशने के लिए शिक्षकों को कई स्तरों पर अपने आप को तैयार करना आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है।

पुराने समय से आज शिक्षा की स्थितियाँ व बालक की मनोदशाओं में काफी परिवर्तन आया है। अत: बालक के शारीरिक व मानसिक विकास के लिए स्वस्थ शैक्षिक वातावरण प्रदान करने में शिक्षक की महती भूमिका है। शिक्षक के लिए बालक के स्तर तक जाकर सोचने व शिक्षण प्रक्रिया को क्रियान्वित करने की आवश्यकता है तथा उसकी रुचि, क्षमता व कौशल के विकास की रणनीति बनाकर क्रियान्वित करना वांछनीय है।

जरूरत इस बात की है कि शिक्षक न केवल अपने विषय में पारंगत हो बल्कि अन्य विषयों जैसे इतिहास, संस्कृति विज्ञान आदि के ज्ञानार्जन का लाभ छात्र को देते हुए बालक के सोचने के दायरे को बढ़ाएं। उन्हें समसामयिक विषयों पर चिंतन व अभिव्यक्ति के लिए प्रेरित करे।

शिक्षक स्वयं सृजनशीलता के उपागमों को धारण करें एवं बालकों को क्रियाशील (शारीरिक व मानसिक रूप से) रखते हुए अपनी दिशा तय करने व उस की ओर स्वयं बढ़ने की प्रेरणा दें।

आत्मीयता, शिक्षक का एक ऐसा सबल शस्त्र है जो अचूक है। बालक का विश्वास अगर हम अपने में पैदा कर सकें, उसे अपने विचारों, व कार्यशैली से प्रभावित कर सकें, तो उसके सकारात्मक अधिगम को कोई नही रोक सकता।

तभी तो कहा गया है:-

''गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देवो महेश्वरा
गुरुर्साक्षात परब्रह्म तस्मै श्री गुरुवे नम:।''

हम ऐसे शिक्षक बनें जिसकी छवि बालक की आत्मा में हमेशा रहे, जब हम उसके साथ न हों तब भी हमारी सिखाई बातें उसके जीवन व व्यवहार में स्पंदित होती रहें।

शिक्षक दिवस की शुभकामनाएँ

प्राचार्या, MPS इन्टरनेशनल

जीवन सूत्र

- जहां शब्द धुंधले पड़ जाएं, वहां चीजें जीवंत हो उठती हैं।
- जिंदगी में जो अनिवार्य है, आंखें उसे देख नहीं पातीं उसे सिर्फ दिल से ही देखा जा सकता है।
- एक कलाकार अपनी कला की संपूर्णता उस समय हासिल नहीं करता, जब उसके पास जोड़ने के लिए कुछ न बचा हो, बल्कि उस समय हासिल करता है, जब उसके पास खारिज करने के लिए कुछ न हो।
- मनुष्य होने का अर्थ है- जिम्मेदार होना, यह महसूस करना कि यदि हर आदमी अपने हिस्से की एक ईंट रखता है, तो वह विश्व-निर्माण में अपना बहुमूल्य योगदान करता है।

■ ऐंतोनिए द सैंट जेयुप्रे

शिक्षा
एक वृहद आयाम

सुनीता वशिष्ठ

वृक्ष की पूर्णता मूल में निहित है।
पत्र, पुष्प और सुगंध,
इसके दूरगामी फल हैं।।

उसी तरह संस्कार बालक का मूल है और शिक्षा से ये वृक्ष पल्लवित और पुष्पित होता है।

माता-पिता, गुरुजन व स्वयं बालक एक सुगंधित, सम्पन्न वट वृक्ष बनना व बनाना चाहते हैं और उसका सीधा संबंध शिक्षा से है।

शिक्षा जो अनवरत, निरंतर बहने वाली विशाल हृदया सरिता-सी है। कितने ही तटों को भिगोती, साधन सम्पन्न करती है, यह शिक्षा नदी। लेकिन जबसे हमने इसे धन कमाने के साधन के रूप में परिभाषित करना शुरू कर दिया है इसका स्वरूप मैला हुआ है और यह मूल्यों से दूर हो गई है क्योंकि तब दिल दिमाग में सिर्फएक लक्ष्य रहता है-

'येन-केन धनोपार्जन'

जब मूल्य छूटे, परिवार विघटन की ओर बढ़े, समाज पतन की ओर अग्रसर दिखाई दिया तब आज पुन: यह सोचने की आवश्यकता है कि गलत क्या हुआ ?

शिक्षा एक माध्यम है, एक सेतु है, एक रस्सी है जिसके एक छोर पर परिवार है, मध्य में बालक है और दूसरे छोर पर विद्यालय।

किसी भी बच्चे की शिक्षा जन्म से ही शुरू हो जाती है। जब हम पहली बार शहद से साथ किसी सम्माननीय, आदर्श व्यक्ति के जैसे होने के आशीर्वाद को अपनी अंगुली से उसके मुख तक पहुँचाते हैं। यदि हम चाहते हैं कि बच्चे का सम्पूर्ण विकास हो तो उस त्रिकोण कि कल्पना सहज है जहाँ एक कोण बच्चा है और दूसरा व तीसरा क्रमश: परिवार व विद्यालय।

विद्यालय दुनिया से परिचित कराता है, सही-गलत की समझ का, तर्क-वितर्क का विकास करता है, वही परिवार एक महत्त्वपूर्ण कड़ी के रूप में उसे देश, समाज से जोड़ता है। मानवीय मूल्यों के लिए उर्वर जमीन तैयार करता है।

जब माता-पिता गुरुजनों (विद्यालयों) के श्रम-परिश्रम को पैसे से तोलने लगते हैं तो बालक में स्वयं धन के प्रति आकर्षण का विकास होता है और तब वह उनके कार्यों को महत्त्व न देने की भावना सीखता है और एक व्यापारी की तरह लाभ-हानि का विचार करने लगता है। अनजाने ही हम उसको प्रत्येक कार्य का मोल लगाना सिखा देते हैं।

इस महामारी ने एक जो सबसे अच्छी सीख दी है वो है परिस्थितियों के अनुसार ढलने और सम्बन्धों को सम्मान देना। नए अस्त्र-शस्त्र अपना कर शिक्षा भी नवीन तकनीक के साथ उपस्थित है, बस तय यह करना है कि सेतु के मध्य खड़े बालक को संस्कारों, मूल्यों, अपनेपन के साथ दोनों छोरों को पकड़े हुए ऊँचाई तक ले जाना है। जहाँ -

शिखर पर पहुँच कर भी, धरा के जीव छोटे न लगें।
न हो अकेलापन, अपनों का साथ न छूटे,
खुद भी बढ़ें और देवदारु-सा बनकर
राही को छाया भी दें।

प्राचार्या, MGPS

पढ़ने की रुचि बढ़ाएगी
इंटीग्रेटेड पुस्तक

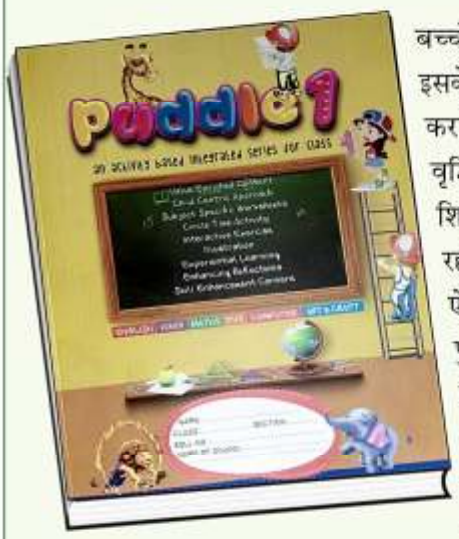

बच्चों की पढ़ाई में रुचि बनी रहे, इसके लिए समय-समय पर प्रयोग करने पड़ते हैं। इससे गुणवत्ता में भी वृद्धि होती है। माहेश्वरी समाज शिक्षा समिति इसमें काफी आगे रही है। समिति के प्रयासों से एक ऐसी इंटीग्रेटेड (समेकित) पुस्तक तैयार की गई है, जो बच्चों के लिए बहुत ही फायदेमंद सिद्ध होगी। इस पुस्तक के द्वारा बच्चों के बस्ते का बोझ कम करने में भी सहायता मिलेगी, क्योंकि इसमें एक माह तक एक ही पुस्तक लानी पड़ेगी। सभी पुस्तकें अलग-अलग लाने की जरूरत नहीं है। इससे बस्ते का बोझ स्वत: कम हो जाएगा। बच्चे अपनी ऊर्जा पढ़ाई में लगा सकेंगे। समिति के अध्यक्ष प्रदीप बाहेती और महासचिव शिक्षा नटवर लाल अजमेरा इस तरह की पुस्तक तैयार करवाने में काफी रुचि ले रहे थे। आयु की दृष्टि से कक्षा एक के विद्यार्थी अधिक परिपक्व नहीं होते, इसलिए उनके लिए एक ऐसी पुस्तक की जरूरत थी, जो ज्ञानवर्द्धक होने के साथ-साथ रुचिकर भी हो। इसके लिए अनुभवी शिक्षकों की एक टीम बाई गई।

इस टीम ने अपने दीर्घ अनुभव, शोध व सोच के बल पर कड़ी मेहनत के बाद एक पुस्तक तैयार की। संयोजक बृजमोहन बाहेती के निर्देशन में तय समय सीमा में ही पुस्तक पूरी हो गई। पुस्तक तैयार करने के लिए जो टीम बनाई गई, उसमें भावना भाटिया, शीतल विनसेंट, रीटा खुराना, अमृता शर्मा, संतोष कुमारी, भावना ऊबा शामिल थीं। इस टीम का प्रभार अर्चना सिंह (प्राचार्य, एमपीएस इन्टरनेशनल) को सौंपा गया।

अध्यापकों के अनुसार आठ चरणों में विभक्त इस पुस्तक में ''करके सीखों'' पद्धति को प्रमुखता दी गई है। इसमें हर विषय को एक-दूसरे से जोड़ा गया है। इस पुस्तक को रुचिकर बनाने के लिए चित्रों और कहानियों को प्रमुखता दी गई है। दैनिक जीवन की गतिविधियां भी इसमें शामिल हैं। इस समेकित पुस्तक को अभिभावकों द्वारा भी काफी पसंद किया जा रहा है। उनका कहना है कि भाषा को सुनने, बोलने, सीखने व पढ़ने की समझ विकसित करने में पुस्तक सहायक सिद्ध होगी।

*अध्यक्ष महोदय ने यह जिम्मेदारी अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी युवा संगठन के भूतपूर्व राष्ट्रीय शिक्षा संयोजक **बृजमोहन बाहेती** को दी। जिन्होंने प्रमुख शिक्षाविदों के साथ विचार-विमर्श करके युवाओं की शैक्षणिक प्रोन्नति के लिए प्रपत्र तैयार कर प्रादेशिक संगठनों में लागू किया था।*

व्यक्तित्व निर्माण करने वाला ही सच्चा शिक्षक

शिक्षक उस शिल्पकार या कुम्हार की भाँति होता है, जो प्रत्येक बालक को समाज व समय की आवश्यकताओं के अनुरूप, एक सुन्दर आकृति का रूप प्रदान करे।

अजय कुमार गुप्ता

कुछ लोग थे कि वक्त के सांचे में ढल गए।
कुछ लोग थे कि वक्त के सांचे बदल गए।

ऐसे ही आदर्श प्रतिमान के रूप में सर्वपल्ली डॉ-राधाकृष्णन शिक्षा जगत में एक दैदीप्यमान नक्षत्र की तरह उदित हुए। बहुमुखी प्रतिभा के धनी डॉ. राधाकृष्णन महान दार्शनिक, सौम्य राजनयिक, सफल व्यवस्थापक और चतुर प्रशासक थे, पर सबसे ऊपर वे एक विषुद्ध शिक्षक थे। शिक्षा शास्त्री के रूप में उनकी अकूत ख्याति का ही परिणाम था कि आज हम 5 सितम्बर, शिक्षक दिवस के रूप में मना रहे हैं। उन्होंने अपने जीवन के 40 स्वर्णिम वर्ष शिक्षण वृत्ति को ही समर्पित किए। मैं हृदय से उनको नमन करता हूँ।

आदर्शों की मिसाल बनकर
बाल जीवन संवारता शिक्षक।
सदाबहार फूल-सा खिलकर
महकता और महकाता शिक्षक।।

'गुरु' शब्द में 'गु' का अर्थ है 'अंधकार' और 'रु' का अर्थ है 'प्रकाश' अर्थात गुरु का शाब्दिक अर्थ हुआ 'अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाने वाला मार्गदर्शक'।

गुरु शब्द का अर्थ है 'अंधकार को दूर करने वाला।' गुरु अज्ञान को दूर करके हमें ज्ञान का प्रकाश देता है। वह ज्ञान जो हमें बतलाता है कि हम कौन हैं, विष्व से कैसे जुड़ें और कैसे सफलता प्राप्त करें। माता-पिता बच्चे को जन्म देते हैं, उनका स्थान कोई नहीं ले सकता, उनका कर्ज हम किसी भी रूप में नहीं उतार सकते, लेकिन एक शिक्षक ही है, जिसे हमारी भारतीय संस्कृति में माता-पिता के बराबर दर्जा दिया जाता है, क्योंकि शिक्षक ही हमें समाज में रहने योग्य बनाता है, इसलिए ही शिक्षक को समाज का शिल्पकार कहा जाता है।

एक अच्छा शिल्पकार किसी भी प्रकार के पत्थर को तराश कर उसे सुन्दर आकृति का रूप दे देता है। किसी भी सुन्दर मूर्ति को तराशने में शिल्पकार की बहुत बड़ी भूमिका रहती है। इसी प्रकार एक अच्छा कुम्हार वही होता है, जो गीली मिट्टी को सही आकार प्रदान कर, उसे समाज के लिए उपयोगी बर्तन अथवा एक सुन्दर मूर्ति का रूप दे देता है। यदि शिल्पकार तथा कुम्हार द्वारा तैयार की गई मूर्ति एवं बर्तन सुन्दर नहीं है, तो वह जिस स्थान पर जायेंगे उस स्थान को अधिक विकृत स्वरूप ही प्रदान करेंगे। इस प्रकार शिक्षक उस शिल्पकार या कुम्हार की भाँति होता है, जो प्रत्येक बालक को समाज व समय की आवश्यकताओं के अनुरूप, एक सुन्दर आकृति का रूप प्रदान कर, उसे समाज का प्रकाश-स्तम्भ बना सकता है।

गुरु बिनु भवनिधि तरइ न कोई।
जो बिरंचि सकर सम होई।

अर्थात भले ही कोई ब्रह्मा, शंकर के समान क्यों न हो, वह गुरु के बिना भव सागर पार नहीं कर सकता।

बंदउँ गुरु पद, कंज कृपा सिंधु नररूप हरि।
महामोह तम पुंज जासु बचन रविकर निकर।।

अर्थात गुरु मनुष्य रूप में नारायण ही है। मैं उनके चरण कमलों की वन्दना करता हूँ। जैसे सूर्य के निकलने पर अन्धेरा नष्ट हो जाता है, वैसे ही उनके वचनों से मोह रूपी अन्धकार का नाश हो जाता है।

यदि हम आधुनिक युग में शिक्षक शब्द का विष्लेशण करें तो इसकी व्याख्या भी अति गूढ़ है। मैं तो केवल संकेत मात्र कर रहा हूँ।

शिक्षक का अर्थ

शि -शिखर तक ले जानेवाला।

क्ष- क्षमा की भावना रखने वाला।

क- कमजोरी दूर करने वाला।

अर्थात् जो विद्यार्थी की हर गलती को क्षमा करने की भावना रखता है और उसकी हर कमजोरी दूर कर उसको शिखर (सफलता) तक ले जाता है। वह सच्चा शिक्षक कहलाता है।

आज 34 साल बाद एक नई शिक्षा नीति के रूप में शिक्षक व शिक्षार्थियों को नया उपहार मिलने वाला है। शिक्षा की यह आधुनिक अवधारणा मुख्य रूप से शिक्षा के साथ कौशल विकसित करने पर केंद्रित है। यह पारंपरिक अवधारणा का विरोध करता है, जो मूल रूप से केवल स्कोरिंग अंक और परीक्षा उत्तीर्ण करने से संबंधित है। आधुनिक अवधारणा शिक्षा प्रदान करने का प्रगतिशील तरीका है, जो किसी व्यक्ति के समग्र विकास पर ध्यान केंद्रित करता है। एक व्यक्ति जो अच्छी तरह से योग्य है वह दूसरों पर निर्भर हुए बिना कहीं भी अपनी आजीविका कमा सकता है। यह उसे आत्म-निर्भर बनाता है, आर्थिक रूप से और साथ ही भावनात्मक रूप से। इस तरह आधुनिक शिक्षा प्रणाली प्रौद्योगिकी और वैज्ञानिक विकास का उपयोग इस तरह करेगी, जिससे ज्ञान के व्यावहारिक उपयोग के साथ बच्चों की काम करने की क्षमता में वृद्धि होगी। हमें अपने प्राचीन गौरव को समझना चाहिए, उसे खो देने के कारणों पर विचार कर अपने आपको बदलना चाहिए। इस बदलाव का सबसे अधिक भार केवल शिक्षकों पर ही है। इसलिए मेरा अध्यापक महानुभावों से निवेदन है कि वे अपनी गरिमा को समझें। यदि अध्यापक स्वयं को केवल एक शिक्षाकर्मी के रूप में सेवारत कर्मचारी ही समझता है तो इससे बड़ा दुर्भाग्य इस देश का कुछ नहीं हो सकता है। एक शिक्षक का महान दायित्व है। उसे अपने स्वाभिमान और आत्मसम्मान की रक्षा करनी है। यह तभी संभव है, जब हम अपने दायित्व को समझें और बिना कोताही बरते उसे निभाएँ। हमें ओछे चिंतन, ओछे व्यक्तियों की भावनाओं से बचना चाहिए । शिक्षक छात्र के लिए आदर्श है, वह उसका अनुसरण करता है। श्रद्धा और सम्मान उसे इसी शर्त पर प्राप्त होता है। शिक्षक व्यक्तित्व निर्माण का ढाँचा है, इसलिए जैसा ढाँचा होगा वैसा ही प्रतिरूप ढलेगा। जहाँ कथनी और करनी भिन्न दिखाई देती है, वहीं श्रद्धा और सम्मान में कटौती होती चली जाती है।

एक सच्चा शिक्षक वही है, जो वाणी के साथ-साथ आचरण से शिक्षा दे। वही जो ज्ञान अर्जित करे, ज्ञान बाँटे और ज्ञान से जिए, पाठ्य विषयों में से जीवन के आदर्शों को उभारे। जीवन में सहज ही घटित होने वाली घटनाओं की समीक्षा करते हुए भूलों से बचने तथा आदर्शों को अपनाने का महत्त्व समझाए।

गुरु बिना ज्ञान नहीं, ज्ञान बिना आत्मा नहीं,
कर्म, धैर्य, ज्ञान और ध्यान सब गुरु की देन है।

कार्यवाहक प्रधानाचार्य
श्री माहेश्वरी सीनियर सेकेंडरी स्कूल

हिन्दी के तपस्वी साधक श्री भगवानदास केला

सम्भव है नयी पीढ़ी के उदीयमान साहित्यकारों को पुरानी पीढ़ी के उन साहित्य सेवियों के बारे में कुछ आवश्यक बातें न मालूम हों, जिन्होंने हिन्दी भाषा के विकास, प्रसार और प्रतिष्ठा के लिए निरन्तर संघर्ष किया है। उनके विचारों से हमारा मत मिलता हो, चाहे न मिलता हो, लेकिन उनके संघर्ष और साधना के प्रति हमें कृतज्ञ होना ही चाहिए। ऐसे ही पुरानी पीढ़ी के साहित्य-सेवियों में एक थे गांधीवादी चिन्तक स्वर्गीय भगवानदास जी केला। राष्ट्रभाषा हिन्दी के इस तपस्वी साधक ने साहित्य-सर्जन और लोकसेवा के क्षेत्र में जो कीर्तिमान खड़े किये हैं, वे महान् प्रेरणा के स्रोत हैं।

केलाजी के पूर्वज जैसलमेर से उठकर पंजाब चले गये थे। इस कारण भी शायद राजस्थान के प्रति उनका विशेष लगाव रहा। वहाँ करनाल जिले के एक गांव बाबेल में 21 अक्टूबर, 1890 को आपका जन्म हुआ। जन्म के अगले ही वर्ष पिताजी का देहांत हो गया और तब वह स्वाभिमानी किन्तु परिश्रमी मां की स्नेह-छाया में बचपन की देहरी पार करने लगे। इस पुरुषार्थी मां की तपस्या की झलक स्वयं केलाजी के ही शब्दों में देखिए ''बेचारी मां कपास ओड़ती, सूत कातती और कपड़ा सींती थी। दिन में जितना भी समय काम करने का मिलता था वह काम करती रहती। चांदनी रात में, चन्द्रमा के प्रकाश में भी काम होता रहता था। अंधेरे के समय थोड़ी देर दिया जलाकर आवश्यक व्यवस्था करली जाती थी। माताजी की निगाह कमजोर होने से उनसे बारीक सिलाई का काम नहीं होता था। वह प्राय: मौहल्ले वालों की दोहर, चद्दर, रजाई का गिलाफऔर मिरजई आदि सींती थीं।''

पाँच वर्ष की उम्र में उनका विद्याध्ययन प्रारम्भ हुआ। करनाल से हाई स्कूल करने के अनन्तर दिल्ली के मिशन-कालेज में प्रवेश लिया। श्री सुशील कुमार रुद्र तथा महामना एन्ड्रयूज इस संस्था में थे। उनकी स्नेह छाया में युवक भगवानदास को अच्छा मार्गदर्शन मिला।

साहित्य सेवा की प्रेरणा

सन् 1910 की जुलाई की बात है। वह इन्जीनियरिंग कालेज, रुड़की के छात्र थे। माताजी का आकस्मिक निधन हुआ। माताजी उनके जीवन का केन्द्र थीं। वियोग की वेदना को उनका भावुक हृदय सहन नहीं कर पाया और एक दिन चिंता के इन्हीं क्षणों में वह बेहोश हो गए लेकिन इसी समय जैसे उन्हें नया प्रकाश मिला-''तू वृथा शोक करता है। मां की सेवा न कर सका तो क्या? तेरी बड़ी माँ, तेरी माता की माता, भारत माता मौजूद हैं। तेरे मन में सेवा करने की है, तू इनकी सेवा कर।'' इस प्रकार माताजी की सेवा के रूप में भारत माता की सेवा की बात निकली और साहित्य उनका साधन बना। केलाजी द्वारा संस्थापित 'भारतीय ग्रंथमाला' के पीछे उनकी यह मातृ-सेवा की भावना ही प्रमुख रूप से रही है।

मां के निधन के पश्चात् अब वह एकाकी थे। काम की आवश्यकता थी। बरेली, भिवानी, पोकरण आदि स्थानों में वह अध्यापक रहे। इसी समय और पढ़ने की इच्छा उन्हें नागपुर ले गई। बी.ए. में राजनीति और अर्थशास्त्र उनके विषय थे। इन विषयों के अध्ययन के समय अनुभव हुआ कि देश को दो रोग भयंकर रूप से सता रहे हैं पराधीनता और दरिद्रता। अस्तु राजनीति-विषय पुस्तक लिखने की इच्छा बनी। इस प्रकार सन् 1915 में केलाजी की प्रथम पुस्तक-हिन्दी में राजनीति-विषय की प्रथम रचना ''भारतीय शासन'' प्रकाशित हुई।

अब वह ब्यावर में अध्यापक थे। देशभक्त स्व. दामोदरदास जी राठी के निकट सम्पर्क में आए। ''जयाजी प्रताप'' का सम्पादन किया। लेकिन सन् 20 में प्रेम-महाविद्यालय, वृन्दावन में उनका आगमन अनेक दृष्टियों से महत्वपूर्ण रहा। उन्हीं दिनों उनकी ''भारत राष्ट्र निर्माण'' तथा एकाध अन्य पुस्तकें प्रकाशित हुईं। वृन्दावन में उनका लेखन कार्य संजीदगी से चलने लगा और वहां 'प्रेम' के कुछ समय सम्पादक भी रहे। श्री दयाशंकर दुबे के सम्पर्क में आए तथा इलाहाबाद रहने लगे। अर्थशास्त्र विषय पर हिन्दी की पहली पुस्तक ''भारतीय अर्थशास्त्र'' की रचना हुई।

सन् 1927 में आकर वे सम्पूर्ण शक्ति और समय साहित्य सेवा में देने लगे। स्वयं ही लेखक और स्वयं ही प्रकाशक बने। सन् 27 से 50 तक उनकी विविध विषयों की तीस पुस्तकें निकली। प्राचीन साहित्य के अनुशील स्वरूप ''कौटिल्य के आर्थिक विचार'' और ''कौटिल्य की शासन पद्धति'' प्रकाशित हुई। भारत की उपेक्षित आदिम जातियों को उन्होंने याद किया और ''हमारी आदिम जातियाँ'' पुस्तक तैयार हुई। नागरिकता तो उनका खास विषय ही रहा और 'नागरिक शिक्षा' 'भावी नागरिकों से', 'मनुष्य जाति की प्रगति', 'अपराध चिकित्सा', 'लोकराज्य या सच्चा लोकतंत्र से', 'भारतीय जागृति', 'हमारी राष्ट्रीय समस्याएं', 'विश्व संघ की ओर', 'व्यवसाय का आदर्श', 'नागरिक शास्त्र' आदि उपयोगी प्रकाशन हुए।

देशी राज्यों के विषय में उनकी दो महत्वपूर्ण रचनायें हैं- 'देशी राज्य शासन' और 'देशी राज्यों की जन जागृति'। प्रसिद्ध पत्रकार श्री जगदीशप्रसाद चतुर्वेदी की सम्मति में केलाजी ने इस आन्दोलन के प्रथम इतिहास लेखक होने का जो संकल्प किया, उनके लिए रियासती जनता और हिन्दी संसार उनका कृतज्ञ रहेगा।

केलाजी ने साहित्य-सेवा को केवल पद, प्रतिष्ठा, पैसा-प्राप्ति अथवा कोरमकोर जीविका के साधन-रूप में स्वीकार नहीं किया था, अपितु साहित्य-साधना उनके जीवन का मिशन था। प्रारम्भ से ही उन्होंने अपनी रचनाओं में नैतिकता, चरित्र और आदर्श का आग्रह रखा था। केलाजी की मान्यता रही कि अच्छा साहित्य देने के लिए लेखक को स्वयं अच्छा जीवन बिताना चाहिए। साहित्य में नीति, धर्म, सेवा आदि की बात कहना और अनैतिक, पापमय, शोषणकारी जीवन बिताना बेमेल है। गाँधीजी तथा श्रीकृष्णदासजी जाजू के विचारों से वे प्रभावित थे। सन् 1950 में आकर उनके साहित्यिक जीवन ने नई करवट ली। गाँधीजी के इस एक कथन ने जैसे उनके विचारों में ही क्रान्ति कर दी-''जो अर्थशास्त्र व्यक्ति की या राष्ट्र की नैतिक भलाई पर आघात करता है, वह अनैतिक अत: पापमय है।'' उन्हें अब नई दिशा मिल गई। पिछले पैंतीस वर्षों से वह जिस अर्थशास्त्र की वकालत करते रहे, वह अब उनकी दृष्टि से अनर्थ-शास्त्र था। सन् 1951 में पहली बार उनका 'सर्वोदय अर्थशास्त्र' प्रकाशित हुआ। इसके पश्चात् तो 'सर्वोदय ग्रन्थमाला' के अन्तर्गत लगभग 23 बहुमूल्य रचनायें निकली हैं। इनमें ''मानव संस्कृति'', 'राज्य व्यवस्था-सर्वोदय दृष्टि से', 'समाज रचना सर्वोदय दृष्टि से' आदि उनकी प्रमुख रचनाएं हैं।

हिन्दी दिवस पर सरस्वती साधक को प्रणाम-सम्पादक

BIHANI ORTHO-SPINE CLINIC

G 33-34, Vijaylaxmi Tower, Central Spine, Vidhyadhar Nagar,
Sector - 6, Near Dana Pani Restaurant, Jaipur

निम्न लक्षणों वाले रोगियों के लिये परामर्श

Shastri Nagar branch

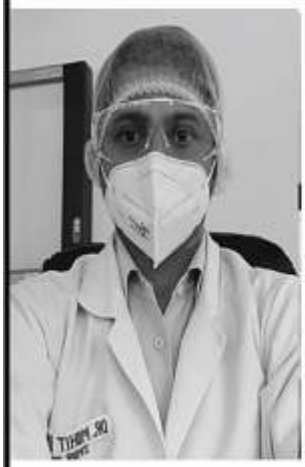

**A-33, Shastri Nagar
Jaipur**

डॉ. मोहित बिहाणी

स्पाइन, हड्डी एवं जोड़ रोग विशेषज्ञ

(स्विट्ज़रलैण्ड, जर्मनी, आंध्रप्रदेश व चंडीगढ़ से प्रशिक्षित)

MBBS, DNB (Ortho), MNAMS Ortho-Spine Surgeon

9950082342, 9664265165

- कमर दर्द
- गर्दन दर्द
- रीढ़ की हड्डी के फ्रेक्चर
- रीढ़ की हड्डी में कूब
- कंधे व बॉह में दर्द या झनझनाहट
- साईटिका, स्लिप डिस्क
- स्पाइन टीबी
- सरवाईकल स्पोंडिलोसिस
- कमर के निचले हिस्से से एक या दोनों पैरों में दर्द या सुन्नपन (झनझनाहट)

Visiting hours : 9 A.M. to 1 P.M.

All Patients visiting our clinic are advised to wear a mask, carry hand sanitizers, download & install "Arogya Setu App" and follow social distancing norms at clinic.

Fix an appointment before visiting only if it is urgent to consult.

Deepak Bhandari
+91-9829051091
+91-9460951091

Satkaar Event & Decorators

Satkaar Caterers

Rahul Jajoo
+91-9828112085

कोरोना का डर नहीं रोके उत्सव की राह....... क्योंकि सत्कार पूरी करेगा आपकी चाह.......!

Your Trust & Safety is Our Responsibility

: Book Your Order From Home :

- *Boondi/Laddu*
- *Gulab Jamun (Pantua)*
- *Moongthal*
- *Rasgulla*
- *Long Sev Namkeen*
- *Mathri*
- *Falahari Namkeen*
- *Khasta Kachori*

On Order :

- *Ras Malai*
- *Kaju Katli*
- *Moti Paak*
- *Fruit Cream*
- *Aam Rabdi*
- *Shri Khand*

Dryfruits Also Available

Free Home Delivery
Min. Order 1000/-

Payment :
Paytm
9024643576
or Cash on Delivery

Place Your Order
(Before One Day):

We Provide Your Favorite Food & Sweets Made Under Sanitized Atmosphere

सभी त्यौहारों पर मिठाईयां आकर्षक पैक में उपलब्ध है।

दाल बाटी चूरमा ऑर्डर पर उपलब्ध है।

We Also Provide Food & Sweets For Small Parties on Order

Off. Add. :- 1156, Nirwan Marg, Jhotwara Road, Jaipur • Ph.: 0141-2282229
e-mail : rahul@satkaarevents.com • Web. : www.satkaarevents.com

Workshop Add. :- 21, Dayal Nagar, Gopalpura Bypass, Jaipur

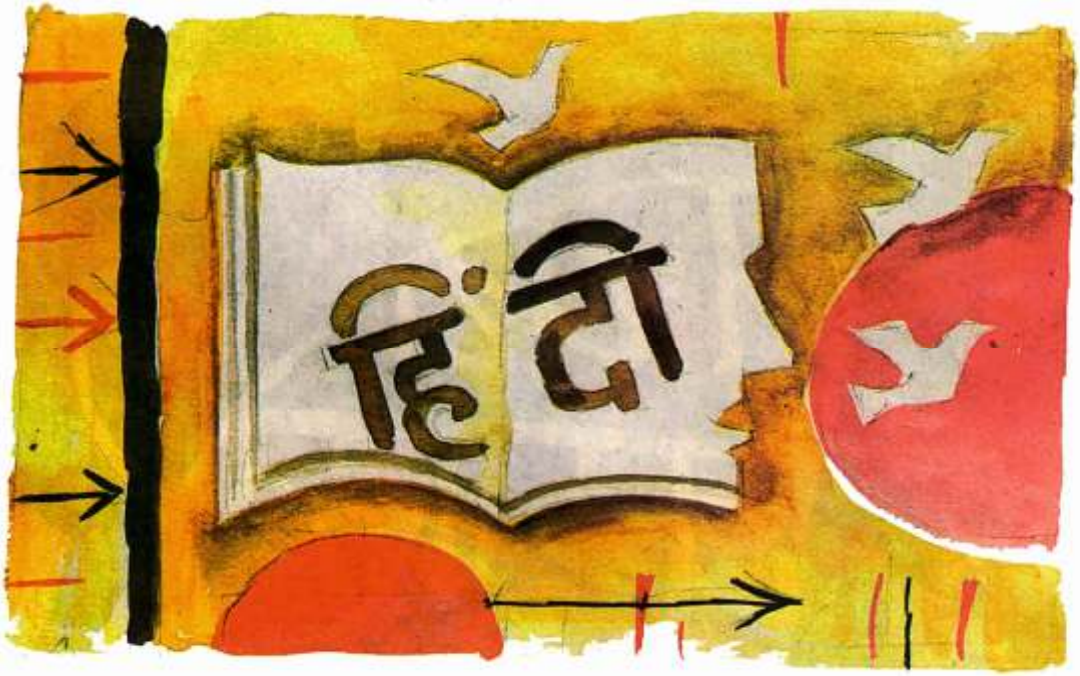

मातृभाषा

मैं बच्चों के मानसिक विकास के लिए उन पर मां की भाषा को छोड़कर दूसरी कोई भाषा लादना मातृभूमि के प्रति पाप समझता हूँ। मेरा यह विश्वास है कि राष्ट्र के जो बालक अपनी मातृभाषा के बजाए दूसरी भाषा में शिक्षा प्राप्त करते हैं, वे आत्महत्या ही करते हैं। इसलिए, मैं इस चीज को पहले दर्जे का राष्ट्रीय संकट मानता हूँ।

• महात्मा गांधी

मुहावरों में हिन्दी

अपनी गांठ पैसा, तो पराया आसरा कैसा

अर्थ- समर्थ व्यक्ति को दूसरों के आसरे की आवश्यकता नहीं होती।

अंधा बांटे रेवड़ी, फिर-फिर अपने को देय।

अर्थ- जब आदमी किसी वस्तु को घुमा-फिराकर अपने लोगों को देता है।

अंग्रेज राज, तन को न कपड़ा, न पेट को नाज़

अर्थ- टैक्सों से पीड़ित जनता को अच्छा खाना-कपड़ा नहीं मिल पाता।

अंधाधुंध मनोहरा गाय।

अर्थ- कोई देखने-सुननेवाला नहीं, और मनोहरा के मन में जो आता है, सो गाये चला जाता है।

अंधा बगुला कीचड़ खाय।

अर्थ- अभागा हमेशा दुख भोगता है, अथवा कह सकते हैं कि अनाड़ी को हमेशा निकम्मी वस्तु ही मिलती है।

अंडे सेवे कोई, बच्चे लेवे कोई।

अर्थ- परिश्रम कोई करता है और लाभ कोई उठाता है।

अपनी नाक कटे तो कटे, दूसरे का सगुन तो बिगड़े

अर्थ- दूसरों के नुकसान के लिए अपने नुकसान की परवाह न करना।

अड़वा बैल, जी का जंजाल

अर्थ- स्वतंत्र और उच्छृंखल व्यक्ति मुसीबत पैदा करता है।

अंधा गुरु बहरा चेला, मांगे हड़ देय बहेड़ा

अर्थ-व्यक्ति के परस्पर मेलजोल से काम न करने पर कटाक्ष है।

अब की अब, तब की तब

अर्थ- भविष्य की चिंता छोड़कर वर्तमान की ही चिंता करनी चाहिए।

हिंदी में प्रथम

हिन्दी आन्दोलन

हिंदीभाषी प्रदेशों में भी सबसे पहला आंदोलन बिहार में वर्ष 1835 में शुरू हुआ। इस आंदोलन के फलस्वरूप वर्ष 1875 में बिहार में कचहरियों और स्कूलों में हिंदी प्रतिष्ठित हुई।

महाकाव्य

पहला महाकाव्य कवि चंदबरदाई कृत 'पृथ्वीराज रासो' है। यह राजपूत राजा पृथ्वीराज चौहान पर लिखा गया। चौहान ने 1165-1192 तक दिल्ली और अजमेर के बीच शासन किया।

तार सप्तक

वर्ष 1943 में अज्ञेय द्वारा संपादित 'तार सप्तक' ने हिंदी कविता में नये युग का सूत्रपात किया। 'तार सप्तक' में सात प्रयोगवादी कवियों की रचनाएं संकलित थीं।

डी.लिट. की उपाधि

हिंदी साहित्य में सबसे पहले यह उपाधि प्राप्त करने का गौरव डॉ. पीताम्बरदत्त बड़थ्वाल को है। 1933 को उन्हें यह उपाधि मिली। उत्तराखंड के पौड़ी गढ़वाल निवासी दत्त छायावादी कवि थे।

प्रथम गद्य कृति

लल्लूलाल कृत प्रेम सागर (भागवत का दशम स्कंध)। 1860 के आसपास हिंदी गद्य का सूत्रपात करने वालों में मुंशी सदासुखलाल, इंशा अल्ला खां, सदल मिश्र का भी नाम लिया जाता है।

प्रथम उपन्यास

लाला श्रीनिवास दास कृत- परीक्षा गुरु। यह मथुरा में रहने वाले सेठों की जीवनशैली पर आधारित है। वह पहले हिंदी उपन्यासकार हैं, जिन्होंने निजी अनुभव और आकलन पर लेखन किया।

आधुनिक आलोचक

आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने 'हिंदी साहित्य का इतिहास' आधुनिक आलोचना का एक प्रतिमान स्थापित किया। आज भी उनकी इस पुस्तक को हिंदी की आचार्य परंपरा में उल्लेखनीय माना जाता है।

प्रदीप बाहेती
अध्यक्ष

नटवर लाल अजमेरा
महासचिव शिक्षा

एमपीएस संस्कृति, तुलसी मार्ग, बनीपार्क

Sanskriti Pre Primary School

ऑनलाइन शिक्षण-मनोरंजन व शिक्षा एक साथ

एम.पी.एस संस्कृति बनीपार्क में ऑनलाइन शिक्षण अनवरत चल रहा हैं। बच्चे बेसब्री से अपनी कक्षा का इंतज़ार करते है। बच्चों को शिक्षा से बांधे रखने के लिए रोज एक एक्टिविटी करवाई जा रही हैं जिससे बच्चे पढ़ाई के साथ-साथ एक्टिविटी के माध्यम से कक्षा का आनंद ले रहे हैं। अभिभावकों का फीडबैक बहुत संतोषजनक है।

हरियाली तीज महोत्सव

23 जुलाई, 2020 को ऑनलाइन कक्षा के दौरान तीज महोत्सव मनाया गया। इसमे बच्चों को स्क्रीन के माध्यम से तीज से संबंधित सभी चीज़ों से अवगत कराया गया, बच्चों को झूले, लहरिया व घेवर की पिक्चर दिखाकर तीज पर्व को क्यों, कब, कैसे मनाया जाता है, यह समझाया गया। सभी बच्चे कक्षा में तीज मनाने के लिए उत्साहित थे। सभी ने पारंपरिक वेशभूषा कुर्ता-पायजामा व लहरिये में नज़र आए। बच्चों ने इस दौरान अपनी हथेलियों पर मेहंदी भी लगवाई।

आउटडोर एक्टिविटी

ग्रोस मोटर डवलपमेंट व बच्चों के शारीरिक विकास को ध्यान में रखते हुए आउटडोर एक्टिविटी हौपस्काच (पहल-दूज) पारंपरिक खेल का आयोजन किया गयाए बच्चों के साथ-साथ बच्चों के अभिभावकों ने भी अपने समय के खेल की इस एक्टिविटी का बहुत आनंद उठाया।

ब्लू कलर डे

बच्चों को विभिन्न रंगों से अवगत कराने के लिए ब्लू कलर डे मनाया गया जिसमे बच्चों ने ब्लू कलर ड्रेस पहन कर ब्लू कलर के बारे में जाना।

रक्षाबंधन-भाई-बहन के प्रेम का प्रतीक

दिनांक 31 जुलाई को बहन-भाई के प्रेम के प्रतीक का पर्व रक्षाबंधन पर्व भी ऑनलाइन कक्षा मे मनाया गया जिसमे बच्चों को इस त्योहार की जानकारी दी गयीए साथ ही बच्चों से राखी मेकिंग एक्टिविटी भी करवाई गयी। बच्चो ने अपनी स्क्रीन पर ही मिठाई खिला कर इस पर्व को मनाया।

फ्रूट व वेजीटेबल डिस्प्ले

31 जुलाई को बच्चों को फल व सब्ज़ी की जानकारी देने के लिए विभिन्न फल व सब्ज़ी को डिस्प्ले किया गया। बच्चों को सभी सब्जियों व फलों के नामों से अवगत कराया गया तथा फल व सब्ज़ी को खाने से स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभाव की जानकारी दी गयी। बच्चों को अपना इम्यून सिस्टम मज़बूत करने के लिए अधिकाधिक हरी पत्तेदार सब्जियाँ व फल खाने के लिए प्रेरित किया गया।

फ्रेंडशिप डे

ऑनलाइन कक्षा में 4 अगस्त को फ्रेंडशिप डे भी मनाया गया। इस दिन सभी बच्चों ने अपने दोस्तों से बात की तथा सभी की कुशलक्षेम की प्रार्थना की तथा उनके साथ डांस पार्टी का आनंद उठाया। सभी ने अपने सहपाठियों को 'स्टे होम, स्टे सेफ' संदेश भी दिया व इस कठिन समय से जल्दी बाहर निकलने व मिलने की इच्छा व्यक्त की।

वृक्षारोपण-एक पहल प्रकृति की ओर

पेड़ धरती की अमूल्य संपदा है इसी संपदा को बचाने के लिए 24 जुलाई 2020 को MPS संस्कृति बनीपार्क के प्रांगण में वृक्षारोपण का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत दीप प्रज्वलन व सरस्वती वंदना से की गयी। ECMS के सभी पदाधिकारियों द्वारा विभिन्न पौधों का रोपण किया गया। इस अवसर पर ECMS के चेयरमैन श्री प्रदीप बाहेती, महासचिव शिक्षा सचिव श्री नटवर लाल अजमेरा, सचिव श्री संजय काबरा, संस्कृति कमेटी के सदस्य श्रीमती अल्का माहेश्वरी व श्री दीपक मालपानी एम.बी.वी. सचिव श्री द्वारका दास मालू, प्रचार मंत्री श्री सतीश सारडा एवं श्रीमती प्रीति बाहेती उपस्थित थे। कार्यक्रम के अंत में संस्कृति बनीपार्क की प्रधानाध्यापिका श्रीमती भावना भाटिया ने पधारे हुए सदस्यों को धन्यवाद दिया तथा सभी सदस्यों से एक-एक पेड़ लगाने व उसकी देखभाल करने का संकल्प करवाया। इस पौधरोपण कार्यक्रम के तहत संयोजक श्री संजय काबरा ने कुल 1500 पौधों का ई.सी.एम.एस की विभिन्न शिक्षण संस्थाओं में रोपण करवाया। उन्होने सभी से यह निवेदन किया कि सभी मिलकर इन पौधों की नियमित देखभाल करें और इनको जीवित रखे।

पौधों की सार संभाल से ही प्रकृति को बचाया जा सकता है। 'एक वृक्ष-एक जीवन' का संदेश हमें सभी तक पहुंचाना ही इस कार्यक्रम का उददेश्य है।

इस तरह जुलाई माह तीज, रक्षाबंधन, वृक्षारोपण जैसे कार्यक्रमों को मनाते हुए बीता।

माहेश्वरी कॉलेज में सत्र 2020-21 के Prospectus का विमोचन तथा नवीन कोर्स B.Sc. का उद्घाटन

सत्र 2020-21 के कॉलेज Prospectus के विमोचन तथा नवीन कोर्स B.Sc. के उद्घाटन कार्यक्रम में **मुख्य अतिथि श्री कालीचरण सर्राफ**, गणमान्य अतिथि **डॉ. के. के. बजाज**, दी एज्यूकेशन कमेटी ऑफ दी माहेश्वरी समाज के अध्यक्ष **श्री प्रदीप बाहेती**, कॉलेज की प्रबंध समिति एवं समाज कार्यकर्ता उपस्थित रहे। मुख्य अतिथि श्री कालीचरण सर्राफ एवं समस्त गणमान्य अतिथियों द्वारा माहेश्वरी गर्ल्स पी.जी. कॉलेज के सत्र 2020-21 के Prospectus का विमोचन तथा नवीन कोर्स B.Sc. का शुभारम्भ किया गया।

श्री सर्राफ ने कहा कि माहेश्वरी कॉलेज अपनी स्थापना से ही बालिकाओं को एक उच्च गुणवत्ता की शिक्षा एवं कौशल देने की दिशा में अग्रसर है एवं उन्होंने प्रबन्ध समिति, प्राचार्य एवं अध्यापकों को इसको जारी रखने के लिए प्रेरित किया। आपने छात्राओं से समाज एवं देश का नाम रोशन करते हुए अपील की कि वो सदैव ज्ञान अर्जित करते हुए परम्परा एवं परिश्रम को अपना मूलमंत्र बनाकर ही तरक्की कर सकती हैं। उन्होंने छात्राओं के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए कहा कि छात्राओं को विज्ञान विषय की जानकारी देना अति आवश्यक है जिससे वे आगे चलकर देश की उन्नति में योगदान दे सकें।

सत्र 2020-21 हेतु प्रवेश प्रक्रिया प्रारम्भ

माहेश्वरी कॉलेज के द्वारा स्नातक एवं स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों में नवीन सत्र 2020-21 के लिए प्रवेश प्रक्रिया को प्रारम्भ कर दिया गया है। माहेश्वरी कॉलेज के द्वारा **सत्र 2020-21 से नवीन विषय B.Sc.** व अन्य डिप्लोमा पाठ्यक्रम भी शुरू किये जा रहे हैं। कोरोना महामारी को ध्यान में रखते हुए सभी पाठ्यक्रम को विश्वविद्यालय एवं राज्य सरकार के निर्देशानुसार संचालित किया जायेगा। सभी विषयों से संबंधित जानकारी सत्र प्रारम्भ होने से पहले कॉलेज की website पर उपलब्ध रहेगी एवं छात्राओं के उज्ज्वल भविष्य को ध्यान में रखते हुए सभी विषयों के E-notes भी कॉलेज की website पर उपलब्ध होंगे।

वृक्षारोपण अभियान

पर्यावरण संरक्षण अभियान के अंतर्गत दी एज्यूकेशन कमेटी ऑफ दी माहेश्वरी समाज द्वारा चलाये जा रहे विभिन्न कार्यक्रमों के अंतर्गत माहेश्वरी कॉलेज में सघन वृक्षारोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया। मुख्य अतिथि श्री कालीचरण सर्राफ, गणमान्य अतिथि डॉ. के.के. बजाज, दी एज्यूकेशन कमेटी ऑफ दी माहेश्वरी समाज के अध्यक्ष श्री प्रदीप बाहेती, कॉलेज की प्रबंध समिति, समाज कार्यकर्ता एवं शिक्षकगण द्वारा कॉलेज प्रांगण में पौधारोपण किया गया।

मुख्य अतिथि श्री कालीचरण सर्राफ ने वृक्षारोपण अभियान को स्मरणीय बनाने की दिशा में कॉलेज परिसर में पौधारोपण किया एवं इस अभियान को सफल बनाने हेतु सभी की सहभागिता की अपेक्षा जताई। आपने कहा कि इस अभियान को राष्ट्रीय महत्व का प्रतीक समझा जाये एवं इसे एक उत्सव के रूप में मनाया जाये तो हमारी ओर से देश को एक सच्चा समर्पण होगा।

ECMS के अध्यक्ष **श्री प्रदीप बाहेती** ने कहा कि हम सब का कर्त्तव्य है कि धरती के आभूषण वृक्षों का संरक्षण करें ताकि धरती की सुन्दरता बरकरार रह सके। पेड़-पौधों को तेजी से काटे जाने से ही प्राकृतिक आपदाओं का सामना करना पड़ रहा हैं। उन्होंने कॉलेज में आये सभी लोगो से एक-एक पेड़ लगाने और उसका संरक्षण करने की अपील की।

गणमान्य अतिथि **डॉ. के.के. बजाज** ने प्रत्येक व्यक्ति से हर वर्ष पेड़ पौधे लगाने का अनुरोध किया तथा सभी शिक्षकों एवं छात्राओं से अपील की कि कॉलेज परिसर में लगे सभी पेड़ पौधों का उनके द्वारा ध्यान रखा जाये जिससे पेड़ पौधे हमेशा हरे भरे रहें। इस दिशा में सकारात्मक प्रयास करने हेतु आपने सभी को प्रेरित किया और कहा कि इस तरह के प्रयास से ही हम प्राकृतिक विरासत को बचा सकते हैं एवं प्रकृति संरक्षण में अपना योगदान दे सकते है।

कॉलेज के मानद सचिव श्री **कैलाश चन्द अजमेरा** ने सभी आगन्तुकों को वृक्षारोपण अभियान में अधिक से अधिक संख्या में भाग लेने हेतु धन्यवाद देते हुए कहा कि अगर हम सभी मिलकर इस दिशा में सार्थक प्रयास करते रहें तो पर्यावरण संबंधी सभी मुश्किलों का शीघ्र हल ढूंढ पायेंगे।

कॉलेज के भवन मंत्री **श्री सुनील मालपानी** ने कहा कि वर्तमान में पूरे भारत में जनसंख्या तेजी से बढी है इसके चलते प्रदूषण का मानक भी खतरनाक स्तर पर पहुँच गया है। बढते प्रदूषण और वायुमंडल के खतरे को देखते हुए हर मनुष्य को वृक्षारोपण करना नितांत आवश्यक है।

माहेश्वरी गर्ल्स हॉस्टल

माहेश्वरी गर्ल्स हॉस्टल में माहेश्वरी कॉलेज में अध्ययनरत छात्रायें, शहर के विभिन्न माहेश्वरी विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रायें, अन्य विद्यालयों की छात्रायें एवं अन्य महाविद्यालयों की छात्राओं के लिए रहने की विशेष सुविधा उपलब्ध है। हॉस्टल संयोजक **श्री सांवरमल परवाल** ने बताया कि **वर्तमान सत्र 2020-21 हेतु निर्णय लिया गया है कि हॉस्टल में एक छात्रा को एक रूम ही आवंटित किया जायेगा।** हॉस्टल में छात्राओं को घर से बाहर घर जैसा वातावरण एवं पौष्टिक भोजन और अन्य सभी सुविधायें बहुत ही न्यूनतम शुल्क में उपलब्ध करवाई जा रहीं है। हॉस्टल में छात्राओं के लिये विभिन्न प्रकार की शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों का आयोजन भी किया जाता है। हॉस्टल का संचालन माहेश्वरी कॉलेज द्वारा किया जाता है।

उपलब्धियाँ

12वीं बोर्ड का परीक्षा परिणाम शत प्रतिशत

सीबीएसई ने 13 जुलाई 2020 को 12वीं बोर्ड परीक्षा का परिणाम घोषित किया जिसमें एमपीएस जवाहर नगर का परिणाम विज्ञान व वाणिज्य दोनों ही संकायों में शत-प्रतिशत रहा। विद्यालय के विज्ञान संकाय में ऋषभ माहेश्वरी ने 97.2 प्रतिशत के साथ प्रथम स्थान, 96.4 प्रतिशत अंकों के साथ **तोषित विजयवर्गीय** ने द्वितीय स्थान तथा **देवरूप साहा** ने 96.2 प्रतिशतांकों के साथ तृतीय स्थान प्राप्त किया। वाणिज्य संकाय में छात्र **परंतप जाजू** ने 97 प्रतिशत अंकों के साथ प्रथम स्थान प्राप्त किया, **दिव्यांश माहेश्वरी** ने 96.4 प्रतिशत अंक प्राप्त करके द्वितीय स्थान तथा सारथी सैनी ने 95.4 प्रतिशतांकों के साथ तृतीय वरीयता प्राप्त की। विद्यालय चेयरमान श्री प्रदीप बाहेती, शिक्षा महासचिव श्री नटवरलाल अजमेरा, मानद सचिव श्री कमल सोमानी,भवन मंत्री श्री सीए संजय बांगड व प्राचार्य श्री अशोक वैद ने सभी वरीयता प्राप्त छात्रों को बधाई व उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएँ दीं ।

सीबीएसई द्वारा दसवीं के घोषित परिणाम में विद्यालय ने फहराया परचम

15 जुलाई को सी.बी.एस.ई. द्वारा कक्षा दसवीं के परिणाम घोषित किए गए, जिसमें माहेश्वरी पब्लिक स्कूल, जवाहर नगर, जयपुर के प्रतिभाशाली छात्र **कार्तिक लड्ढा** ने 99.17 प्रतिशत अंक प्राप्त कर नए कीर्तिमान स्थापित किए। द्वितीय स्थान पर रहे **संयम जैन** ने 98.50 प्रतिशत अंक प्राप्त किए तथा **अंश ठोलिया** ने 98 प्रतिशत अंक के साथ तृतीय स्थान प्राप्त किया। विद्यालय की 10वीं कक्षा का परिणाम शत प्रतिशत रहा।

इस अवसर पर दी एज्यूकेशन कमेटी ऑफद माहेश्वरी समाज के अध्यक्ष श्री प्रदीप बाहेती, शिक्षा महासचिव श्री नटवरलाल अजमेरा, विद्यालय के सचिव श्री कमल सोमानी व भवन मंत्री श्री सीए संजय बांगड तथा प्राचार्य श्री अशोक वैद ने बधाइयाँ देते हुए वरीयता प्राप्त छात्रों को शुभकामनाएँ प्रेषित कीं।

विद्यालय का 43वाँ स्थापना दिवस

16 जुलाई को माहेश्वरी पब्लिक स्कूल, जवाहर नगर का 43वाँ स्थापना दिवस मनाया गया। इसका पूरा कार्यक्रम ऑनलाइन यू-स्ट्रीम व फेसबुक पर लाइव

प्रसारित किया गया। इस अवसर पर दी एज्यूकेशन कमेटी ऑव् दी माहेश्वरी समाज के अध्यक्ष श्री प्रदीप बाहेती ने अपने भाषण के माध्यम से शुभकामनाएँ देते हुए छात्रों को संस्था के मूल उद्देश्यों के अनुरूप चहुंमुखी विकास हेतु प्रेरित किया। शिक्षा समिति के महासचिव श्री नटवरलाल अजमेरा ने विद्यालय की लगातार होने वाली बेमिसाल प्रगति के लिए छात्रों की मेहनत, शिक्षकों की लगन व निष्ठा, अभिभावकों का संस्था के प्रति विश्वास व शिक्षा समिति के उत्तम प्रयासों और प्राचार्य के प्रशासन की सराहना की। विद्यालय के सचिव श्री कमल सोमानी ने छात्रों को संबोधित करते हुए कहा कि संस्कारों को न भूलते हुए युगानुरूप हर परिस्थिति में शिक्षा प्राप्त करते रहना चाहिए। भवनमंत्री श्री सीए संजय बांगड ने इस अवसर पर सभी को शुभकामनाएं प्रेषित कीं। विद्यालय के प्राचार्य श्री अशोक वैद ने विद्यालय-प्रगति की रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुए कक्षा 10वीं व 12वीं के सर्वोत्तम परिणाम के लिए सभी छात्रों को व वरीयता प्राप्त छात्रों को बधाइयाँ व शुभकामनाएँ दीं ।

इस अवसर पर विद्यालय के होनहार छात्रों ने ऑनलाइन कई आकर्षक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए। जिनमें भारतीय-पाश्चात्य नृत्य, संगीत व वाद्य-वृंद आदि विशेष थे । छात्रों ने विद्यालय के प्रति अपार प्रेम का परिचय देते हुए महामारी से पूर्व के दिनों की विद्यालय-गतिविधियों को याद किया। राष्ट्रगान के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

विद्यालय में पौधरोपण दिवस का आयोजन

18 जुलाई को माहेश्वरी पब्लिक स्कूल, जवाहर नगर स्थित 'महेश उद्यान' में पौधरोपण दिवस के उपलक्ष्य में पौधारोपण किया गया। धरती माँ को धानी चूनर पहनाने के लिए कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में नगर निगम, जयपुर के डिप्टी कमिश्नर श्री नवीन भारद्वाज द्वारा पौधारोपण किया गया। द एजूकेशन कमेटी ऑव माहेश्वरी समाज के अध्यक्ष श्री प्रदीप बाहेती ने अपने प्रेरक उद्बोधन में कहा कि छात्रों को विषय की शिक्षा के साथ-साथ पर्यावरण के बारे में भी जागरूक करना होगा जिससे प्रकृति द्वारा प्रदत्त निस्वार्थ भाव से वे प्रेरित हों और मानव कल्याण की ओर अग्रसर हों।

महासचिव शिक्षा श्री नटवर लाल अजमेरा ने भी जीवन में प्रकृति के महत्त्व पर प्रकाश डाला। विद्यालय के सचिव श्री कमल सोमानी ने पौधरोपण करते हुए विद्यालय को चहूँ ओर से हरा-भरा बनाए रखने का संकल्प लिया जिससे छात्रों को शुद्ध वायु मिल सके। भवन मंत्री श्री सी.ए. संजय बांगड़ द्वारा भी प्रकृति के प्रति शिव संकल्प लिया गया। इस कार्यक्रम के संयोजक श्री संजय काबरा ने पौधरोपण करते हुए पर्यावरण को जीवन का आवश्यक अंग बताया। अंत में विद्यालय के प्राचार्य श्री अशोक वैद ने पौधरोपण करते हुए देश की भावी पीढ़ी को पर्यावरण का संदेश दिया।

'मंथन करो ना थीम' पर आधारित 'नो स्कूल नो फीस' विषय पर क्रेडेंट टीवी द्वारा आयोजित परिचर्चा में विद्यालय के प्राचार्य श्री अशोक वैद ने तार्किक धरातल पर इस मुहिम को अनुचित ठहराया ।

एक्स्ट्रा मार्क्स के तत्वावधान में ऑनलाइन शिक्षण में आने वाली चुनौतियाँ तथा समस्या-समाधान विषय पर आयोजित एक वेबिनार में विद्यालय के प्राचार्य श्री अशोक वैद ने प्रतिनिधित्व करते हुए मुख्य वक्ता के तौर पर विचार प्रस्तुत किए। उपर्युक्त दोनों वेबिनार्स में विद्यालय के सभी शिक्षकों ने बतौर श्रोता भाग लेकर लाभ ग्रहण किया।

सजाया पवित्र बंधन को भावों के आभूषण से

मिट्टी की सोंधी खुशबू -सा जो इकलौता है,
ईश्वर के अहसास -सा जो सिर्फ दिल में होता है,
भाई-बहन का रिश्ता दुनिया में सबसे अनोखा होता है।

इस पवित्र रिश्ते को शब्दों, चित्रों और रेशमी धागों मे पिरोया एमजीपीएस की छात्राओं ने। रक्षाबंधन के पावन पर्व के उपलक्ष में कक्षा 6-8 की छात्राओं के लिए विभिन्न प्रतियोगोगिताओं का आयोजन ऑनलाइन किया गया।

कक्षा 6 की छात्राओं ने रेशमी धागों में अपने भावों को पिरोकर, कक्षा 7 की छात्राओं ने भाई के लिए कार्ड बनाकर और कक्षा 8 की छात्राओं ने स्वयं के शब्दों को कविता का जामा पहनाकर इस त्योहार को दिल से मनाया।

कभी न झुकने वाले योद्धाओं को शत-शत नमन

जो मिट जाते हैं वतन की खातिर,
जो जर्रे-जर्रे में समा जाते हैं फिर लहराने की खातिर,
वो सिर्फ और सिर्फ धरती माँ के लाल, वीर ही होते हैं।

26 जुलाई को कारगिल विजय दिवस के अवसर पर इन्हीं वीर सिपाहियों को अपने श्रद्धा सुमन अर्पित किए एमजीपीएस ने वीडियो के माध्यम से, इस संदेश के साथ कि हम चाहे सीमा प्रहरी ना बनें, पर खुद को सच्चा हिंदुस्तानी साबित करने का कोई अवसर ना भूलें।

शहादत को सलाम

'इतिहास के पन्नों में जो सुनहरी इबारत है,
वो लाल लहू के रंग से चमकती है।'

31 जुलाई को शहीद उद्धम सिंह को उनके अप्रतिम बलिदान के लिए याद किया जाता है। इस अवसर पर एमजीपीएस के अध्यापक श्री सुजीत ने एक वीडियो के माध्यम से अपनी भावनाएं व्यक्त की और यह संदेश भी दिया कि हर कोई उद्धम सिंह नहीं बन सकता पर प्रत्येक व्यक्ति में उनके जैसा जज़्बा होता जरूर है, बस उसे जगा लीजिए और अपने चमकते लहू से एक नई इबारत गढ़ दीजिए।

जीते हैं चल
ना बारूद के ढेर से दबेगी,
ना धुएँ के गुबार में उड़ेगी
ना कटेगी तलवार से
ये तो जिंदगी है, मुस्कुराएगी हर हाल में।।

प्रत्येक वर्ष 6 अगस्त को हिरोशिमा दिवस यही संदेश देता है और बुद्ध फिर मुसकुराते हैं। शांति के इसी संदेश को वीडियो के माध्यम से एमजीपीएस के अध्यापक वृंद ने हिरोशिमा दिवस पर प्रस्तुत किया और आगाह किया कि जब कभी हम अपनी स्वार्थ की सीमाओं को तोड़ेंगे, उस दिन पूरी मानव जाति खून के आँसू बहाएगी। बुद्ध तो तभी मुस्कुराएंगे जब मानवता जन्म लेगी।

प्रकृति-प्रतिदान में निभाई जिम्मेदारी

शिक्षा सिखाती है समाज, प्रकृति को प्रतिदान करना और इस हेतु अपनी महती जिम्मेदारी का निर्वहन करने आगे आया माहेश्वरी गर्ल्स पब्लिक स्कूल।

29 जुलाई को विद्यालय के प्रांगण में धरती की धानी चुनर को हरा- भरा करने के संकल्प को पूरा करने के लिए वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में समाज के कर्मठ कार्यकर्ता, प्रसिद्ध गोसेवक श्री रामगोपाल मांधना उपस्थित हुए। इस अवसर पर समाज अध्यक्ष श्री प्रदीप बाहेती, ECMS के जनरल सेक्रेटरी श्री नटवर लाल अजमेरा, कोषाध्यक्ष CA नटवर लाल सारडा, विद्यालय के मानद सचिव श्री मुरारी लाल बिड़ला, एमजीपीएस के भवन मंत्री श्री कमलेश लड्ढा, विद्यालय की प्रधानाचार्या डॉ. सुनीता वशिष्ठ व समाज के गणमान्य सदस्य उपस्थित थे।

इस अवसर पर विद्यालय परिसर में वृक्षारोपण कर इस जीवनदायिनी धरा को हरा-भरा बनाने के संकल्प को पूरा करने का आगाज़ किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत दीप प्रज्ज्वल व अतिथियों के सम्मान से हुई। विद्यालय के मानद सचिव श्री मुरारी लाल बिड़ला ने कार्यक्रम के मुख्य अतिथि का परिचय सबसे करवाया। इस अवसर पर समाज अध्यक्ष श्री प्रदीप बाहेती ने मनुष्य के प्रतिदान करने के गुण का स्मरण कराते हुए आगे बढ़कर नए रास्तों पर नए आयाम गढ़ने का आह्वान किया जो नई पीढ़ी को नए रास्ते दिखा सके। विद्यालय की प्रधानाचार्या डॉ. सुनीता वशिष्ठ जी ने धन्यवाद ज्ञापित करते हुए यह विश्वास दिलाया कि जो जिम्मेदारी हमारे दिशा-निर्देशकों ने वर्तमान पीढ़ी को बहुत विश्वास से सौंपी है, उसे न सिर्फ पूरा करेंगे बल्कि भविष्य को सुनहरा बनाने का जो संकल्प आज लिया है उसे नई पीढ़ी के माध्यम से जीवंत भी करेंगे। कार्यक्रम के अंत में पधारे हुए अतिथियों को हरे सोने के प्रतीक के रूप में एक-एक पौधा भेंट स्वरूप प्रदान किया गया।

विश्व जनसंख्या दिवस

11 जुलाई 2020 को विश्व जनसंख्या दिवस के अवसर पर संचार साधन के माध्यम से विद्यार्थियों हेतु जनसंख्या वृद्धि का भारत की प्रगति पर असर आधारित प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर सभी कक्षाओं के विद्यार्थियों ने बढ़ती जनसंख्या एवं घटते संसाधन व बढ़ती जनसंख्या तथा घटता जलस्तर विषयों पर विभिन्न गतिविधियों (चार्ट बनाकर, कम्प्यूटर पर पी.पी.टी तथा वीडियो इत्यादि) के माध्यम से देश की बढ़ती जनसंख्या के दुष्प्रभावों से अवगत कराया ।

युवा कौशल दिवस

15 जुलाई 2020 को विद्यार्थियों हेतु ऑनलाइन युवा कौशल दिवस (Youth Skill Day) मनाया गया। इस कार्यक्रम के अंतर्गत 6 C (Creativity, Critical Thinking, Collaboration, Competence, Communication, Culture) कौशल आधारित गतिविधियों का सभी कक्षों में आनलाइन आयोजन किया गया। सभी शिक्षकों ने अपनी कक्षाओं में बच्चों को देश और समाज के उत्थान में युवाओं की भूमिका के बारे में वाचन द्वारा बताया।

''तुलसी व प्रेमचन्द जयंती पर दी गई पुस्तकों से जुड़ने की सीख''

विद्यालय में 31 जुलाई को भक्तिकाल की राम भक्ति शाखा के मूर्धन्य कवि गोस्वामी तुलसीदास जी व कथा सम्राट मुंशी प्रेमचन्द की जयन्ती मनाई गई । इसके तहत सभी ऑनलाईन कक्षाओं में शिक्षकों ने रामायणाधारित प्रसंग व तुलसी दास जी के प्रेरक प्रसंग सुनाए तथा विद्यार्थियों से चौपाई गायन करवाकर उनका मनुष्य जीवन में महत्त्व समझाया। सीनियर कक्षाओं के विद्यार्थियों द्वारा मुंशी प्रेमचन्द द्वारा रचित प्रसिद्ध कहानियों को सारांश सुना कर उनका महत्त्व बताया। साथ ही कक्षा 10 के विद्यार्थियों ने प्रेमचन्द जी के जीवन पर आधारित पी.पी.टी. बनाकर संचार साधनों के माध्यम से अपने कक्षा के ग्रुप पर प्रेषित की गई ।

सूखी धरती करे पुकार, पेड़ लगाकर करो श्रृंगार

दी एज्यूकेशन कमेटी ऑव् दी माहेश्वरी समाज (सोसायटी), जयपुर के द्वारा जयपुर शहर में वृक्षारोपण कार्यक्रम सप्ताह के अन्तर्गत 19 जुलाई 2020 प्रताप नगर क्षेत्र में माहेश्वरी पब्लिक स्कूल, प्रताप नगर प्रांगण तथा आस पास के क्षेत्र में आमंत्रित अतिथिजन की उपस्थिति में वृहद् वृक्षारोपण अभियान सकारात्मक संदेश के साथ सम्पन्न हुआ ।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि विधायक श्री कालीचरण सर्राफ, विशिष्ट अतिथि रूप में पधारे पूर्व मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ. के.के.बजाज, माहेश्वरी समाज के अध्यक्ष श्री प्रदीप बाहेती, उपाध्यक्ष श्री रमेश सोमानी, महासचिव शिक्षा श्री नटवरलाल अजमेरा, शिक्षा सचिव श्री मुकेश राठी, भवन-मंत्री श्री अशोक अजमेरा कार्यक्रम के संयोजक श्री संजय काबरा, माहेश्वरी समाज, जयपुर तथा विद्यालय प्रबंध समिति पदाधिकारी, सदस्यगण, विद्यालय की प्राचार्या श्रीमती रीटा भार्गव, स्टॉफ सदस्यगण ने विद्यालय व कॉलेज परिवार तथा प्रताप नगर क्षेत्र में पौधारोपण कर प्रकृति संरक्षण का संदेश दिया ।

इस अवसर पर अतिथिगण ने अपने प्रेरक उद्बोधन से प्रकृति-संरक्षण का संदेश दिया व विद्यालय तथा कॉलेज के शिक्षकों ने शपथ-पत्र भरकर प्रतिवर्ष अपने जन्मदिन पर एक पेड़ लगाने व उसके बड़े होने तक उसमें खाद-पानी डालने का संकल्प लिया। आमंत्रित मुख्य अतिथि श्री कालीचरण सर्राफ और विशिष्ट अतिथि श्री के.के. बजाज ने वृक्षारोपण जैसे विशेष प्रयास की प्रशंसा करते हुए इस प्रकार के प्रकृति-हितैषी कार्यक्रमों में सक्रिय बने रहने की प्रेरणा दी ।

समाज अध्यक्ष श्री प्रदीप बाहेती ने आए हुए अतिथियों का परिचय करवाते हुए बताया कि श्री माहेश्वरी समाज, जयपुर व इसकी शिक्षण संस्थाएँ प्रतिवर्ष वृक्षारोपण जैसी अनेकानेक गतिविधियों का आयोजन कर एक नई सोच व सकारात्मक परिवर्तन की पताका लहराने का कार्य कर रहे हैं ।

विद्यालय के सचिव श्री मुकेश राठी ने अपने उद्बोधन में कहा कि विद्यालय में आयोजित ऐसे कार्यक्रम राष्ट्र निर्माण में विकास का आधार हैं साथ ही राष्ट्र-विकास हेतु वृक्ष लगाने पर जोर दिया । कार्यक्रम की समाप्ति पर भवन मंत्री श्री अशोक अजमेरा ने आमंत्रित अतिथिजन के प्रति आभार व्यक्त करते हुए आगे भी ऐसी गतिविधियों में सक्रिय बने रहने का आश्वासन दिया ।

गतिविधियाँ

कोरोना वॉरियर्स (डॉक्टर्स) को दिया सम्मान

विद्यार्थियों ने डॉक्टर्स डे के अवसर पर कोरोना को हराने की जंग में जुटे बहादुर योद्धाओं, डॉक्टर्स को सम्मान दिया। यह दिन उन सभी डॉक्टर्स को समर्पित किया गया जो जिंदगी और मौत के बीच जूझ रहे इंसानों का न सिर्फ इलाज करते हैं, बल्कि उन्हें नया जीवन भी देते हैं। विद्यार्थियों ने सामाजिक दूरी के नियमों का पालन करते हुए डॉक्टर्स से बातचीत की व अपनी शंकाओं का समाधान प्राप्त किया। विद्यार्थियों ने कविता, स्लोगन व पेंटिंग के माध्यम से जीवनरक्षक डॉक्टर्स के लिए अपने उद्गार व्यक्त किए।

Dr. Abha Gupta
Homeopathic , Naturopathic and cancer specialist
Manav Hitkari Sangh hospital

गुरुजनों को नमन कर मनाई गुरु पूर्णिमा

विद्यार्थियों ने महर्षि वेद व्यास के जन्मोत्सव गुरु पूर्णिमा दिवस पर विभिन्न ऑनलाइन कार्यक्रम प्रस्तुत किए। गुरु कुम्हार शिष कुम्भ हैं, गुरु मेरी पूजा तथा गुरु गोविंद दोउ खड़े जैसे दोहों तथा मनमोहक गुरु वंदना, सुमधुर गुरु अष्टोत्रम मंत्र व आकर्षक पेंटिंग के माध्यम से अपनी भावनाएँ व्यक्त की। प्राचार्या श्रीमती अर्चना सिंह ने कहा कि गुरु अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाने का कार्य करते है। गुरु के आशीर्वाद से ही जीवन में सफलता मिलती है अत: हमें गुरुजनों का सम्मान करना चाहिए।

पेड़ लगाओ, स्वास्थ्य बचाओ

विद्यालय में वर्षा ऋतु के आगमन के साथ ही वृक्षारोपण की परिपाटी को आगे बढ़ाया गया। पर्यावरण सुरक्षा के लिए संकल्पित इस कार्यक्रम में अतिथि डॉ. रवि मोदानी, श्री मनोज मुद्गल, ई.सी.एम.एस अध्यक्ष श्री प्रदीप बाहेती, उपाध्यक्ष श्री रमेश सोमानी, विद्यालय सचिव श्री निर्मल दरगड़, वृक्षारोपण संयोजक श्री संजय काबरा व ई.सी.एम.एस के अनेक गणमान्य पदाधिकारियों ने भाग लिया। वृक्षारोपण कार्यक्रम के अंतर्गत नीम, शीशम, अशोक, गुलमोहर आदि अनेक वृक्ष लगाए गए। संगीत विभाग ने 'वृक्ष लगाएँ हम' सुमधुर गीत प्रस्तुत किया।

हरियाली तीज का स्वागत

विद्यार्थियों ने पारंपरिक वेशभूषा पहन कर तीज मनाने का कारण व इसकी विधि प्रस्तुत की तथा कविताएँ सुनाईं। विद्यार्थियों ने रंगोली व मेंहदी गतिविधि में भाग लिया। छात्रा भव्या मंत्री ने *''सावन लाग्यो बादलो सा''* गीत पर मनमोहक नृत्य प्रस्तुति दी।

कारगिल विजय दिवस

विद्यार्थियों ने पुलवामा में शहीद हुए वीर जवानों को अपने श्रद्धा सुमन अर्पित किए। विद्यार्थी कार्तिकेय शर्मा ने 'देश हमें देता हैं सब कुछ' तथा साहिल माथुर ने 'वो कारगिल की धरती पर'' भावपूर्ण कविता तथा विद्यार्थी शिवेन्द्र सिंह ने ''एशिया के हम परिंदे'' सुमधुर गीत प्रस्तुत किया। N.C.C. कैडेट्स नेहल माहेश्वरी व महिका सरीन ने प्रतिज्ञा लेते हुए देशभक्ति के अपने संकल्प को दोहराया। प्राचार्या श्रीमती अर्चना सिंह ने शहीदों को नमन करते हुए अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

वृक्षारोपण कार्यक्रम

पर्यावरण को बचाना है तो वृक्ष लगाना है,
विश्व को हरा-भरा बनाना है।

इसी परंपरा का निर्वाह करते हुए हर वर्ष की भाँति इस वर्ष भी दिनांक 25 जुलाई, 2020 को विद्यालय में वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। ई. सी. एम. एस. की सभी शिक्षण संस्थाओं में वृक्षारोपण कार्यक्रम के संयोजक श्री संजय काबरा (सचिव एम. पी. एस. संस्कृति) रहे। वर्षा ऋतु का आगमन नए पौधों के विकास के लिए सर्वोत्तम होता है, इसी बात को ध्यान में रखते हुए यह कार्यक्रम रखा गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में ए. सी. पी., श्री हरिशंकर शर्मा (झोटवाड़ा) तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में माँचवा सरपंच श्री जगदीश प्रसाद विराजमान रहे। कार्यक्रम के आरंभ में अतिथियों का तिलक लगाकर स्वागत किया गया तथा स्मृति चिह्न प्रदान किए गए। शिक्षकों द्वारा सुंदर गीत तथा कविता की प्रस्तुति दी गई। इस अवसर पर अध्यक्ष श्री प्रदीप जी बाहेती, महाशिक्षा सचिव श्री नटवरलाल अजमेरा, मानद् सचिव श्री मनोज कुमार बिड़ला, कार्यक्रम के संयोजक तथा एम.पी.एस. संस्कृति सचिव श्री संजय काबरा, प्रधानाचार्य श्री ओ. पी. गुप्ता तथा मैनेजिंग कमेटी के सदस्य उपस्थित रहे। सभी ने विद्यालय प्रांगण में नए पौधों का रोपण कर पर्यावरण के विकास में योगदान दिया। श्री संजय काबरा (सचिव एम. पी. एस. संस्कृति) के संयोजन व दिशा-निर्देश में यह कार्यक्रम सफलतापूर्वक संपन्न हुआ।

रक्षाबंधन पर्व

दिनांक 3 अगस्त, 2020 को रक्षाबंधन का त्योहार संपूर्ण भारतवर्ष में धूमधाम से मनाया गया। विद्यालय ने भी इस पर्व में अपनी भागीदारी निभाई। वर्तमान परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए विद्यार्थियों को घर पर रहते हुए ही अपनी कला का प्रदर्शन करने का निर्देश दिया गया। विद्यार्थियों के लिए राखी मेकिंग, थाली डेकोरेशन आदि गतिविधियों का आयोजन किया गया। शिक्षकों द्वारा वृक्षों को राखी बाँधकर अनकी रक्षा करने का प्रण लिया गया। मानद् सचिव श्री मनोज कुमार बिड़ला तथा प्रधानाचार्य श्री ओ. पी. गुप्ता ने सभी के इस बेहतरीन प्रयास की सराहना की।

माहेश्वरी पब्लिक स्कूल, बगरू

डॉक्टर्स-डे

एम.पी.एस संस्कृति अजमेर रोड में 01 जुलाई 2020 को डॉक्टर्स-डे बड़े ही धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर ऑनलाइन कक्षा में सरकारी चिकित्सालय के वरिष्ठ चिकित्सक को आमंत्रित किया गया। इन्होंने विद्यार्थियों को 'कोविड-19' से संबंधित जानकारी साझा की तथा इससे बचाव के लिए कई महत्त्वपूर्ण बातें बताई। जैसे- हाथों को बार-बार मुँह व नाक पर ना लगाए। घर से बाहर न निकलें, घर में आने वाले बाहरी व्यक्ति से दूरी बनाकर रखें। बाहर से आई हुई चीजों को बिना साफ किए प्रयोग में ना लें। हाथों को बार-बार साबुन से धोएं व मुँह पर मास्क व सेनेटाइज़र के प्रयोग की आदत डालें। विद्यार्थियों ने चिकित्सक की बातों को ध्यानपूर्वक सुनकर वीडियो व कार्ड बनाकर सधन्यवाद उनका आभार प्रकट किया।

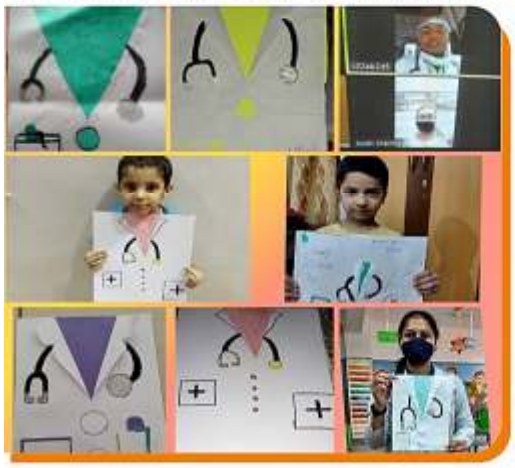

तीज महोत्सव

23 जुलाई 2020 को एम.पी.एस संस्कृति अजमेर रोड में सावन मास का प्रसिद्ध त्योहार तीज को ऑनलाइन कक्षा के माध्यम से बड़े ही धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर बच्चों ने पारंपरिक परिधान पहनकर झूला झूला तथा अपनी शिक्षिकाओं से तीज महोत्सव की जानकारी प्राप्त की। नन्हे-मुन्ने बाल-गोपालों ने घेवर खाते हुए राजस्थानी लोकगीतों पर नृत्य का आनंद उठाया तथा कक्षा वॉट्सअप समूह पर वीडियो साझा किए।

विद्यार्थियों की क्रिएटिविटी

पाँच के लिए फैन्सी-ड्रेस प्रतियोगिता, कक्षा छह से आठ के लिए बुकमार्क गतिविधि व कक्षा नवीं से बारहवीं तक विद्यार्थियों के लिए अंग्रेजी भाषा में निबंध-रचना प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। ऑनलाइन कक्षाओं के माध्यम से इन गतिविधियों में विद्यार्थियों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया।

तरु-छाया दिवस

26 जुलाई को माहेश्वरी पब्लिक स्कूल, अजमेर रोड़, बगरू में वृक्षारोपण कार्यक्रम 'तरु छाया दिवस' का आयोजन किया गया। इस अवसर पर कार्यक्रम के मुख्य अतिथि बगरु हाथ छपाई के लिए पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित श्री रामकिशोर डेरेवाला, प्रसिद्ध रत्न व्यवसायी व सजग समाजसेवी विशिष्ट अतिथि श्री राजेश जी जेथलिया, 'दी एज्यूकेशन कमेटी ऑव दी माहेश्वरी समाज' के अध्यक्ष श्री प्रदीप बाहेती, महासचिव शिक्षा श्री नटवर लाल अजमेरा, मानद् सचिव श्री श्यामसुंदर तोतला, भवन सचिव श्री सुरेंद्र काबरा, सचिव, एमपीएस संस्कृति, अजमेर रोड- श्रीमान संजय काबरा एवं भवन सचिव, एमपीएस संस्कृति, अजमेर रोड- श्री गिरधर झंवर आदि सभी पदाधिकारीगण उपस्थित थे। इस अवसर पर आगंतुक अतिथियों ने विद्यालय स्टॉफ व शिक्षकों के द्वारा वृक्षों पर बनाए गए भित्तिचित्रों को देखकर मुक्तकंठ से प्रशंसा की। शिक्षकवृंद के द्वारा भी वन्य संपदा के संरक्षण पर आधारित गीत, कविताएँ व नृत्य की प्रस्तुतियाँ दी गई तथा तत्पश्चात् विद्यालय के विशाल मैदान में वृक्षारोपण कर ईश्वर के अनुपम उपहार वृक्षों के पोषण व संरक्षण का सजग संदेश दिया।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि श्री रामकिशोर डेरेवाला एवं विशिष्ट अतिथि श्री राजेश जेथलिया ने अपने आशीर्वचनों में श्रोताओं को स्वच्छ वातावरण बनाने, वैदिक संस्कृति में वृक्षों को पूजने की परंपरा तथा वृक्षारोपण का महत्त्व बताया। अध्यक्ष श्री प्रदीप बाहेती ने आगन्तुक अतिथियों का स्वागत उद्बोधन करते हुए देश, समाज, परिवार तथा मानव मात्र के प्रति दया की भावना रखने तथा वन्य संपदा के पोषण व संरक्षण करने का संदेश दिया। समाज के अन्य पदाधिकारियों द्वारा भी आगन्तुक अतिथियों का स्वागत किया गया और आशीर्वाद वचन में वृक्षारोपण व वन संरक्षण की महत्ता को जन-जन तक पहुँचाने का संदेश दिया। इस शुभावसर पर विद्यार्थियों ने भी अपनी आँगन वाटिका में पेड़ लगाए व वृक्षों के महत्त्व पर अपने विचार प्रकट

पौधारोपण कार्यक्रम का आयोजन

विद्यालय परिसर में 17 जुलाई, 2020 को पर्यावरण संरक्षण व वन महोत्सव का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में ई.सी.एम.एस. के पदाधिकारी व विद्यालय प्रबंध समिति के सदस्यगण व विद्यालय के कर्मचारियों ने पौधों का रोपण कर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया। पौधारोपण कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री राजेन्द्र कुमार न्याती का विद्यालय प्रबंध समिति के पदाधिकारीगण एवं विद्यालय के कार्यवाहक प्रधानाचार्य द्वारा स्वागत सत्कार किया गया। तत्पश्चात् मुख्य अतिथि श्री राजेन्द्र कुमार न्याती, ई.सी.एम.एस. के अध्यक्ष श्री प्रदीप बाहेती, उपाध्यक्ष श्री रमेश कुमार सोमानी,

कार्यक्रम के संयोजक श्री संजय काबरा, राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी के प्रदेश प्रवक्ता श्री मनोज मुद्गल, मानद् सचिव श्री अशोक कुमार फलोड़, श्री निर्मल दरगड़ (सचिव MPS Int.), श्री सतीश सारड़ा, श्री गिरधर झंवर, श्री आशीष मंत्री (अध्यक्ष, नवयुवक मंडल) तथा कार्यवाहक प्राचार्य श्री अजय कुमार गुप्ता ने सरस्वती माँ की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्वलन कर कार्यक्रम का श्रीगणेश किया। मुख्य अतिथि, ई.सी.एम.एस. के पदाधिकारीगण एवं अन्य पधारे हुए महानुभावों ने पौधारोपण किया।

ई.सी.एम.एस. के अध्यक्ष श्री प्रदीप बाहेती ने अपने उद्बोधन में पर्यावरण संरक्षण एवं जल संरक्षण का समन्वय बताते हुए पौधारोपण के महत्त्व को स्पष्ट किया। विद्यालय के समस्त कर्मचारियों ने पौधे लगाकर पर्यावरण बचाने का संकल्प लिया। कार्यक्रम मुख्य अतिथि श्री राजेन्द्र कुमार न्याती को अध्यक्ष श्री प्रदीप बाहेती व ई.सी.एम.एस. एवं विद्यालय प्रबन्ध समिति के पदाधिकारी एवं सदस्यगण द्वारा स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया गया। अन्त में विद्यालय के मानद् सचिव श्री अशोक कुमार फलोड ने पधारे हुए अतिथियों का आभार प्रकट करते हुए धन्यवाद ज्ञापित किया।

बोर्ड परीक्षा परिणाम 2020 में MHS ने फिर फहराया सफलता का परचम

10 वीं बोर्ड परीक्षा परिणाम

MHS के विद्यार्थियों ने 10वीं बोर्ड परीक्षा परिणाम 2020 में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। 10वीं में कुल 303 विद्यार्थी उपस्थित हुए। जिनमें से 187 छात्रों ने प्रथम श्रेणी तथा 91 छात्रों ने द्वितीय श्रेणी प्राप्त की।

विद्यालय के कार्यवाहक प्राचार्य श्री अजय कुमार गुप्ता ने बताया कि विद्यालय के छात्र हर्षित शर्मा ने 95.5%, अशोक ने 95%, राज शर्मा ने 93.33%, नमो मीणा ने 93.33%, गौरांग जैन ने 93.17%, विकास मीणा ने 93.17%, अब्दुल समीर अंसारी ने 91.67%, प्रणय भौमिक ने 90.67%, विकास कुमार मीणा ने 90.67%, रितिन पलसानिया ने 90.33%, विद्यानंद महतो ने 90.33%, सागर शर्मा ने 89.83%, तथा महक कँवर ने 89.50%, अंशुल शर्मा ने 89.50%, दीपांशु गुप्ता ने 89.17%, मोहित त्यागी ने 89.17%, अंक प्राप्त करके विद्यालय को गौरवान्वित किया। विद्यार्थियों ने इसका श्रेय विद्यालय प्रबंधन, प्राचार्य एवं शिक्षकों को दिया। विद्यालय के कार्यवाहक प्राचार्य श्री अजय कुमार गुप्ता द्वारा श्रेष्ठ परिणाम प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को व उनके अभिभावकों को माल्यार्पण कर सम्मानित किया गया।

विद्यालय के मानद् सचिव श्री अशोक कुमार फलोड़ ने कहा कि एम.एच.एस. के विद्यार्थियों ने एक बार पुन: यह साबित कर दिखाया है कि एम.एच.एस. शहर का सबसे प्रसिद्ध शिक्षण संस्थान होने के साथ-साथ श्रेष्ठ परीक्षा परिणाम देने वाला विद्यालय है।

सर्वश्रेष्ठ परीक्षा परिणाम प्राप्त करने पर छात्रों को किया सम्मानित

विद्यालय में 10वीं बोर्ड परीक्षा परिणाम में स्कूल स्तर पर सर्वश्रेष्ठ अंक अर्जित करने वाले छात्र हर्षित शर्मा (95.5%) पुत्र श्री अशोक कुमार शर्मा एवं छात्र अशोक (95%) पुत्र श्रीमोहन को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया तथा दोनों छात्रों को दी एजूकेशन कमेटी ऑव् दी माहेश्वरी समाज (सोसायटी), जयपुर के आदेशानुसार शिक्षण शुल्क की शत प्रतिशत छात्रवृत्ति प्रदान कर प्रोत्साहित किया गया।

माहेश्वरी गर्ल्स सी. सैकण्डरी स्कूल, चौड़ा रास्ता

Badge Ceremony का आयोजन

नेतृत्व जहाँ अपार शक्ति से परिपूर्ण होता है, वहीं यह उत्तरदायित्व व चुनौतियों से भरपूर होता है। साथ ही समुचित व्यवस्था बनी रहे इसके लिए कार्य विभाजन भी अति आवश्यक होता है। इसी सोच के साथ विद्यालय में 4 जुलाई, 2020 को अध्यापकों के लिए Badge Ceremony का आयोजन माँ सरस्वती की पूजा अर्चना के साथ प्रारम्भ हुआ। विद्यालय के मानद् सचिव एडवोकेट द्वारकादास जी मालू, भवन मंत्री श्री अनिल कचौलिया, कार्यवाहक प्राचार्या श्रीमती दीप्ति श्रीवास्तव, उपप्राचार्य श्री प्रमोद जाजू ने समस्त शिक्षक पदाधिकारियों को बैज व पुष्प गुच्छ भेंट कर उनका स्वागत किया। मानद् सचिव ने अपने उद्बोधन द्वारा सभी पदाधिकारियों को शुभकामना देते हुए नेतृत्व शक्ति का महत्त्व बताते हुए एकजुट रहकर कर्मपथ पर अग्रसर होने का सन्देश दिया।

उत्कृष्ट बोर्ड परीक्षा परिणाम

विद्यालय के लिए अत्यन्त गौरवमयी क्षण है कि कक्षा XII Science, Commerce & कक्षा X की बोर्ड परीक्षा 2019-20 में छात्राओं ने बेहतरीन परिणाम देकर विद्यालय की शैक्षणिक गुणवत्ता को साबित कर गौरव बढ़ाया है।

विज्ञान वर्ग में कुल 91 छात्राएँ परीक्षा में प्रविष्ट हुई जिनमें से 85 छात्राएँ प्रथम श्रेणी व 6 छात्राएँ द्वितीय श्रेणी से उत्तीर्ण हुई। **कुमारी भाग्यश्री शर्मा** ने सर्वाधिक **93.40%** अंक अर्जित कर विद्यालय को गौरवान्वित किया।

Rajasthan Board Result Class XII 2019-20

CLASS	APPEARED	I DIVISION	II DIVISION	RESULT %
XII SCIENCE	91	85	6	100%

इसी क्रम में वाणिज्य वर्ग की कक्षा 12 के बोर्ड परीक्षा परिणाम में बालिकाओं ने 100% परीक्षा परिणाम देकर पुन: अपनी जीत का परचम फहराया। बोर्ड परीक्षा में कुल 194 छात्राएँ प्रविष्ट हुई जिनमें से 174 छात्राएँ प्रथम श्रेणी व 20 छात्राएँ द्वितीय श्रेणी से उत्तीर्ण हुई। विद्यालय की छात्रा कुमारी **एलिश अग्रवाल** ने 95% अंक प्राप्त कर प्रथम स्थान प्राप्त किया, वही **पूर्वी कसेरा** ने 94.20% व **सलोनी जैन** ने 93.40% अंक प्राप्त कर विद्यालय को गौरवान्वित किया। विद्यालय की 14 छात्राओं ने 90% से अधिक अंक प्राप्त कर विद्यालय की कीर्ति में चार चाँद लगाये।

Rajasthan Board Result Class XII 2019-20

Class	Appeared	I Division	II Division	Result %
XII Comm.	194	174	20	100%

School Toppers

ALISH AGARWAL 95.00% · POORVI KASERA 94.20% · SALONI JAIN 93.40%

School Toppers Scoring 90% & Above

Name	Per. %	Name	Per. %	Name	Per. %
ALISH AGARWAL	95.00%	ANUSTHA AGARWAL	92.20%	MUSKAN SHARMA	90.40%
POORVI KASERA	94.20%	AYUSHI SHARMA	92.20%	PALAK KESWANI	90.40%
SALONI JAIN	93.40%	RESHMA WASWANI	91.20%	AKSHITA GUPTA	90.20%
PRIYANKA VIJAY	92.80%	SAKSHI BHARDWAJ	91.00%	TANISHA SUSAWAT	90.00%
RIYA SONI	92.80%	LATA MEGHANI	90.60%		

इसी कड़ी में 27 जुलाई 2020 को घोषित कक्षा 10 के बोर्ड परीक्षा परिणाम में बालिकाओं ने बेहतरीन परीक्षा परिणाम देकर विद्यालय की गरिमा बढ़ाई। विद्यालय की छात्रा कुमारी **अंजली बालानी** ने 97% अंक प्राप्त कर प्रथम स्थान प्राप्त किया, वही **प्रियांशी अग्रवाल** ने 95.17% व **प्रतिक्षा गुप्ता** ने 95% अंक प्राप्त कर विद्यालय को गौरवान्वित किया। विद्यालय की 25 छात्राओं ने 90% से अधिक अंक प्राप्त कर विद्यालय की कीर्ति में चार चाँद लगाये। बोर्ड परीक्षा में कुल 334 छात्राएँ प्रविष्ट हुई जिनमें से 262 छात्राएँ प्रथम श्रेणी व 66 छात्राएँ द्वितीय श्रेणी से उतीर्ण हुई।

Rajasthan Board Result Class X Session 2019-20

Appeared	I Division	II Division
333	262	66

ANJALI BALANI 97.00% · PRIYANSHI AGARWAL 95.17% · PRATIKSHA GUPTA 95.00%

School Toppers Scoring 90% & Above

Student's Name	%	Student's Name	%
1. ANJALI BALANI	97.00%	14. KANIKA GUPTA	91.17%
2. PRIYANSHI AGARWAL	95.17%	15. KUMKUM SONI	91.17%
3. PRATIKSHA GUPTA	95.00%	16. PRIYA OJHA	91.17%
4. KANIKA DANGAYECH	94.67%	17. SANA PARVEEN	91.17%
5. KRITIKA SHARMA	94.50%	18. KASAK KHANDELWAL	91.00%
6. KESHVI MEENA	93.50%	19. KHUSHNUMA BANO	91.00%
7. MITALI NAYAK	93.17%	20. AKSHITA JANGID	90.33%
8. SAMIKSHA SHARMA	93.00%	21. PURVA DADHICH	90.33%
9. VANSHIKA SHARMA	92.67%	22. ZAINAB ALI	90.33%
10. NEHA SAIN	92.17%	23. KAIKASHA KHAN	90.00%
11. TANUSHREE SAXENA	92.17%	24. NANDINI GUPTA	90.00%
12. VANSHIKA GUPTA	92.17%	25. MEGHA SAINI	90.00%
13. JYOTI PODDAR	91.67%		

छात्राओं की इस सफलता पर विद्यालय चेयरमैन श्री प्रदीप बाहेती, महासचिव शिक्षा श्री नटवर लाल अजमेरा, विद्यालय के मानद् सचिव एडवोकेट द्वारकादास मालू, श्री अनिल कचौलिया, भवन मंत्री, कार्यवाहक प्राचार्या श्रीमती दीप्ति श्रीवास्तव एवं उप-प्राचार्य श्री प्रमोद जाजू ने छात्राओं को बधाई दी तथा निरन्तर उन्नति के पथ पर बढ़ने का आशीर्वाद दिया। विद्यालय के मानद् सचिव एडवोकेट द्वारकादास मालू ने प्रतिभावान छात्राओं का सम्मान व अभिनन्दन किया व उन्हें निरन्तर कर्मरत रहते हुए सदैव प्रगति पथ पर बढ़ते रहने का आशीर्वाद दिया।

जन्मभूमि मम पुरी सुहावनि

श्रीराम भारतीय संस्कृति के प्रतीक है और भारतवासियों के जीवन है। एक बार किसी ने ब्रह्मलीन स्वामी श्री करपात्री जी महाराज से कहा कि ''भारतीय संस्कृति और सनातन धर्म के अनेक ग्रन्थ हैं। कितने तो वेद हैं, उपनिषद् हैं, पुराण, उपपुराण और स्मृतियाँ हैं, इन सबको एक साथ कैसे पढ़ा जा सकता है ? कोई एक ग्रन्थ ऐसा हो जिसे पढ़ने पर पूरी भारतीय संस्कृति का दिग्दर्शन हो जाय।'' इस पर श्री स्वामी जी ने उत्तर दिया कि, ''किसी एक ग्रन्थ में भारतीय संस्कृति का दर्शन करना हो तो भगवान् राम की कथा 'श्रीरामचरितमानस' पढ़ लो। इस एक पुस्तक से भारत की संस्कृति समझ में आ जाएगी और इसका ज्ञान भी हो जाएगा।'' यह इस ग्रन्थ की महिमा नहीं बल्कि भगवान् श्रीराम के चरित्र की महिमा है। यही कारण है कि राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने स्वराज्य के बाद इस देश में रामराज्य के स्थापना की कल्पना की थी। यह बात सर्वविदित है।

भगवान श्रीराम पूर्णब्रह्म साक्षात् परमात्मा के रूप में अपनी सम्पूर्ण कलाओं के साथ इस पवित्र भूमि पर अवतरित हुए थे। यह जन्मभूमि करोड़ों-करोड़ देशवासियों का दिव्य स्मृति स्थल है, जो अति पवित्र है। जहाँ थोड़ी साधना और उपासना करने पर भी सिद्धि प्राप्त हो जाती है और जिसके दर्शनमात्र से अमोघ फल की प्राप्ति होती है। यहाँ तक कि जन्म-मरण के बन्धन से मुक्ति भी मिलती है। यह बात मनगढ़ंत या काल्पनिक नहीं, बल्कि शास्त्र की बात है। पुराणों में इसके संदर्भ मिलते हैं। 'भगवान् श्रीराम की जन्मभूमि यही है', यह भी इन पुराणों के वचनों से सिद्ध होता है। स्कन्दपुराण (वैष्णवखण्ड, अयोध्या-माहात्म्य) के कुछ वचन हम यहाँ उद्धृत करते हैं, जिनसे स्वत: सब स्पष्ट हो जायेगा–

तस्मात् स्थानादेशाने रामजन्म प्रवर्तते ।
जन्मस्थानमिदं प्रोक्तं मोक्षादिफलसाधनम् ॥

(विघ्नेश्वर के) स्थान से ईशान कोण में राम-जन्मस्थान है। मोक्ष आदि सभी फलों के देने वाले इस स्थान को राम-जन्म स्थान कहा गया है–

विघ्नेश्वरात् पूर्वभागे वासिष्ठादुत्तरे तथा।
लोमशात् पश्चिमे भागे जन्मस्थानं तत: स्मृतम् ॥

विघ्नेश्वर के पूर्व में तथा वसिष्ठ-स्थान से उत्तर में, लोमश-स्थान से पश्चिम दिशा में राम-जन्मस्थान है।

यदृष्ट्वा च मनुष्यस्य गर्भवासजयो भवेत् ।
विना दानेन तपसा विना तीर्थविना मखै: ॥

रामजन्म भूमि के दर्शनमात्र से बिना दान के, बिना तप के, बिना तीर्थयात्रा के तथा बिना यज्ञ किये ही मुक्ति हो जाती है तथा फिर गर्भ में नहीं आना पड़ता।

कपिलागोसहस्राणि यो ददाति दिने दिने ।
तत्फलं समवाप्नोति जन्मभूमे: प्रदर्शनात् ।।

प्रतिदिन हजारों कपिला गौ के दान से जो फल मिलता है, वही फल जन्मभूमि के दर्शन मात्र से मिल जाता है।

'श्रीरामचरितमानस' में स्वयं भगवान् श्रीराम जन्मभूमि की महिमा का वर्णन करते हुए कहते हैं–

जद्यपि सब बैकुंठ बखाना। बेद पुरान बिदित जगु जाना ॥
अवधपुरी सम प्रिय नहिं सोऊ । यह प्रसंग जानइ कोउ कोऊ ॥
जन्मभूमि मम पुरी सुहावनि । उत्तर दिसि बह सरजू पावनि ।।
जा मजन ते बिनहिं प्रयासा । मम समीप नर पावहिं बासा ॥
अति प्रिय मोहि इहाँ के बासी। मम धापदा पुरी सुखरासी॥

-'कल्याण' से साभार

अयोध्या
भूमि पूजन उत्सव

धन भाग्य हमारे अवध में राम पधारे
अवध में राम पधारे रे धन भाग्य हमारे।

आये अवध के प्यारे।

वर्षों का वनवास मिटा अब आये अवध के प्यारे
मन्दिर भव्य बनेगा सुन्दर जन-जन के रखवारे
सूरज उदय हुआ रघुकुल का जागे हैं भाग्य हमारे

आये अवध के प्यारे।

पांच अगस्त की धन्य घड़ी ये शुभ दिन मुहूर्त बना रे।
राम राज्य की करो तैयारी अब राम-राज होगा रे
अति आनन्द अवध में छाया भूमि-पूजन अवसर आया

भारत भाग्य जगा रे, आये अवध के प्यारे।

आंगन लीपो चोक पुरावो मंगल गाओ दीप जलाओ
बन्दनवार-बांध लो घर-घर राम को पूजो राम ही गाओ
रघुवंश का सूरज उगारे, छुपा सूरज अब प्रगट हुवारे

मोदी अब हर्षा रे, आये अवध के प्यारे।

जगमग-जगमग सजी अयोध्या आज दुल्हन सी बनी अयोध्या
तीरथ में है धाम अयोध्या राम की जन्म-भूमि है अयोध्या
रामलला का प्रगट हुवा रे, अब रामलला प्रगटा रे

आये अवध के प्यारे।

संत-महंत भक्त और जन-जन देश के वासी आज मुदित मन
हिन्दू-मुस्लिम सिक्ख ईसाई आज मुदित है सबका ही मन
निर्मल नीर बहे सरयू में दर्शन करो हनुमानगढ़ी में

नाचे हनुमत प्यारे आये अवध के प्यारे।

मानवता का पहला नाता सब धर्मों में प्रेम का नाता
दर्शन करले राम का सबमें राम का नाता सच्चा नाता
राम बसा जग के कण-कण में दर्शन करके आज अवध में
'दास' का मन हर्षा रे आये अवध के प्यारे।

माणकचन्द कचोलिया

75 का होने पर

ज्योति कुमार माहेश्वरी

सुबह मैं मीठी-मीठी नींद में सो रहा था कि अचानक पत्नी मेरी रजाई खींच कर झल्लाये हुए स्वर में बोली ''पिचहत्तर के हो गए और अभी तक सोये पड़े हो''। इस प्रकार मेरे पिचहत्तर वर्ष पूर्ण कर लेने की घोषणा हुई।

घोषणा ना होती तो शायद मुझे पता ही नहीं चलता कि मैं पिचहत्तर का हो गया हूँ। पर अब घोषणा हो चुकी थी और मैं बैठा-बैठा सोच रहा था कि पहले भी सुबह पहले डाँट पड़ती थी और अब भी डाँट ही खानी पड़ रही है तो फिर पिचहत्तर का होने से क्या फायदा? मैं पिचहत्तर का हुआ ही क्यों? सीधे छिहत्तर या सतहत्तर का क्यों नहीं हो गया? लेकिन उम्र के मामले में ऐसा डबल प्रमोशन मिलने का कोई प्रावधान नहीं है। इसलिए पिचहत्तर का होना मेरी मजबूरी थी। कोई भी व्यक्ति स्वेच्छा से पिचहत्तर का नहीं होता। उसका बस चले तो वह पच्चीस की उमर में ही Pause का बटन दबा दे। लेकिन हमारी उम्र का रिमोट ऊपरवाले के हाथ में होता है और उसमें Pause का बटन ही नहीं होता सिर्फ Stop का होता है और वह Stop का बटन दबाने में थोड़ा आलस कर जाये तो पिचहत्तर का होने की संभावना बढ़ जाती है।

आज से तीस-चालीस वर्ष पूर्व तक तो कुछ बिरले लोग ही पिचहत्तर के हो पाते थे। साठ के बाद कभी भी Stop का बटन दब जाया करता था और कोई इसका मलाल भी नहीं करता था। कहते थे ''पूरी उमर लेकर गया है'', ''भरा-पूरा परिवार छोड़कर गया है।'' लेकिन भला हो ऐलोपेथी दवाइयों का जिनका side effect भले ही खराब हो मगर main effect बड़ा अच्छा होता हैं। कैंसर तक में मरने नहीं देती। पिचहत्तर का करके ही छोड़ती हैं। इसीलिए तो आजकल हर ऐरा-गैरा-नत्थू-खैरा पिचहत्तर का हो जाता है।

अब तक पत्नी नहा धोकर आ चुकी थी। बोली ''जल्दी-जल्दी नहाना-धोना कर लो, मन्दिर जाना है''।

''मन्दिर क्यों?'' मैंने सवाल किया।

''अरे भले मानस पिचहत्तर के हो गए। भगवान को धन्यवाद भी नहीं दोगे क्या?''

''भगवान को क्यों? यदि धन्यवाद देना ही है तो मेरी स्वर्गवासी माँ को दो, जो मुझे छींक आने पर भी

> *"कोई भी व्यक्ति स्वेच्छा से पिचहत्तर का नहीं होता। उसका बस चले तो वह पच्चीस की उमर में ही Pause का बटन दबा दे। लेकिन हमारी उम्र का रिमोट ऊपरवाले के हाथ में होता है और उसमें Pause का बटन नहीं होता सिर्फ Stop का होता है।"*

गाँव में महामृत्युंजय का पाठ बिठवा दिया करती थी। उन्हीं अनगिनित पाठों के फलस्वरूप भगवान चाह कर भी stop का बटन नहीं दबा पाये।''

हमेशा की तरह मेरी बात अनसुनी कर पत्नी कार में बैठ गई और मुझे तो हुक्म की तामील करनी ही थी। मन्दिर में दर्शन कर व प्रसाद लेकर मैं बाहर आ गया। पत्नी सदा की तरह समय ज्यादा लगा रही थी। मैं सड़क पर टँगे फिल्मी पोस्टरों से झाँकती हीरोइनों के सौन्दर्य को निहारने लगा। तभी पत्नी बाहर आ गई और आँखें तरेर कर बोली ''पिचहत्तर के हो गए हो, कुछ तो शर्म करो''।

''इसमें शर्म की क्या बात है? फिल्म निर्माता पोस्टर इसीलिए लगवाता है ताकि लोग उसे देखें। सो देख रहा हूँ।'' मैंने सफाई देने की कोशिश की।

''देख नहीं रहे हो। घूर रहे हो।'' पत्नी ने आँखें मटका कर कहा।

मैं खिसिया कर रह गया। मैं समझ चुका था कि आज मेरा अशुद्ध गोचर है इसीलिए हर कदम पर डाँट पड़ रही है। इसलिए चुपचाप कार में बैठकर मैं whatsapp देखने लगा। whatsapp के सारे groups पर मेरे पिचहत्तर का हो जाने की घोषणा हो चुकी थी एवं बधाई देने वालों की बाढ़-सी आ गई थी। जो मुझे जानते थे वे और जो मुझे नहीं जानते थे वे भी मुझे आगे बढ़-बढ़कर बधाई दे रहे थे।

मैं सकते में आ गया इतनी बधाइयों के लिए मैं धन्यवाद कैसे दूंगा? एक बार फिर मैंने मन ही मन अपने को पिचहत्तर का हो जाने के लिए कोसा। तभी मोबाइल की घंटी बजी। हमेशा की तरह जन्मदिन की पहली बधाई प्रो. रमेश अरोरा दे रहे थे। मैंने उनसे अपनी व्यथा कही, तो उन्होंने कहा। ''सोच सदा सकारात्मक रखनी चाहिए। यदि सामान्य समय होता तो आपको इन सब बधाई देने वालों को पार्टी देनी पड़ती। अब Lockdown के कारण आप एक बड़े खर्च से बच गये हैं।'' मैं प्रो. रमेश अरोरा को उनकी अक्ल पर दाद भी नहीं दे पाया था कि मोबाइल फिर बजने लगा।

इस बार FTS के सचिव प्रदीप कोठारी थे। पहले तो बड़े जोर-शोर से बधाई दी। फिर अफसोस प्रकट करते हुए बोले ''भाई साहब आप पिचहत्तर के हो गए वरना इस वर्ष आपको Latin अमेरिका ले जाकर Celebrate करते।

मैं समझ गया था कि पिचहत्तर का होना एक गुनाह है और मेरे हाथों वह गुनाह हो चुका है। तभी फोन बजा। इस बार बाहेती जी बोल रहे थे।

वे कुछ याद करने की कोशिश करते हुए बोले-

''आज आपका कुछ है ना?''

''है तो सही'' मैंने विनम्रता से जवाब दिया।

''Anniversary है या Birthday?''

''Birthday''

''आपका या भाभीजी का?''

खर्चा बचाने के लिए तुम इतने नजदीक-नजदीक पैदा हो गए कि दूसरे Confused ही रहें। Birthday हो या Anniversary दोनों साथ ही मना लेते हो। anyway, Happy Birthday''

तभी मेरा नवासा उछलता-कूदता आया व मेरी गोद में बैठ गया। ''नाना आदमी बुड्ढा कब होता है''? उसकी बाल सुलभ जिज्ञासा थी। ''बेटा बुड्ढा नहीं वृद्ध बोलते हैं। आदमी 60 वर्ष की उम्र में वृद्ध होता है'' मैंने समझाने की कोशिश की।

''आप तो 75 के हो गए। आप क्या हुए'' उसने फिर जिज्ञासा की। ''नाना वयोवृद्ध हो गये मैंने प्यार से समझाया''

''अब इसके बाद क्या होंगे'' उसकी जिज्ञासा शांत नहीं हुई थी। ''उसके बाद नाना गयोवृद्ध हो जाएंगे'' मैंने उत्तर दिया था।

उत्तर से संतुष्ट होकर वह ''नाना गयोवृद्ध हो जाएंगे, नाना गयोवृद्ध हो जाएंगे'' कहते हुए भाग गया।

(व्यंग्यकार श्री माहेश्वरी समाज, जयपुर के संरक्षक हैं।)

समृद्धि प्रदाता जलझूलनी एकादशी

निर्जला एकादशी का जो महत्व है, वही इस जलझूलनी एकादशी का है। इस दिन के व्रत से समस्त इच्छाओं की पूर्ति होती है।

भाद्रपद के शुक्ल पक्ष की एकादशी भगवान विष्णु के जलयात्रा उत्सव के रूप में मनाई जाती है। लोकांचल में इसे सजला कहा जाता है, जबकि शास्त्रों में पद्मा एकादशी कहा गया है। इस दिन यदि श्रवण नक्षत्र का योग हो तो इसे विजया एकादशी कहा जाता है। निर्जला एकादशी का जो महत्व है, वही इस सजला एकादशी (जलझूलनी) का है। इस दिन के व्रत से समस्त प्रकार की इच्छाओं की पूर्ति होती है। उत्तर-पश्चिमी भारत में चातुर्मास में पर्याप्त बारिश के बाद छलके ताल-तलैयों में नूतन जल की पूजा के रूप में इस पर्व का विधान रहा है। विष्णु ही नारायण हैं, जो जलशायी देवता हैं। जल ही पंचतत्वों में वह प्रधान तत्व है, जो प्राणियों के जीवन के लिए समस्त सुविधाओं का प्रबंधन करता है। ऐसे में इस पर्व को उत्सव पूर्वक मनाया जाता है और गांव-गांव विष्णु मंदिरों से जलाशयों, नदी तट तक यात्राएं आयोजित की जाती हैं। इस दिन व्रत-उपवास से व्यक्ति और उस क्षेत्र को सर्वसुख, समस्त संसाधनों की सुलभता होती है।

भगवान विष्णु की ध्वज और विमान सहित जलाशयों की यात्रा मूलत: इन्द्रध्वजोत्सव का परिवर्तित रूप रहा है। विष्णुधर्मोत्तरपुराण, वराहमिहिर कृत बृहत्संहिता और राजा भोज कृत समरांगण सूत्रधार से ज्ञात होता है कि इंद्रध्वजोत्सव राज्य की समृद्धि के ध्येय से मनाया जाता था, किन्तु वैष्णव प्रभाव के विस्तार के साथ ही उक्त उत्सव नारायण की तालयात्रा के रूप में सामने आया। इस दिन मंदिरों से विष्णु के शालग्राम स्वरूप और चल प्रतिमा को विमान में विराजित कर नए जल के लबालब तालाब या नदी तट पर ले जाया जाता है, वहीं पर स्नान और षोड्शोपचार पूजन होता है और घंटे-घड़ियाल के वादन के साथ आरती की जाती है। इस उत्सव में बड़ी संख्या में लोग भाग लेते हैं और लक्ष्मी के स्वामी नारायण से ग्राम, राष्ट्र की सर्वसुख प्राप्ति और नाना रूपेण समृद्धियों की कामना करते हैं। सर्वहित में ही अपना हित भी देखते हैं।

महत्व

ब्रह्माण्डपुराण और पद्मपुराण में इसका महत्व पद्मा एकादशी के रूप में बताया गया है। पद्मा लक्ष्मी का पर्याय है। इस प्रकार यह पर्व वैभव प्रदायक है। इस दिन भगवान हृषिकेश की पूजा की जाती है। सूर्यवंश में उत्पन्न राजा मांधाता के साथ इस व्रत का संबंध रहा है। मांधाता धर्म से प्रजापालन करते थे। उस काल में भूमि कामधेनु के समान फल प्रदान करती थी। दुर्भाग्यवश एक समय ऐसा भी आया जब लंबे समय तक बारिश नहीं हुई। अन्न के अभाव में प्रजा का विनाश होने लगा। प्रजा के लिए उपाय स्वरूप राजा मांधाता जंगल में चल दिए। वहीं पर उनकी ब्रह्मपुत्र अंगिरा ऋषि से भेंट हुई। अंगिरा ने पद्मा एकादशी के व्रत का परामर्श दिया और कहा कि इस व्रत के प्रभाव से अच्छी वृष्टि होती है। राजा ने प्रजा सहित इस व्रत को किया तो राज्य में सुख, समृद्धि का साम्राज्य हो गया।

व्रत का विधान

मेष राशि से लेकर मीन राशि तक के सभी जातकों को इस दिन सुबह स्नान कर भगवान का पूजन और उपवास का संकल्प करना चाहिए। शाम को नारायण के जलयात्रा उत्सव में सम्मिलित होकर रात को हरिस्मरण करना चाहिए। दूसरे दिन दोपहर के पहले उपवास का पारणा करना चाहिए। निर्णय ग्रंथों में कहा गया है कि यदि मध्याह्न से पूर्व श्रवण नक्षत्र के बीच का भाग विद्यमान हो तो जल से ही पारणा किया जाता है। पद्मपुराण के एकादशी महत्व (59, 37-39) में कहा गया है कि इस दिन व्रतार्थी को चाहिए कि वह जल से भरे हुए कलश को वस्त्र से ढंककर दही व चावल सहित विप्र को दान करे। छाता और जूते भी दान करने चाहिए। इस अवसर पर निम्न मंत्र का उच्चारण करना चाहिए-**नमो नमस्ते गोविन्द बुधश्रवणसंज्ञक। अघौघसंक्षयं कृत्वा सर्वसौख्याप्रदो भव। भुक्ति मुक्ति प्रदश्चैव लोकानां सुखदायक:।।**

यात्रा, पूजन के फल

भगवान विष्णु के इस प्रकार के पूजनादि का फल भविष्योत्तरपुराण, हयशीर्ष, विष्णुधर्मपुराण आदि में आया है। यह कहा गया है कि ऐसे उत्सव सहित नारायण की पूजा-अर्चना करने वाले को शत्रु समूह से भय की आशंका नहीं रहती। उस क्षेत्र में बादल यथासमय बारिश करते हैं और वहां अतिवृष्टि, अनावृष्टि, टिड्डी-पतंगों, चूहों, पक्षी और मनमर्जी करने वाले प्रशासनिक तंत्र- ऐसी छह इतियों का भय नहीं रहता। कामन्दकनीतिसार, नारदपुराण में इनका उल्लेख इस प्रकार हुआ है- **अतिवृष्टिरनावृष्टि: शलभामूषिका: खगा:। अत्यासन्नाश्च राजान षडतै ईतय: स्मृता:।।** यह भी कहा गया है कि विष्णु के जन्मोत्सव के प्रसंग के साथ जुड़े ऐसे पर्व के आयोजन से समस्त समृद्धियों का आगमन होता है। यहां उपसर्ग, भय, पशु, नाग, पापरोग (संक्रमित व्याधियां), पाप, राज्य और चोरों के भय की भी आशंका नहीं रहती है।

जो जन्माष्टमी उत्सव का फल है, वही इस दिन व्रत और जल में नारायण के स्नान-अर्चना का कहा गया है। इस व्रत को करने वाले स्त्री-पुरुषों के यहां कभी मृत संतान प्रसूत नहीं होती, वहां गर्भपात का भय नहीं रहता, व्याधि, वैधव्य और दुर्भाग्य नहीं होता। ऐसे घर में दंभ और कलह भी नहीं होती है- **न तत्र मृतनिष्क्रान्तिर्न गर्भपातनं तथा। न च व्याधिभयं तत्र भवेदिति मतं मम। न वैधव्य न दौर्भाग्यं न दम्भ: कलहो गृहे।।**

(हरिभक्तिविलास 15, 293-94)

अनंत चतुर्दशी : माहात्म्य

अनंत चतुर्दशी व्रत करने और भगवान् विष्णु के पूजन से व्रती की समस्त मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं, अनंत कष्टों से मुक्ति मिलती है, व्रती के सब पाप नष्ट होते हैं। इसीलिए यह अनंत फलदायक व्रत माना जाता है। भक्त धन, धान्य, पुत्रादि की कामना से भी यह व्रत करते हैं।

अनंत चतुर्दशी का दिन उस अंत न होने वाले सृष्टि के कर्ता निर्गुणब्रह्म की भक्ति का भी प्रतीक है। इस दिन वेदग्रंथों का पाठ करके भक्ति की स्मृति का डोरा बांधा जाता है, जो भगवान् विष्णु को प्रसन्न करने वाला तथा अनंत फलदायक माना गया है। अनंत चतुर्दशी चौदह लोकों का प्रतीक है, जिसमें अनंत भगवान् विद्यमान हैं।

ब्रह्मपुराण में कहा गया है कि जो व्यक्ति एकाग्रचित्त होकर प्रात:काल अनंत का पूजन करे, वह भगवान की कृपा से अनंत सिद्धि पाता है। इस व्रत की कथा पढ़ने और सुनने से भी सब पापों से छुटकारा मिलता है और अंत में परमगति की प्राप्ति होती है।

अपना राजपाट जुए में हारकर जब युधिष्ठिर अपने परिवार सहित वनों में भटक रहे थे, तब उन्हें अनेक कष्टों को सहन करना पड़ा। उनको दु:खी और कष्ट में देखकर भगवान् श्रीकृष्ण ने उन्हें अनंत चतुर्दशी का व्रत करने की सलाह दी। पांडवों ने जब भक्तिभाव से पूर्ण श्रद्धा के साथ यह व्रत किया, तो उनके सारे कष्ट व दु:ख धीरे-धीरे दूर हो गए और अंत में वे सभी कष्टमुक्त हो गए।

पूजन विधि

यह व्रत भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी (चौदस) को रखा जाता है। इस दिन शेषशय्या पर क्षीरसागर में सोने वाले भगवान् विष्णु की पूजा का विधान है। व्रती को प्रात:काल नित्य कर्मों से निपट कर किसी नदी अथवा सरोवर में स्नान करके पवित्र होकर एकाग्र मन से अपने हृदय में अनंत भगवान् का ध्यान करना चाहिए। फिर सर्वतोभद्र मंडल बनाकर उस पर कलश की स्थापना करें। कलश पर अष्टदल कमल के समान बने बर्तन में कुश से निर्मित अनंत की स्थापना करनी चाहिए। इसके पश्चात् अक्षत, दूर्वा तथा शुद्ध सूत से बने और हल्दी से रंगे हुए चौदह गांठ के अनंत को सम्मुख रखकर हवन करें। कलश पर रखे कमल पर भगवान् विष्णु की स्नान की हुई प्रतिमा रखें। इसके उपरांत भगवान् का ध्यान करते हुए सूत से बने उस अनंत को व्रती अपनी भुजा पर बांध ले। यदि पुराना अनंत बंधा हो, तो उसे निकाल दें। पुरोहित या ब्राह्मण को सम्मानपूर्वक पकवान और मिष्ठान का भोजन कराकर सामर्थ्य के अनुसार दान-दक्षिणा देकर प्रसन्नतापूर्वक विदा करें। फिर स्वयं नमकरहित एक वक्त का भोजन करें। इस व्रत का उद्यापन करने का भी विधान शास्त्रों में वर्णित है।

पौराणिक कथा

श्री भविष्यपुराण में इस व्रत की कथा का उल्लेख इस प्रकार हुआ है-

एक बार गंगा किनारे धर्मराज युधिष्ठिर ने जरासंध को मारने के लिए राजसूय यज्ञ प्रारंभ किया। इसके लिए रत्नों से सुशोभित यज्ञशाला बनवाई। अनेक मुक्ता लगाने से वह इंद्र के महल जैसी लग रही थी। यज्ञ के लिए अनेक राजाओं को न्योता दिया गया। गांधारी का पुत्र दुर्योधन यज्ञमंडप में घूमते हुए भ्रमवश एक ऐसे सरोवर में गिर पड़ा, जहां उसे लगा कि पानी भरा हुआ है। इस पर वह वहां अपने कपड़े ऊपर उठाकर चलने लगा। यह नजारा देखकर भीमसेन तथा अन्य राजपुरुष हंसने लगे। इस परिहास से दुर्योधन बुरी तरह चिढ़ गया और वह पांडवों से अपने इस अपमान का बदला लेने की सोचने लगा। तभी उसके दिमाग में द्यूत-क्रीड़ा (जुआ) खिलाकर उन्हें हराने की युक्ति आई।

इस कार्य में उसकी मदद की उसके मामा शकुनि ने, जो द्यूतक्रीड़ा में पारंगत था। शकुनि से परामर्श कर दुर्योधन ने एक कुचक्र रचा। उसने पांडवों को जुआ खेलने के लिए बुलाया और उन्हें शकुनि की सहायता से हरा दिया। पराजित हुए पांडवों को बारह वर्ष का वनवास व एक वर्ष का अज्ञातवास भुगतना पड़ा, जहां उन्हें अनेक कष्ट सहकर दिन गुजारने पड़े। दु:ख से घबराकर युधिष्ठिर ने भगवान् श्रीकृष्ण से इन सारे संकटों को दूर करने का उपाय जानना चाहा, तो उन्होंने यह कथा सुनाई-

'सतयुग में सुमंत नाम का एक वसिष्ठगोत्रीय ब्राह्मण रहता था। उसने महर्षि भृगु की 'दीक्षा' नामक पुत्री के साथ विवाह किया, जिससे उच्च गुणों वाली 'सुशीला' नाम की लड़की हुई। कुछ काल बाद 'दीक्षा' का देहांत हो गया। सुमंत ने सुशीला का विवाह मुनिराज कौण्डिन्य से कर दिया। जब ऋषि कौण्डिन्य सुशीला को लेकर अपने आश्रम की ओर लौट रहे थे, तो रास्ते में रात हो गई। ऋषि कौण्डिन्य नदी किनारे संध्या-वंदन में व्यस्त हो गए। इसी बीच सुशीला ने देखा कि कुछ स्त्रियां सुंदर वस्त्र धारण कर किसी देवता का पूजन कर रही थीं। उनसे बात करने पर उसे ज्ञात हआ कि यह अनंत-व्रत का पूजन कर रही हैं। उसने इसका विधि-विधान जानकर अनुष्ठान करके चौदह गांठों वाला अनंत बांह में बंधवा लिया।

बांह में डोरा बंधा देखकर ऋषि कौण्डिन्य ने सुशीला से पूरी जानकारी ली। इससे वह क्रोधित हुए और उस बंधे अनंत को तोड़कर आग में फेंक दिया। इस घोर अपमान का दुष्परिणाम यह हुआ कि उनकी सारी संपत्ति नष्ट हो गई। दरिद्रता से परेशान होकर वह दु:खी रहने लगे और वह अनंत की तलाश में भटकने लगे। तब भगवान् अनंत ने उनके पश्चात्ताप से प्रभावित होकर तिरस्कार के निवारण के लिए अनंत चतुर्दशी का व्रत चौदह वर्ष तक निरंतर करने का उपाय बताया। ऋषि कौण्डिन्य ने वैसा ही व्रत भक्तिभाव से किया, तो उन्हें सारे कष्टों से मुक्ति मिल गई।

इस प्रकार का दृष्टांत सुनकर अपने अनंत दु:खों के सागर से छुटकारा पाने के लिए धर्मराज युधिष्ठिर ने भगवान् श्रीकृष्ण की आज्ञानुसार अनंत चतुर्दशी का व्रत किया, जिसके प्रभाव से पांडव महाभारत के युद्ध में विजयी हुए और उनके सारे दु:ख, दर्द, विपत्तियां एवं पाप नष्ट हो गए। व्रत के प्रभाव से उन्होंने अपना खोया हुआ राज-पाट भी पुन: प्राप्त कर लिया।

SRSP
COLOUR ROOF™
RELIABLE • DURABLE • ECONOMICAL
Colour Coated Profile Sheets
मजबूती बेमिसाल...चले सालों साल...

Kailash Mimani
+91- 8824118281
Harshit Mimani
+91- 8302003095

RESIDENTIAL | COMMERCIAL | INDUSTRIALS
Colour Coated Sheets | Gutters | Flashings
Corners | Ridges Crimps | Installation Accessories
Road No.9A, VKI Industrial Area, Sikar Road, Jaipur - (Raj.)

Pradeep Somani

9352488758
NIRMIT PROPERTIES
TO-LET • SALE • PURCHASE
NIRMIT OPTICIANS
G-43, Dwarika Tower, Vidhyadhar Nagar, Jaipur
E-mail : nirmit.opticians@gmail.com
20% Discount

Madho Bihari Kabra
+91-9314800716
K.K. MEDICOS
Special Discount for
Maheshwari Samaj Members

OPP. ZANANA HOSPITAL, STATION ROAD, JAIPUR
Tel.: (S) 4919968, 2365229, Mob.: 8890905769

Mukesh Baheti +91 98290 48022
Give A Missed Call on
02261883537
& Get an Exclusive Offer
BAHETI OPTICIAN
Ray-Ban | ELLE | fastrack | VOGUE | TOMMY HILFIGER | LACOSTE | ESPRIT
A-13, Mall Road, Sector-1,
Vidhyadhar Nagar,
Jaipur-13 M : 9929076022
15% FOR MAHESHWARIS ONLY

9887896797
अनिता एंड अनिता
Sarees
Exclsive & Primium
Collection:
सिन्थेटिक ऑल ब्राण्ड
सुभाष, लक्ष्मीपति, विशाल
शॉल, आसन, नेपकीन, टॉवल
काकड़ डोरा भी उपलब्ध है।
नाइटी
Visit Now
TUSHMI MOTI
HELPS TEETHING BABIES
चारमीनार-कुमकुम, मोली
हैदराबाद-चीड की फैन्सी राखी
मांगलिक एवं शुभ कार्य

Add : G-9-10/103 Anmol Residency, Path No.6,Vijaybari, Sikar Road, Jaipur

Ghanshyam Birla (Jimmy)
Mob. No. 9829013154
9314501179
Birla
ENTERPRISES
44, Gangori Bazar, Jaipur-302 001
Phone : (O) 91-141-2315324 ® 2322324
Website : www.birlaenterprises.com
Email : birlaenterprises@hotmail.com

LIC
भारतीय जीवन बीमा निगम
- Pension Plan
- Income Continuity Plan
- Children Marriage / Education many more attractive plan
- Loan Liability etc....
- Religare Health Insurance (Mediclaim) (Free Health Check-up Facility Available)

Our belief create and save
Free Policy Servicing also Available
Call : 9309337880
आलोक कुमार माहेश्वरी बम्बाला सेक्टर-5, प्रताप नगर, सांगानेर, जयपुर
email: alokkumarmaheshwari@gmail.com

MAKE IN INDIA
PURE STONE
TOPSTAR GRANITES
a Unit of Top Star Elect. (India) PVT. LTD.
F-596, Road No. 6, Vishwakarma Industrial Area, Jaipur-302013 (Raj.)
Ph. +91 9414074924, 0141-2280720
www.topstargranites.com
sanjaytopstar@gmail.com
sales@topstargranites.com
topstareipl@gmail.com
Sanjay Kabra

Shree Krishna Group
आपका विश्वास... हमारी पहचान...
॥ जय श्री कृष्णा ॥

भवानी माहेश्वरी (छापरवाल)
93146-51206
जय श्री कृष्णा प्रोपर्टीज एण्ड बिल्डर्स
सी-11-बी, दाधिची नगर, खाटू श्याम मंदिर के पास, एच.टी. लाईन रोड
रोड नं. 5 के सामने, सीकर रोड, जयपुर-302039 Ph.: 8766111100
E-mail : skgroup.jaipur@gmail.com I www.shreekrishnagroupindia.com

गया तीर्थ

पितृ विसर्जन

गया पितृतीर्थ है, इसे तीर्थों में श्रेष्ठ माना गया है। यहाँ स्वयं ब्रह्माजी निवास करते हैं। पितृपक्ष में पितरों का श्राद्ध, पिण्डदान, तर्पण आदि कर्मों का विशेष महत्त्व है। वर्तमान बिहार प्रदेश में रेल एवं सड़क मार्ग से जुड़ा यह स्थान सुन्दर वनों, पहाड़ियों, नदियों एवं कुण्डों से घिरा हुआ है। 'गयासुर' नामक एक पराक्रमी असुर ने घोर तप किया था, जो सम्पूर्ण जगत् को पीड़ित करने वाला था, उससे दु:खी देवगण भगवान् विष्णु की शरण में गये, तब भगवान् गदाधर ने गदा से गयासुर का वध कर गया तीर्थ की मर्यादा स्थापित की। स्वयं ब्रह्माजी ने गया तीर्थ में यज्ञ कर सरस्वती नदी की सृष्टि करके वहाँ निवास किया।

गया में धर्मपृष्ठ, ब्रह्मसभा, गयाशीर्ष तथा अक्षयवट के समीप पितरों के निमित्त श्रद्धापूर्वक जो भी अर्पण किया जाता है वह अक्षय होता है। पितृपक्ष में लाखों श्राद्धकर्त्ता मोक्ष की कामना से अपने पितरों को तर्पण-श्राद्ध आदि से तृप्त कर स्वयं को धन्य मानते हैं। वैसे तो वर्षभर गया तीर्थ में श्राद्धकर्म किये जाते हैं, पर पितृपक्ष में श्राद्ध करने की विशेष महत्ता है। श्री नारदपुराण एवं अन्य धर्मग्रन्थों में गया तीर्थ में श्राद्ध तथा पितृ विसर्जन का वृत्तान्त विस्तार से बतलाया गया है। उदयगिरि पर्वत जहाँ सावित्री देवी का पदचिह्न दृष्टिगोचर होता है, वहीं योनिद्वार है, जहाँ जाने से मनुष्य अपने कुल की सात पीढ़ियों को पवित्र कर देता है। तदुपरान्त धर्मपृष्ठ नामक स्थान पर जाना चाहिये, जहाँ स्वयं धर्मराज विराजमान हैं। फल्गु तीर्थ, गयाशिर नामक पर्वत तथा गया के प्रमुख तीर्थ स्थान प्रेत शिला पर पिण्डदान कर मनुष्य प्रेत योनि में पड़े अपने पितरों का उद्धार करता है। देवताओं के द्वारा प्रार्थना करने पर भगवान् राम ने महानदी में स्नान कर तर्पण किया, तभी से वह रामतीर्थ के नाम से विख्यात हुआ–

राम राम महाबाहो देवानामभयंकर।
त्वां नमस्ये तु देवेश मम नश्यतु पातकम्॥

रामतीर्थ में स्नान कर भगवान् शिव को नमस्कार करके यमराज को बलि देकर उनके दो कुत्तों को भी अन्न की बलि दी जाती है। गया में पिण्डदान के लिये समय एवं मुहूर्त का विचार नहीं करना चाहिये; क्योंकि वह सिद्ध तीर्थ है। एक लाख अश्वमेध यज्ञ का अनुष्ठान करने से जो फल प्राप्त होता है, वह फल फल्गु तीर्थ में श्राद्ध करने मात्र से प्राप्त होता है, ऐसी पुराणों की मान्यता है।

श्राद्धकर्ता को गया में पिता, पितामह, प्रपितामह, माता, पितामही, प्रपितामही, मातामह, प्रमातामह आदि अर्थात् माता-पिता, दादा-दादी, परदादा-परदादी सहित नाना-नानी, परनाना-परनानी आदि के श्राद्ध के अलावा कुल-गोत्र, सगे-सम्बन्धी, इष्ट-मित्र, स्वजनों की उत्तम गति के लिये पिण्डदान श्राद्ध करने का क्रम बताया गया है। अत: यथाशक्ति श्रद्धापूर्वक मन, वचन, कर्म से देवताओं, ऋषियों-मुनियों का पूजन-अर्चन कर पितृमुक्ति हेतु शास्त्रानुसार श्राद्ध करना चाहिये।

भगवान् विष्णु, ब्रह्माजी एवं सदाशिव की स्तुति कर गया में विभिन्न स्थानों-वेदी, नदी, सरोवर, पर्वतों पर विभिन्न सामग्रियों, जल, अन्न, वस्त्र, पिण्ड आदि के द्वारा विद्वानों, आचार्यों, पुरोहितों द्वारा श्राद्ध कराया जाना चाहिये। इस क्रम में कई दिनों का समय लगता है।

फल्गुतीर्थे विष्णुजले करोमि स्नानमद्य वै।
पितृणां विष्णुलोकाय भुक्तिमुक्तिप्रसिद्धये॥

(नारदपुराण)

श्री नारदपुराण में पञ्चदिवसीय गया श्राद्ध का वर्णन है, जिसमें प्रथम ब्रह्म तीर्थ में फिर ब्रह्मकूप में श्राद्ध आदि करें। धर्मेश्वर धर्म को नमस्कार करके महाबोधि वृक्ष को प्रणाम किया जाता है। स्नान, तर्पण, पिण्डदान, पूजन और नमस्कारपूर्वक किया गया श्राद्धकर्म पितरों को सुख देनेवाला होता है। ब्रह्मसर में प्रकट हुआ आम्रवृक्ष सर्वव्यापी भगवान् विष्णुरूप है। गयातीर्थ में भीष्म पितामह ने विष्णु पद पर श्राद्ध करते समय अपने पितरों का आह्वान किया और जैसे ही पिण्डदान करने लगे तो उनके पिता महाराज शान्तनु के दोनों हाथ सामने निकल आये। भगवान् श्रीराम ने रमणीय रुद्रपद में आकर जब पिण्डदान किया तो उनके पिता महाराज दशरथ हाथ फैलाकर हाथ में पिण्ड लेने वहाँ आये। परंतु शास्त्र हाथ में पिण्ड लेने की आज्ञा नहीं देता, इसलिये भीष्म पितामह ने विष्णुपद और भगवान् श्रीराम ने रुद्रपद पर अपने पूर्वजों के निमित्त पिण्डदान किया।

गयातीर्थ में प्रेत शिला के समान ही अक्षय वट के समीप पिण्डदान, तर्पण और श्राद्ध का विशेष महत्त्व बताया गया है। यह स्थान गया श्राद्ध-कर्म में सबसे अन्त में किये गये दान, पुण्य, संकल्प एवं पितृ विसर्जन आदि कर्मों से जुड़ा हुआ है। अक्षयवट के निकट श्राद्ध करके मनुष्य अपने पितरों को ब्रह्मलोक में भेज देता है। अक्षयवट पर ब्राह्मण भोजन, शय्यादान, वस्त्र तथा जीवनोपयोगी वस्तुओं का दान करने पर स्वर्गस्थ पितर अपने वंशजों द्वारा किये गये श्राद्धकर्म से प्रसन्नता प्राप्त करते हैं। इसके अतिरिक्त वशिष्ठ तीर्थ, भस्मकूट, मुण्डपृष्ठ, कामधेनुपद, अगस्त्यपद, सोमकुण्ड, काकशिला, प्रेतकुण्ड आदि कई पद (श्राद्ध, तर्पण पिण्डदान के स्थान) हैं, जहाँ श्राद्ध करने मात्र से ही मनुष्य अपने पितरों को विभिन्न योनियों में भोग रहे दु:खों-कष्टों से छुटकारा दिलाकर उन्हें वैकुण्ठधाम पहुँचाता है। गयातीर्थ यात्रा कर श्राद्धकर्म करने से मनुष्य इस लोक के सुख, वैभव, ऐश्वर्य, पुत्र-पौत्रादि का सुख भोगकर अन्त में स्वयं भी मोक्ष को प्राप्त करता है।

श्राद्ध से सबकी संतृप्ति

ब्रह्मेन्द्ररुद्रनासत्यसूर्याग्निवसुमारुतान्।
विश्वेदेवानृषिगणान् वयांसि मनुजान् पशून्॥
सरीसृपान् पितृगणान् यच्चान्यद्भूतसंज्ञकम्।
श्राद्धं श्रद्धान्वितं कुर्वन् तर्पयत्यखिलं हि तत्॥

'श्रद्धायुक्त होकर श्राद्धकर्म करने से केवल पितृगण ही तृप्त नहीं होते; अपितु ब्रह्मा, इन्द्र, रुद्र, दोनों अश्विनीकुमार, सूर्य, अग्नि, अष्टवसु, वायु, विश्वेदेव, ऋषि, मनुष्य, पशु, पक्षी और सरीसृप आदि समस्त मृतप्राणी तृप्त होते हैं।

कोरोना काल में सादगी से सम्पन्न हुई शादियां

कोरोना काल की विषम परिस्थितियों में भी आपने अपने परिवार में होने वाली शादी को स्थगित न करके सरकारी नियमों की पालना करते हुए बडी सादगी से सम्पन्न कर समाज के सभी परिवारों के सामने एक अनुकरणीय उदाहरण पेश किया है। समाज हित में आपके द्वारा उठाया गया यह उत्कृष्ट कदम सम्पूर्ण समाज के परिवारों को इसी तरह सादगीपूर्ण विवाह करने के लिए प्रेरित करेगा ऐसी हमें आशा है। श्री माहेश्वरी समाज, जयपुर की कार्यकारिणी की ओर से आपका साधूवाद एवं नवदम्पत्तिया के सुखमय जीवन के लिए बहुत-बहुत शुभकामनाएँ।

चि. गगन
सुपुत्र श्री पवन कुमार गग्गड़
संग
सौ.कां. मीनल
सुपुत्री श्री अरविन्द बिड़ला
विवाह दिनांक :15.06.2020

चि. महेश
सुपुत्र श्री रामअवतार झंवर
संग
सौ.कां. सुगन्धा
सुपुत्री श्रीमती सरिता देवी मालपानी
(निवासी-गाजियाबाद)
विवाह दिनांक :29.06.2020

चि. अंकित
सुपुत्र श्री सुनील सोनी
संग
सौ.कां. अंजली
सुपुत्री श्री कमलेश विनानी
विवाह दिनांक :10.08.2020

जिम्मेदारी-समझदारी

वृक्षारोपण से रहता है पर्यावरण शुद्ध
मिलती है प्राण वायु ऑक्सीजन
अनेक स्वास्थ्यवर्द्धक फल
तथा जन्म से मृत्यु तक हमें लकड़ी भी

जब हमारे पूर्वजों ने निभायी है अपनी जिम्मेदारी
तब हमें भी आज दिखानी है यह समझदारी

हमें लगाने हैं वृक्ष घर के आस-पास
पार्क, विद्यालय एवं अस्पताल प्रांगण में
साथ ही सड़क के दोनों ओर भी

वृक्षारोपण के साथ-साथ
आवश्यक है सार-संभाल भी
अत: देना है इनमें नियमित पानी भी

वृक्षारोपण के महत्व को
दिल से कीजिए स्वीकार
अन्यथा प्रदूषित पर्यावरण से
रहेंगे तन-मन बीमार

जी हाँ, हम सभी को निभाना है यह फर्ज
ताकि उतार सकें हम प्रकृति का कुछ कर्ज। ■ शिव रतन मोहता

महेश अस्पताल

अप्रेल व मई 2020 में कोविड-19 के कारण पूरे परकोटा क्षेत्र में कर्फ्यू होने के कारण अस्पताल में सेवाएं बाधित रही। 1 जून से अस्पताल की सभी ओपीडी नियमित रूप से चालू कर दी गई है। 1 जुलाई से इंडोर (भर्ती) भी प्रारम्भ कर दिया गया है। इस दौरान वित्तीय संकट होने के बावजूद सेवाओं को व्यवस्थित करने का प्रयास किया जा रहा है। सभी समाजसेवी बन्धुओं से अनुरोध है कि अस्पताल को अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करें।

अस्पताल को निम्न बन्धुओं से सहयोग प्राप्त हुआ है:

35,000/- श्री रमेश कुमार जी मूंदड़ा

21,000/- श्री घनश्याम दास जी डागा

15,000/- श्री रामअवतार जी कैलाशचन्द जी आगीवाल
(श्री राजेश जी तापड़िया की प्रेरणा से स्व. श्री सत्यनारायण जी आगीवाल की पुण्य स्मृति में नि:शुल्क दवा सेवा कोष में सहायतार्थ)

5,100/- श्री श्याम सुन्दर जी डागा
(नि:शुल्क दवा सेवा कोष)

श्री विक्रम जी कचौलिया ने अस्पताल को एक **ऑक्सीजन मशीन** उपलब्ध करवायी।

आप सभी सहयोगकर्ताओं का हार्दिक आभार।

श्याम सुन्दर डागा — अध्यक्ष
शंकर लाल राठी — सचिव

स्वतंत्रता दिवस पर महेश अस्पताल में झंडारोहण

चांदपोल बाजार स्थित महेश अस्पताल में स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर झंडारोहण किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि अस्पताल सोसायटी के उपाध्यक्ष श्री देवीनारायण खटोड थे। समारोह में अध्यक्ष श्री श्याम सुन्दर डागा, सचिव श्री शंकर लाल राठी, कोषाध्यक्ष श्री मोतीचंद कचोलिया, प्रशासक श्री रामअवतार आगीवाल, श्री बृजेश कुमार लद्ढा, श्री ओमप्रकाश मांधना सहित सभी चिकित्सक एवं कर्मचारी उपस्थित थे।

आवश्यकता है महिला चिकित्सकों की

महेश अस्पताल में अनुभवी महिला चिकित्सकों की आवश्यकता है।

सम्पर्क करें- रामअवतार आगीवाल, प्रशासक
मो. 94133 41614

मृत्युपरान्त देहदान संकल्प

श्री मदन गोपाल राठी एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती चन्द्रा राठी ने स्वेच्छा से देहदान का संकल्प कर अपने नाम शरीर रचना विभाग एस.एम.एस. मेडिकल कॉलेज में पंजीकृत करवाया है। मानव कल्याणार्थ इस कार्य हेतु समाज द्वारा आभार...

श्रीमती किरण देवी धर्मपत्नी श्री सत्यनारायण जी लोहिया द्वारा मानव कल्याणार्थ स्वेच्छा से किये गए देहदान संकल्प के लिये समाज द्वारा आभार...

74वाँ स्वतंत्रता दिवस सादगी से संपन्न

दी एज्यूकेशन कमेटी ऑव माहेश्वरी समाज सोसायटी द्वारा 15 अगस्त को 74वें स्वतन्त्रता दिवस का आयोजन तिलक नगर स्थित माहेश्वरी स्कूल प्रांगण में देशभक्ति के भावों से परिपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर मुख्य अतिथि श्री राधाकृष्ण कोगटा (चेयरमैन-कोगटा फाइनेन्स इण्डिया लि.), समाज अध्यक्ष श्री प्रदीप बाहेती, महासचिव शिक्षा श्री नटवर लाल अजमेरा द्वारा ध्वजारोहण कर राष्ट्र के प्रति सम्मान व्यक्त किया गया तथा अमन-शांति के प्रतीक गुब्बारे आसमान में छोड़े गये।

कोविड-19 की परिस्थिति को देखते हुए कार्यक्रम सादगी से मनाया गया। अध्यक्ष श्री प्रदीप बाहेती ने अपने उद्बोधन में राष्ट्रभक्ति का सच्चा स्वरूप बताते हुए कर्त्तव्यपरायणता का संदेश दिया। महासचिव शिक्षा श्री नटवर लाल अजमेरा ने अपने सम्बोधन में ECMS द्वारा संचालित सभी शिक्षण संस्थाओं की उपलब्धियों पर प्रकाश डाला। कोषाध्यक्ष सीए नटवर कुमार सारड़ा ने मुख्य अतिथि का परिचय दिया गया। मुख्य अतिथि श्री राधाकृष्ण कोगटा द्वारा आत्मनिर्भर भारत के स्वरूप पर प्रकाश डालते हुए समस्त आगन्तुकों को स्वाधीनता दिवस की बधाई दी। ECMS के समस्त पदाधिकारियों द्वारा मुख्य अतिथि को स्मृति चिन्ह भेंट किया गया।

माहेश्वरी बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय, चौड़ा रास्ता के मानद् सचिव एडवोकेट श्री द्वारका दास मालू द्वारा सभी आगन्तुकों का धन्यवाद ज्ञापन किया गया।

कृष्ण जन्मोत्सव का छाया उल्लास

छोटी-छोटी गैया, छोटे-छोटे ग्वाल छोटो सो म्हारो, मदन गोपाल.....

कोरोना संक्रमण के पहरे के बीच 12 अगस्त को कृष्ण जन्माष्टमी पर पहली बार प्रमुख मंदिरों और घरों में मध्यरात्रि को कान्हा का जन्म हुआ। मंदिरों के अलावा सभी ने अपने घरों में विशेष मनमोहक झांकियां सजाई। दिनभर घरों पर बच्चों को कृष्ण की वेशभूषा धारण करवाई गई। शहर के आराध्य गोविंद देवजी मंदिर में रात 12 बजते ही मृदंग, मंजीरों की धुन और बधाई गीतों के बीच जन्मे कृष्ण कन्हाई, बधाई हो बधाई की गूंज सुनाई दी। भक्तों ने पहली बार घर बैठे ही ऑनलाइन दर्शन किए। कृष्ण जन्म के बाद भक्तों ने ठाकुरजी के चित्रपट लड्डू गोपाल का अभिषेक कर नई पोशाक धारण करवाई। वहीं माखन मिश्री सहित अनेक व्यंजनों का भोग लगाया। इसके बाद व्रत का पारणा किया। अगले दिन नंदोत्सव मनाया गया और बधाईयां बांटी गई।

नन्हा कान्हा: हृदय हुरकट

Pankaj Dhoot
+91 9829050286

AAYUSH ASSOCIATES
RASHHI ENTERPRISE

15, Indra Colony, Near Pani Pech
Bani Park, Jaipur, M. : 9829014948

G-3, Venkteshwara Complex
Central Spine, Vidhyadhar Nagar, Jaipur
M.: +91 9929090286
e-mail : pankaj_dhoot@yahoo.com

MICROTEK
OKAYA JAPANESE BATTERIES
EXIDE

Deals in Inverter, UPS , Battery , SOLAR .

गुरु कृपा

मालपानी मैरिज ब्यूरो

समाज में वैवाहिक सम्बन्ध करवाने का 15 वर्षों का अनुभव

ऑल इण्डिया विवाह योग्य
लड़के-लड़कियों हेतु सम्पर्क करें
तलाकशुदा (विधुर व विधवा) भी मिलें

राजेन्द्र मालपानी : 6377275813

304, वैशाली नगर, जयपुर

राजेन्द्र मालपानी : 8387064577 (व्हाट्सएप) अन्जू मालपानी : 8946939394 (व्हाट्सएप)

• 1116 फ्लेट्स की मेगा टाउनशिप
• 3 Side Open Flats
• 9000 sq. ft. Club House
• 21000 Sq.ft.
• On Time Possesion
• Quality Construction

AADHAR PRIME

अब तो अपना घर खरीद ही लीजिए क्योंकि...

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें-9261-311-311

SBI HDFC

Call for book 80580 94321

निःशुल्क दुर्घटना बीमा योजना का चैक भेंट

श्री तन्मय नेवर, बनीपार्क निवासी के माता-पिता (श्री नितिन नेवर व श्रीमति सपना नेवर) का सड़क दुर्घटना में आकस्मिक निधन होने के उपरान्त श्री माहेश्वरी समाज, जयपुर की नि:शुल्क दुर्घटना बीमा योजना के अन्तर्गत प्राप्त 2 लाख रुपये (प्रति सदस्य 1 लाख रुपये) की राशि का चैक समाज अध्यक्ष- श्री प्रदीप बाहेती एवं शिक्षा सचिव, एम.पी.एस. जवाहर नगर- श्री कमल सोमानी द्वारा श्री सुरेश रतन जी नेवर को उनके निवास स्थान पर दिया गया।

सभी समाज सदस्यों की जानकारी के लिए यह उल्लेख करना जरूरी है कि 'दुर्घटना बीमा योजना' के अन्तर्गत सभी पंजिकृत समाज सदस्यों की 'बीमा प्रीमियम' समाज द्वारा वहन की जाती है। यह योजना केवल आकस्मिक सड़क दुर्घटना में मृत्यु होने पर ही लागू है।

कृष्णधाम

1. श्री रणछोड़ दास माहेश्वरी (गिलड़ा) ने आश्रम को 2100/- रुपए भेंट किये। प्रेरक- पूनम चंद भाला (महेश सेवा कोष संयोजक)।
2. श्री महेशचंद सुभाषचंद तोतला (चिरायु डिस्ट्रीब्यूटर) ने आश्रम में लंच हेतु सहयोग दिया।
3. मेसर्स शिल्पी अरोमास कन्नौज ने आश्रम को प्रतिमाह 2000/- रुपए (एक वर्ष के लिए) देने की घोषणा की। प्रेरक- श्री प्रमोद लखोटिया।
4. CA शिव झंवर सुपुत्र स्व. श्री नवरतनमल झंवर भीलवाड़ा ने आश्रम के 6 कर्मचारियों को यूनिफार्म भेंट की।
5. श्रीमती निशा धर्मपत्नी नवीन माहेश्वरी (फलोड़) ने अपने जन्मदिन के उपलक्ष्य में तेल पीपा- 1, देशी घी- 5 किलोग्राम, आटा- 20 किलोग्राम, चीनी- 10 किलोग्राम और बिस्कुट 1 किलो भेंट किये।
6. सुश्री रिधिमा सुपुत्री श्रीमती जयश्री-श्री देवी प्रसाद बियानी ने अपने जन्मदिन के उपलक्ष्य में आश्रम को एक पोर्टेबल म्यूजिक सिस्टम भेंट किया।
7. सुश्री धरा सुपुत्री श्रीमती अंजलि शरद असावा ने आश्रम में अपने जन्मदिन के उपलक्ष्य में लंच हेतु सहयोग दिया। प्रेरक-श्री सत्यनारायण-श्रीमती उमा असावा।
8. बगरू वालों का रास्ता (पुरानी बस्ती) निवासी प्रतिष्ठित व समाजसेवी परिवार (माहेश्वरी मूंदड़ा) ने आश्रम को 6 माह के लिए लागत अनुसार सब्जी का सहयोग देने की घोषणा की।

सभी सहयोगियों एवं दानदाताओं का आभार एवं अभिनन्दन।

मालचंद बाहेती (संयोजक- 9829461340)

स्वतंत्रता दिवस मनाया

कृष्णधाम वृधाश्रम में स्वधीनता दिवस के अवसर पर झंडारोहण श्री रमेश जी सुपुत्र श्री प्रभु दयाल मालपानी द्वारा किया गया। कार्यक्रम में सर्वश्री प्रमोद लखोटिया, नन्द किशोर जाजू, रामावतार आगीवाल, श्री नरायणा हॉस्पिटल के डायरेक्टर श्री सतपाल यादव उपस्थित रहे। वृद्धजन कल्याण आवास मंत्री मालचंद बाहेती ने सभी का अभिनन्दन किया एवं श्री माहेश्वरी डायग्नोस्टिक सेंटर के संयोजक श्री रवि पेड़ीवाल ने धन्यवाद दिया। आश्रम से श्री देवी प्रसाद सारडा एवं प्रबंधक गोपाल तिवारी ने कार्यक्रम को सुचारु रूप से संपन्न करवाया।

90% से अधिक अंक प्राप्त करने पर बधाई...

Class XIIth CBSE

Class Xth CBSE

सीए फाउंडेशन में राजस्थान में दूसरा स्थान प्राप्त करने पर बधाई

वल्लभ राठी पुत्र श्री दीपक राठी ने भारतीय सीए संस्थान की नवंबर 19 में आयोजित सीए फाउंडेशन परीक्षा उत्तीर्ण कर पूरे भारतवर्ष में **26वाँ** व राजस्थान में **दूसरा स्थान** प्राप्त करके श्री माहेश्वरी समाज जयपुर को पूरे भारतवर्ष में गौरवान्वित किया है। श्री माहेश्वरी समाज जयपुर इनके उज्जवल भविष्य की कामना करता है।

समाज संरक्षक
श्री आर.एस. फलोड़

श्री माहेश्वरी समाज, जयपुर के भामाशाह, यशस्वी, मृदुभाषी, सहज, सरल हृदय, जनप्रिय समाजसेवी, मानवता की सेवा को प्रतिबद्ध प्रमुख उद्योगपति श्रद्धेय समाज संरक्षक श्री आर.एस. फलोड़ (चैन्नई निवासी) समाज के क्षितिज पर चमकते हुये दैदीप्यमान सितारे थे।

आपका परिवार तन-मन-धन से सदैव समाज सेवा में समर्पित रहा। चार्टर्ड अकाउंटेंट से अपना कॅरियर प्रारम्भ करने वाले श्री फलोड़ ने सन् 1969 में बिरला ग्रुप में सेवा के पश्चात् सन् 1975 में अपनी प्रतिभा से स्वयं की ''स्टील फार्जिंग'' इण्डस्ट्री स्थापित कर उद्योग जगत में ख्याति अर्जित की। मानवता की सेवा में प्रतिबद्ध श्री फलोड़ ने शिक्षा एवं चिकित्सा क्षेत्र में भी अपना विशेष योगदान दिया था। धार्मिक एवं संस्कारवान वातावरण में पल्लवित श्री फलोड़ का मन बाल्यकाल से ही प्राणीमात्र की सेवा के लिये स्पन्दित होता रहा है। सामाजिक, शिक्षा एवं स्वास्थ्य के क्षेत्र में आप द्वारा दिये गये निम्न सहयोग को सदैव याद किया जायेगा:-

- महेश सेवा कोष में सन् 2012 में मैसर्स फलोड़ ब्रदर्स चेरिटेबल ट्रस्ट, चेन्नई कोष की स्थापना कर आजीवन प्रतिवर्ष 1 लाख रुपये का सहयोग।
  (कोष की वर्तमान राशि 22 लाख 11 हजार रुपये)
- श्री माहेश्वरी जनोपयोगी भवन 'अभिनन्दन' में 75 लाख रुपये का सहयोग।
- एम.पी.एस. इंटरनेशनल स्कूल के लिए 31 लाख रुपये का सहयोग।
- एम.पी.एस. बगरू स्कूल के लिए 11 लाख रुपये का सहयोग।
- आप शंकर नैत्रालय के आजीवन ट्रस्टी रहे। आपके द्वारा अस्पताल को समय-समय पर आर्थिक सहयोग।
- तमिलनाडु, केरल और पुड्डुचेरी के विद्यालयों में कक्षा 1 से 12वीं तक के लगभग 350 निर्धन विद्यार्थियों को फीस, किताबें व यूनिफार्म प्रायोजित।
- कक्षा 10 से स्नातकोत्तर तक के 90% से अधिक प्राप्त करने वाले शिक्षार्थियों को आपकी ओर से सम्मानित किया जाता रहा है।
- धर्मस्थल 'रामेश्वरम्' मे हॉल का निर्माण करवाया गया।
- किशनगढ़ रेनवाल गौशाला में विशेष सहयोग।

श्री फलोड़ की सामाजिक सेवाओं को दृष्टिगत रखते हुए समाज द्वारा सम्मान स्वरूप 18 जुलाई, 2015 को संरक्षक मनोनीत किया गया। आप श्री माहेश्वरी समाज जनोपयोगी भवनों 'उत्सव' एवं 'अभिनन्दन' की प्रबन्ध समिति के आजीवन दानदाता सदस्य रहे हैं।

निष्पक्षता की प्रतिमूर्ति, कर्मठ, सेवाभावी, नैतिक मूल्यों के धनी, प्रेरणादायी, सर्वसुलभ व्यक्तित्व एवं भामाशाह के बिछुड़ने से समाज को अपूर्णीय क्षति हुई है। समाज के विकास में जब भी भामाशाहों की चर्चा होगी उसमें श्री फलोड़ साहब को सदैव याद किया जायेगा।

श्री माहेश्वरी समाज जयपुर के अध्यक्ष, महामंत्री, पदाधिकारी, कार्यकारिणी सदस्य, एवं सभी सहयोगी संस्थाओं के सदस्यों की ओर से भावभीनी श्रद्धांजलि।

सुविचार

- भलाई करना मनुष्य का सबसे अच्छा कर्त्तव्य है।
- परोपकार का हर एक काम स्वर्ग की ओर एक कदम बढ़ाना है।
- लोभ करना ही पाप का अधिष्ठान है।
- सत्य, प्रेम और करुणा ही सब धर्मों का सार है।
- दुख देने से दुख बढ़ता है और सुख देने से सुख
- अभिमान (गर्व) का पतन निश्चित है। सुखदसाथी नहीं हो सकता।
- निर्मल हृदय में ईश्वर का निवास है।
- लोभ से ही पाप, अधर्म तथा महान दुख की उत्पत्ति होती है।
- अवसर की प्रतिक्षा नहीं करनी है उसे तो खोज करके पकड़ना चाहिए।
- समय तो कभी भी लोटने वाला नहीं है, इसलिए समय को वेस्ट मत करो।
- क्षमा, संतोष, सत्संग और सद्विचार ही मनुष्य के द्वारपाल है।
- मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु क्रोध है।
- प्रतिभा का आवश्यक अंग 'धीरज' है।
- मनुष्य का दूसरा शत्रु आलस्य है। शत्रु को त्याग दो, पुरुषार्थी बनो।
- शील मनुष्य जीवन का अमूल्य रत्न है।
- ईमानदार बनें, सज्जनता और चरित्र का विकास करें।
- हर एक ठीक कदम पर सफलता मिलती चलती है।
- ईश्वरीय विधान प्रेम के आगे नतमस्तक है।
- बल और आरोग्य संयम में निहित है।
- बोलना चांदी के तुल्य है तथा मौन रहना स्वर्ण तुल्य।
- सद्ग्रन्थों में ही शांति तथा मानव कल्याण समाये हुये हैं।
- क्रूर स्वभाव का परित्याग करना ही सबसे बड़ा धर्म है।
- इस कंचन काया की कद्र करो और कुटिलों से दूर रहो।

दया धर्म का मूल है, पाप मूल अभिमान।
तुलसी दया न छोड़िये जब तक घट में प्राण।

संकलनकर्त्ता
सत्यनारायण तोतला

श्री माहेश्वरी डायग्नोस्टिक सेन्टर

(श्री माहेश्वरी समाज, जयपुर द्वारा संचालित)

87, सरतीनगर, जनपथ, श्यामनगर, जयपुर • फोन : 0141-4924112, 701074559

समय : प्रातः 8 बजे से सायं 4 बजे तक (सोमवार से शनिवार) • प्रातः 8 बजे से दोपहर 2 बजे तक (रविवार)

Blood Sugar 30/-	Cholesterol 30/-	Creatinine 40/-	SGOT 40/-	SGPT 40/-
Urine R/E 40/-	Uric Acid 50/-	Calcium 50/-	Sodium 50/-	CBC 100/-
Electrolytes 120/-	PSA 220/-	Hb A1C 200/-	Liver Function 200/-	Thyroid Profile 200/-
Lipid Profile 250/-	RFT 400/-	Vitamin B-12 400/-	ECG 60/-	Vitamin D-3 750/-

जाँचें बहुत किफायती दरों पर की जाती हैं एवं रिपोर्ट व्हाट्सएप नं. 9645044777 से भेजी जाती हैं।

नोट : घर से सैम्पल कलेक्शन की सुविधा उचित दरों पर उपलब्ध

Dr. VISHWAS PRABODH
MD Radio Diagnosis
4:30 pm to 7:00 pm

ULTRA SONOGRAPHY
- Whole abdomen
- Obstetrics & gynaecology including Anomaly scan, color Doppler, fetal echocardiography etc.
- Limb Doppler
- Small parts (thyroid, testes, breast etc.)

Dr. VIJAYETA SULTANIA
Consultant Radiologist
10:00 am to 1:00 pm

कलर सोनोग्राफी की सुविधा उपलब्ध

श्री माहेश्वरी डायग्नोस्टिक सेन्टर

(श्री माहेश्वरी समाज, जयपुर द्वारा संचालित)

पी-10ए, सेक्टर 2, उत्सव भवन के पास, विद्याधर नगर, जयपुर-302039 • फोन : 0141-2230511, 6376409567

आधुनिक मशीनों एवं उपकरणों द्वारा जाँचें

समय : प्रातः 8 बजे से सायं 8 बजे तक (सोमवार से शनिवार)
प्रातः 8 बजे से दोपहर 2 बजे तक (रविवार)

सोनोग्राफी
प्रातः 10 से दोपहर 1 बजे तक
सायं 4:30 बजे से 7:00 बजे

2D-ECHO प्रातः 8 से 9 बजे तक (रविवार को यह दोनों जाँचें नहीं होती)

SONOGRAPHY 300/- • DIGITAL X-RAY 150/- • 2D-EHCO 1000/- • ECG 60/-

दोस्ती

■ विनिता काबरा

दोस्ती देती है जिंदगी को नये आयाम
जिससे गुलजार होती है हर सुबह-शाम
ना रूठना, ना मनाना और ना ही जताना

ये है ऐसा बंधन जिसे सिर्फ दिल से निभाना
दुःख में बन जाती है साया, धूप में बन जाती है छाया

दोस्ती है ये विश्वास कांधे पर है मेरे दोस्त का हाथ
दुःख के आंसू पोंछने में हमेशा आगे है उसका हाथ

मुश्किल वक्त में गले लगाये, सुख में हमेशा पीछे मुस्काये
भीगी पलकों से ये कहता जाये
मेरे दोस्त को मेरी नजर ना लग जाये

दोस्ती है खुदा का अनमोल नजराना
ये है जीवन का उत्कृष्ट गहना
दिल की बात जुबां पर ना आ पाये
दोस्ती इशारों में ही सब समझाये।

कोरोनाकाल

क्या काल कोरोना का आया
सबको घर में ही सिमटाया
कितने दिन देखो बीत गये
हम-तुम मिलने को तरस गये

तरसी देहरी तरसी अंखियां
तुम बिन सूनी मेरी बगिया
पोखर में सुंदर कमल खिले
कब देख उन्हें ललचाओगे
प्यारे मित्रों कब आओगे!

घर आंगन सारा साफ किया
झाड़ू पोंछा खुद आप किया
सजा लिया कोना-कोना
पर मन मेरा फिर भी सूना
आंगन का झूला रीता है
कब आकर संग झुलाओगे
प्यारे मित्रों कब आओगे

महक रही मेरी रसोई तरह-तरह के खानों से
बर्फी, पूरी और कचोरी भिन्न-भिन्न पकवानों से

कोशिश नित नया बनाने की
और खुश होकर भरमाने की
पर मन तो तृप्त तभी होगा
जब चख कर तुम सराहोगे
प्यारे मित्रों कब आओगे!

होगा फिर से मिलना जुलना
वो चहल-पहल और मौज-मजा
हटेगी सारी बंदिशें लौटेगी मिलन की फिर घड़ियां
आशा का दीप जलाए हूँ
कब आकर घंटी बजाओगे
प्यारे मित्रों कब आओगे!
प्यारे मित्रों कब आओगे!!

■ डॉ. भारती बजाज

ऋषि मुनि सज्जन

ऋषि मुनि सज्जन बानी है ये, सुनो अमल में लानी है ये।

कर्म छिपा लो भले जगत से, सही फसानें रच न सकोगे
दुष्ट आजकल चले भगत से, पाप किए तो बच न सकोगे
हर पल जीवन फानी है ये

देखादेखी राह पतन की, उन्नति सीढ़ी चढ़ न सकोगे
फिर तो मुश्किल चाह जतन की, स्वप्न सुरीले गढ़ न सकोगे
दुनिया आनी-मानी है ये

चकाचौंध ढिग मुस्काए तो, सत प्रयोग को भज न सकोगे
आधे मग धिक सुस्ताए तो, बुरी लतों को तज न सकोगे
वीथी जानी-मानी है ये

पन्थ झुण्ड से डर मजबूरी, सद्गुण झोली भर न सकोगे
दीन-दुःखी से कर मगरूरी, जी न सकोगे मर न सकोगे
खाक जहां से छानी है ये

ना मानो जब जिम्मेदारी, ऊँच-नीच से हट न सकोगे
गम गर्दिश अब हिस्सेदारी, जंग अकेले डट न सकोगे
अँखियां पानी-पानी है ये

दोषी को सम्मानित कर के, निरपराध तुम रह न सकोगे
नारी को अपमानित कर के, खुद को नर तुम कह न सकोगे
राजा तुम हो रानी है ये

झूठ मसीहा दानी बन के, जगे हुए को ठग न सकोगे
शोर पपीहा सानी बन के, झाँसे दे कर भग न सकोगे
नेकदिलों ने ठानी है ये

लोभ खजानें भर लो जितने, परम पिता को छल न सकोगे
क्षोभ बहाने कर लो कितने, सदाचार में ढल न सकोगे
आखिर नोबत आनी है ये

■ द्वारका प्रसाद तापड़िया

माहेश्वरी इन्टरनेशनल मैरिज ब्यूरो

(अन्तर्गत श्री माहेश्वरी समाज, जयपुर)

माहेश्वरी इन्टरनेशनल मैरिज ब्यूरो के द्वारा हाइटेक डिजिटल टेक्नोलोजी पर आधारित विवाह योग्य माहेश्वरी युवक-युवतियों के बायोडाटा के संकलन की डिजिटल बुक अक्टूबर, 2020 में तैयार कर नि:शुल्क प्रेषित करने का निश्चय किया है।

अत: सभी समाज बन्धुओं से निवेदन है कि विवाह योग्य युवक-युवतियों के बायोडाटा व फोटो व्हाट्सएप नं. 8619530451 या ई-मेल mimbjpr@gmail.com पर प्रेषित करने का श्रम करें।

विष्णु लद्ढा
मंत्री विवाह प्रकोष्ठ
(9829017635)

घनश्याम भण्डारी
समन्वयक, विवाह प्रकोष्ठ
(9414991967)

विश्व पटल पर

भारतीय शिक्षा प्रणाली

शिक्षा के लिए हर किसी का अलग मत है। कोई शिक्षा को ज्ञान समझता है तो कोई शिक्षा को बुद्धि से जोड़ता है। लेकिन आज हम जिस शिक्षा की बात करते हैं उसका वास्तव में अर्थ आंतरिक शक्तियों को विकास करना है। शिक्षा एक ऐसा साधन है जो मानव को प्राणी जगत के अन्य जीवों से पृथक करती है। किसी ने सच ही कहा है कि शिक्षा जीवन की तैयारी नहीं है शिक्षा तो जीवन ही है। बिना शिक्षा के जीवन मात्र कोरी कल्पना है। मानव जीवन प्रक्रिया विविध प्रकार के वातावरण में से होकर गुजरती है और शिक्षा उस वातावरण के साथ अनुकूलित होने की क्षमता प्रदान करती है।

प्राचीन काल से ही भारतीय शिक्षा प्रणाली का विश्व में बड़ा प्रभाव रहा है। विश्व में लोग जहाँ एक ओर जीवन की सभ्यता सीख रहे थे वही दूसरी ओर भारत में तक्षशिला, नालंदा, विक्रमशिला और वल्लभी जैसे प्राचीन विश्वस्तरीय संस्थानों ने शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षण और शोध के ऊँचे प्रतिमान स्थापित किये थे और विश्व के धरातल पर भारत की एक अलग पहचान बनाई थी, जहाँ विदेशों से लोग ज्ञान प्राप्ति के लिए भारत आते थे। माँ भारती की गोद से जन्मे ना जाने कितने ही महान विद्वान जिनमें चरक, सुश्रुत, आर्यभट्ट, वराहमिहिर, भास्कराचार्य, ब्रह्मगुप्त, चाणक्य, चक्रपाणिदत्ता, माधव, पाणिनि पतंजलि, नागार्जुन, गौतम, पिंगला, शंकरदेव, मैत्रेयी, गार्गी और थिरूवल्लुवर आदि ने विभिन्न क्षेत्रों जैसे गणित, खगोल विज्ञान, धातु विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान और शल्य चिकित्सा, निर्माण कार्य, दिशा ज्ञान, योग, कला इत्यादि क्षेत्रों में विश्व पटल पर भारत का नाम गौरवान्वित किया है।

वर्तमान परिवेश को देखते हुये 21वीं सदी के दौर में शिक्षा के परिदृश्य में पूरा विश्व तेजी से परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है। अब शिक्षा की परिभाषा बदल गयी है। पूर्वकाल में जहाँ शिक्षा का दायरा सीमित था अब इसकी गति और दिशा में नया बदलाव आया है। अब शिक्षा किताबों से बाहर निकल कर डिजीटल हो गयी है।

राष्ट्रीय मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने नई शिक्षा नीति 2020 लागू की है। जिसमें राष्ट्रीय शिक्षा परिषद् का गठन किया गया है, इसके माध्यम से भारतीय शिक्षा प्रणाली में शिक्षा को मजबूत करने के लिए बड़े बदलाव किए हैं।

हमें ऐसी शिक्षा की आवश्कता है जिससे मानव जीवन में चरित्र का निर्माण हो, मन की शांति बढें, बुद्धि का विकास हो और मनुष्य अपने पैर पर खड़ा हो सकें।

Education is the most powerful weapon,
Which you can use to change the World.

■ राकेश शर्मा, एमपीएस इन्टरनेशनल

क्षमा

एक बच्चे ने एक बाग में आम तोड़ने के लिए पत्थर मारा परन्तु आम की टहनी पर पत्थर लगने की जगह एक व्यक्ति जो वहां टहल रहा था उसके सिर पर जा लगा और सिर से खून बह निकला। सुरक्षा प्रहरी ने उसे पकड़ लिया क्योंकि जिस व्यक्ति के पत्थर लगा था वो एक राजा था। राजा ने उस बच्चे को राजदरबार में पेश होने का फरमान जारी किया।

निश्चित दिन दरबार में बच्चे तथा उसके माता- पिता कातर भाव से समय पर उपस्थित हो गये। सभी कौतूहलपूर्वक राजा की ओर देख रहे थे और राजा के निर्णय की प्रतीक्षा करने लगे। भयभीत माता-पिता राजा को हाथ जोड़, मूकदर्शक बन, मन ही मन प्रार्थना कर रहे थे कि उसके बच्चे को चेतावनी देकर छोड़ दिया जावे। बच्चा तो बच्चा ही था वो राजा व दरबारियों की पोशाकों को दत्तचित्त होकर देख रहा था, निर्लिप्त भाव से उसने साथ खड़ी माता का आंचल पकड़ कहा कितनी सुन्दर पोशाक हैं, गलीचा और पर्दे भी अच्छे हैं। माता ने उसे चुप रहने का इशारा किया। उसी समय राजदरबार में उपस्थित एक दरबारी जो राजा के मुँह लगा था, उसने राजा को कहा कि ऐसे अराजकता फैलाने वाले बालक को दण्ड देना चाहिए। राजा की निगाह बालक की ओर उठी तथा उसने अपने मंत्री से कहा कि इसे राजकोष से दो स्वर्ण मुद्राएं दे दो। राजा के इस फैसले से सभी उपस्थित व्यक्तिगण आश्चर्यमिश्रित हंसी से उसकी ओर देखने लगे।

राजा बोला, इसमें आश्चर्य नहीं होना चाहिए। मैंने सोचा कि वृक्ष के पत्थर मारने पर यदि निशाना सही लग जाता तो इसे आम का फल प्राप्त होता लेकिन लक्ष्य से अन्य जगह पर लगने से फल की जगह उसे दण्ड मिलने का विचार सभी सामान्यजन सोच रहे थे। मेरे मन में विचार आया कि बालक ने वृक्ष पर पत्थर मारा और सही जगह लगने पर आम मिलता तो मुझे इसे दण्ड क्यों देना चाहिए। वृक्ष के लगने पर उसे आम मिलता। जब वृक्ष उसे अच्छी सौगात दे सकता हैं तो मैं भी बालक को उसके लक्ष्य को साधने के लिए कुछ अच्छी सौगात दूं। यही सोचकर मैंने उसे मेहनत कर लक्ष्य प्राप्ति हेतु दो स्वर्ण मुद्राएं दी हैं।

सभी लोग राजा के विचार सुनकर उसके इस निर्णय की प्रशंसा करने लगे।

ई. रमेश माहेश्वरी

मजबूर-मजदूर

दिल दर्द से भर उठा है मेरा
देखकर मज़दूर की व्यथा
शब्दकोष भी सिसक पड़ा
जब लिखने बैठी उसकी दर्दभरी गाथा
क्या कहूँ क्या सुनाऊँ
कहना-सुनना सब व्यर्थ है
जीवन जिसका भँवर में अटका
वो बेचारा तो बेबस है
हम कहते हैं लॉकडाउन ने हमें जीने का नया नज़रिया दिया है

पर आँखों से अश्रु झलक आते हैं जब बात करें उनकी जिनका जीवन घर द्वार सब छीन लिया है
हम बैठे अपनों के बीच घरोंदों में मुस्कुराते हैं
वो मज़लूम अपना घोंसला पाने के लिए दिन-रात भटकते जाते हैं

हर खबर हर दिन यही फ़रमान सुनाता है
ज़िंदगी के लिए लड़ते हुए मज़दूर की मौत की दास्तान सुनाता है
हम चाय पर चर्चा करते हैं, कब जीवन पटरी पर आएगा
वो बेचारा तो यही सोचता है, आज तो पेट भर लिया, कल कहाँ से भूख मिटाएगा
उस मजबूर की हर नज़र में बस एक ही सवाल है
जीवन क्या हमारा इतना सस्ता है
बताओ क्यूँ हमारा ही ऐसा हाल है?

सारिका फलोड़

'लायन्स के हुनरबाज' कार्यक्रम में अर्चना काबरा प्रथम विजेता

लायन्स क्लब, जयपुर डिस्ट्रिक्ट 3233E-1 द्वारा कोरोना काल में आयोजित **'लायन्स के हुनरबाज'** ऑनलाइन कार्यक्रम में 35+ कैटगरी की सोलो डांस प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त करने पर **श्रीमती अर्चना काबरा** धर्मपत्नी श्री शरद काबरा को हार्दिक बधाई।

माहेश्वरी समाज कार्यालय स्थित ई-मित्र पर उपलब्ध सेवाएँ एवं सरकार की मुख्य योजनाओं का लाभ उठाएं

ई–मित्र पर उपलब्ध प्रमुख सेवाएं

1. नवीन जन–आधार परिवार नामांकन
2. जन–आधार कार्ड में नये सदस्य का नाम जुड़वाना तथा किसी सदस्य का नाम हटवाना
3. जन–आधार कार्ड में सूचना जुड़वाने एवं अद्यतन करवाने हेतु
4. मुख्यमंत्री वृद्धजन सम्मान पेंशन योजना, मुख्यमंत्री एकलनारी सम्मान पेंशन योजना एवं मुख्यमंत्री विशेष योग्यजन सम्मान पेंशन योजना के लिए आवेदन
5. सामाजिक सुरक्षा पेंशनधारियों का वार्षिक सत्यापन
6. नये राशन कार्ड के लिए आवेदन
7. राशन कार्ड में सदस्य का नाम जुड़वाना / सदस्य का नाम हटवाना एवं अन्य सुधार करवाने हेतु आवेदन
8. डुप्लीकेट राशन कार्ड के लिए आवेदन
9. राशन कार्ड निरस्त करने हेतु आवेदन (NOC)
10. राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा में नाम जुड़वाना (NFSA)
11. गैर–एन एफ एस ए में नाम जुड़वाना (Non- NFSA)
12. पालनहार योजना
13. आर्थिक दृष्टि से कमजोर विधवा महिलाओं कि किन्हीं दो कन्याओं के विवाह पर सहायता राशि के लिए आवेदन
14. गार्गी पुरस्कार के लिए आवेदन
15. बालिका प्रोत्साहन पुरस्कार के लिए आवेदन
16. मूल निवास प्रमाण–पत्र के लिए आवेदन
17. आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों (EWS) के प्रमाण–पत्र हेतु आवेदन
18. बेरोजगारी भत्ते के लिए आवेदन
19. रोजगार पंजीकरण के लिए आवेदन
20. रोजगार पंजीकरण के नवीनीकरण के लिए आवेदन
21. कर्मचारी पंजीकरण रोजगार के लिए आवेदन (Employer Registration Employment)
22. नौकरी चाहने वाले पंजीकरण रोजगार के लिए आवेदन (Job Seekar Registration Employment)
23. जन्म / मृत्यु प्रमाण–पत्र के लिए आवेदन
24. विवाह प्रमाण–पत्र के लिए आवेदन
25. रेल्वे टिकट की बुकिंग सेवाएं
26. किरायेदार सत्यापन के लिए आवेदन
27. घरेलू नौकर का सत्यापन के लिए आवेदन
28. चरित्र प्रमाण–पत्र सत्यापन के लिए आवेदन
29. पुलिस रिपोर्ट (राजस्थान में दस्तावेज खोने पर जैसे :– ड्राइविंग लाइसेंस, वाहन पंजीयन प्रमाण–पत्र तथा पासपोर्ट इत्यादि।
30. पुलिस अनुमति प्रमाण–पत्र
31. पानी / बिजली के बिल जमा करना
32. नये विद्युत / जल कनेक्शन के लिए आवेदन
33. भारत एवं राज्य सरकार के विभिन्न सरकारी विभागों की भर्ती परीक्षाओं एवं प्रवेश परीक्षाओं के लिए फॉर्म भरना एवं फीस जमा करना।
34. पेन कार्ड के लिए आवेदन
35. सूचना का अधिकार
36. मतदाता पहचान–पत्र (Voter ID) (नया, पता परिवर्तन व संशोधन)
37. परिवहन (RTO) संबधित कार्य के लिए आवेदन
38. पासपोर्ट संबंधित कार्य के लिए आवेदन (नया एवं नवीनीकरण)
39. हस्तशिल्प कारीगर (Artisan) पहचान–पत्र (जॉब कार्ड)के लिए आवेदन
40. राजस्थान सम्पर्क पोर्टल पर शिकायत (राजस्थान सम्पर्क हेल्पलाईन टोल फ्री नम्बर 181)
41. मेघावी छात्राओं के लैपटॉप के लिए आवेदन
42. मेघावी छात्राओं के स्कूटी के लिए आवेदन
43. उत्तर मैट्रिक छात्रवृत्ति के लिए आवेदन
44. मुख्यमंत्री उच्च शिक्षा छात्रवृत्ति के लिए आवेदन
45. मुख्यमंत्री सर्वजन उच्च शिक्षा छात्रवृत्ति के लिए आवेदन
46. एकल / द्विपुत्री योग्यता पुरस्कार के लिए आवेदन
47. विधवा / परित्यक्ता मुख्यमंत्री (बी.एड.) संबल योजना के लिए आवेदन
48. एकल बालिका संतान हेतु सीबीएसई (CBSE) योग्यता छात्रवृत्ति के लिए आवेदन
49. शुभ शक्ति योजना के लिए आवेदन
50. दिव्यांगता (विकलांगता) प्रमाण–पत्र की प्रति
51. प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना

भारत एवं राजस्थान सरकार की मुख्य योजनाएं

1. इंदिरा महिला शक्ति निधि योजना
2. प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना
3. राष्ट्रीय वयोश्री योजना
4. प्रधानमंत्री श्रम योगी मानधन योजना
5. प्रधानमंत्री जन औषधि योजना
6. आत्मनिर्भर भारत योजना
7. नेशनल करियर सर्विस
8. प्रधानमंत्री वय वंदन योजना
9. आयुष्मान भारत महात्मा गाँधी राजस्थान स्वास्थ्य बीमा योजना
10. प्रधानमंत्री गरीब कल्याण योजना
11. प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना
12. प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना
13. प्रधानमंत्री गरीब कल्याण रोजगार अभियान
14. प्रधानमंत्री जन–धन योजना
15. प्रधानमंत्री मातृ वन्दना योजना
16. प्रधानमंत्री मुद्रा योजना
17. योनो (YONO) एन्ड्रायड फोन पर बैंक खाता खोलना
18. प्रधानमंत्री अटल पेंशन योजना
19. सुकन्या समृधि योजना
20. एक देश एक राशन कार्ड योजना (One Nation One Ration Card Scheme)
21. वेबसाइट 'मेरा पीएम–जय' बताएगी किसे मिलेगा 5 लाख का स्वास्थ्य बीमा
22. प्रधानमंत्री स्ट्रीट वेंडर्स आत्मनिर्भर निधि योजना
23. इंदिरा प्रियदर्शिनी पुरस्कार योजना
24. राजलक्ष्मी योजना
25. शुभ लक्ष्मी योजना
26. मुख्यमंत्री सहायता कोष से सहायता
27. मुख्यमंत्री राजश्री योजना
28. पन्नाधाय जीवन अमृत योजना (आम आदमी बीमा योजना)
29. अनुप्रति योजना
30. महिला स्वयंसिद्धा योजना
31. प्रोत्साहन योजना
32. दीनदयाल अन्त्योदय योजना–राष्ट्रीय शहरी आजीविका मिशन
28. 'निरोगी राजस्थान' अभियान
33. मुख्यमंत्री निःशुल्क दवा / जाँच योजना
34. जन–आधार योजना (टोल फ्री नं. 1800–180–6127)
35. कौशल एवं आजीविका विकास योजना
36. 6000 रुपये की गर्भावस्था सहायता योजना
37. निरोगी राजस्थान अभियान
38. जन सूचना पोर्टल

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करे

लालचन्द कचोलिया– मों.नं: 9413005499

स्मृतिशेष स्वजनों को श्रद्धांजलि एवं श्रद्धासुमन

विगत दिनों हमारे समाज के कुछ बंधु/बहनें हमसे बिछुड़ गए। समाज अध्यक्ष, महामंत्री एवं कार्यकारिणी सदस्यों की ओर से उनके शोक संतप्त परिवारों को हार्दिक संवेदनाएं प्रेषित हैं। ईश्वर से प्रार्थना है कि दिव्यात्माओं को अपने श्रीचरणों में स्थान दें।

श्रीमति सरला देवी जाजू
16.07.2020

श्री अविनाश परवाल
21.07.2020

श्री प्रभुदयाल अजमेरा
20.07.2020

श्री शांति देवी साबू
21.07.2020

श्री राजेन्द्र कुमार कचोलिया
25.07.2020

श्री भंवर लाल कचोलिया
29.07.2020

श्री कन्हैयालाल तापड़िया
29.07.2020

श्री सीताराम तोषनीवाल
08.08.2020

श्री केदारनाथ चितलांग्या
09.08.2020

श्री गिरिराज दास मालपानी
13.08.2020

समाज बन्धुओं से आग्रह

कृपया तीये की बैठक की अवधि 30 मिनट ही रखें।

समाज आभारी है उन शोकसंतप्त परिवारों का जिन्होंने तीये की बैठक की सीमा 30 मिनट रखी।

विद्युत चालित एवं पारदर्शी ''जागृति अन्तिम दर्शनिका''

अन्तिम संस्कार में देरी की संभावना हो तो, मृत शरीर को ज्यों का त्यों बिना बर्फ आदि के कई दिनों तक 'जागृति अन्तिम दर्शनिका' में अन्तिम दर्शन हेतु यथा स्थिति में आपके घर पर ही रखा जा सकता है। मृत शरीर के डीकम्पोज होने व इससे होने वाले संक्रमण से परिवार व मित्र बच पाते हैं। यह सुविधा 24 घण्टे पूर्ण रूप से निःशुल्क उपलब्ध है।

सम्पर्क सूत्र :- जयकृष्ण जाजू-98290 53031, सुदर्शन फोमरा-93140 36672, आनन्द दम्मानी-93145 00979

गणगौर सेवा केन्द्र

''गणगौर हाऊस'' प्लॉट नं. 166, सेक्टर-2, गणेश पार्क के पास, ''उत्सव'' जनोपयोगी भवन के पीछे, विद्याधर नगर, जयपुर। फोन : 2235363

मेडिकल इक्विपमेंट्स व फर्नीचर की सेवाएं निःशुल्क उपलब्ध

★ मेडिकल पलंग ★ व्हील चेयर ★ वाकर ★ स्टिक ★ टॉयलेट पॉट ★ टॉयलेट चेयर ★ बैसाखी ★ बैक रेस्ट ★ यूरिन पॉट

सम्पर्क करें :- **गणगौर बेसन शॉप**, खण्डेला हाऊस, चाँदपोल बाहर, बस स्टैण्ड के पास, झोटवाड़ा रोड, जयपुर, फोन : 0141-2283111

कमल डाइग्नोस्टिक एवं रिसर्च सेन्टर

KAMAL DIAGNOSTIC & RESEARCH CENTRE KDRC JAIPUR

O-5, हॉस्पिटल मार्ग, एस.एम.एस. हॉस्पिटल के सामने, सी-स्कीम, जयपुर-302001

फोन : 0141-6452922, 2374777, 4039727

सुविधाएँ

★ **M.R.I.** 1-5 Tesla ★ **सी.टी. स्केन**

★ सोनोग्राफी (3D/4D) ★ कलर डॉपलर ★ डिजिटल एक्सरे

★ ईको ★ ई.सी.जी. ★ ई.ई.जी. ★ सी.टी.एम.टी. ★ एन.सी.वी. ★ बायोप्सी ★ एफ.एन.ए.सी. ★ ऑडियोमेट्री

एम्बुलेंस सुविधा उपलब्ध

सभी प्रकार के बायोकेमिकल, हेमटोलोजिकल लेबोरेटरी टेस्ट की सुविधा

डॉ. कमल अग्रवाल 98291-59029

निर्मल मूंदड़ा 98290-50202

डॉ. गौतम शर्मा 94140-74005

माहेश्वरी बंधुओं के लिये विशेष रियायत

श्री माहेश्वरी समाज, जयपुर

जनोपयोगी भवन

''अभिनन्दन''

कृष्णा सागर कॉलोनी, पत्रकार कॉलोनी रोड

वी.टी. रोड के सामने, मानसरोवर, जयपुर-302020

सम्पर्क : फोन : 0141-2980658-60, मो.: 7414038883

अत्याधुनिक सुविधा सम्पन्न

- 70 कमरे (8 डॉरमेट्री सहित)
- भव्य बैंक्वेट हॉल (105'x 78'-डबल हाइट)
- मुख्य डायनिंग हॉल (ग्राउंड फ्लोर पर)
- 2 मिनी बैंक्वेट हॉल, 2 डायनिंग हॉल
- 4 किचन (2 बड़े व 2 छोटे)
- 2 पैसेंजर लिफ्ट, 1 लगेज लिफ्ट

★सम्पूर्ण 'अभिनन्दन' भवन का किराया 1,68,000/- रु. प्रतिदिन + जीएसटी

ग्राउण्ड फ्लोर : डायनिंग हॉल, लॉन व किचन

द्वितीय तल : 22 कमरे (4 डॉरमेट्री सहित)

चतुर्थ तल : 13 कमरे, 1 मिनी हॉल, 1 डायनिंग हॉल, किचन

प्रथम तल : मुख्य बैंक्वेट हॉल (डबल हाइट)

तृतीय तल : 13 कमरे, 1 मिनी हॉल, 1 डायनिंग हॉल, किचन

पंचम तल : 22 कमरे (4 डॉरमेट्री सहित)

भवन में सभी मांगलिक कार्यक्रमों के लिए दिनांक 20.11.2020 तक किराया राशि में विशेष छूट:-

1. माहेश्वरी एवं अन्य समाज बन्धुओं के मांगलिक व धार्मिक कार्यक्रमों के लिए भवन किराया राशि में 50 प्रतिशत की छूट।
2. Unit-I (Ground Floor) एवं Unit-II (Banquet Hall) की बुकिंग एक साथ करवाने पर किराया मात्र 30,000/- रुपये।
3. Unit-IV व Unit-V का किराया मात्र 13,000/- प्रति यूनिट व Mini Hall में भोजन व्यवस्था करने पर 5000/- रुपये के स्थान पर 3000/- रुपये अतिरिक्त देय होगा।
4. माहेश्वरी परिवारों को बर्तन भण्डार, कुर्सी, कारपेट एवं डीप फ्रीज के किराये में 50 प्रतिशत की छूट।

प्रदीप बाहेती	बजरंग लाल बाहेती	बिहारी लाल साबू	गोपाल लाल मालपानी
अध्यक्ष	चेयरमैन	सचिव	महामंत्री
98290 55050	98290 79200	98290 11181	99823 33103

Padhegi Pari
in Maheshwari.

ADMISSION 2020-21 OPEN

A COLLEGE AS SAFE AS HOME.

Hostel facility with Govt. approved food, hygiene & safety standards.

Safe and secure campus.

No touch sanitisation.

Latest e-learning facilities.

Courses Offered	B.Sc.	B.A.	B.Com
B.B.A.	M.Com (ABST, BADM, EAFM)		
MHRM	MA (Geo., Socio, Eco, Eng. Lit)		

SOCIAL DISTANCING IN CLASSROOMS AND HOSTEL
AS PER GOVERNMENT NORMS
DISTANCE WILL BE MAINTAINED.

MAHESHWARI GIRLS P.G. COLLEGE

A Prestigious English Medium P.G. College for Girls with Hostel Facility
Affiliated to the University of Rajasthan
Governed by The Education Committee of The Maheshwari Samaj (Society), Jaipur.
Sector-5 (Extn), Pratap Nagar, Near Bambala Puliya, Tonk Road, Jaipur
www.maheshwaricollege.ac.in • maheshwaricollegejpr@gmail.com

Apply online @ www.maheshwaricollege.ac.in **Mob.: 9649418880, 9649318880**

स्वत्त्वाधिकारी श्री माहेश्वरी समाज, जयपुर के लिए प्रकाशक- मुद्रक गोपाल लाल मालपानी, महामंत्री द्वारा रेनबो प्रिन्टर्स, जयपुर से मुद्रित एवं श्री माहेश्वरी भवन, सिंधी जी का रास्ता, चौड़ा रास्ता, जयपुर-302003 से प्रकाशित। सम्पादक- रामदास कोठ्यारी